ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थाक—१५८
सम्पादक एव नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series. Title No 158

GANGOJAMAN
(Urdu Poems)
'NAZIR' BANARASI

Bharatiya Jnanpith
Publication
Second Edition 1966
Price Rs 3.00

©

भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन
प्रधान कार्यालय
९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता—२७
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र
३६२०।२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
द्वितीय संस्करण १९६६
मूल्य ३.००
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी—५

समर्पित

डॉ० सम्पूर्णानन्द जी को

प्राक्कथन

मै प्राय: पद्यकी पुस्तकोपर प्राक्कथन या भूमिका लिखनेसे तथा उनके सम्बन्धमे अपनी सम्मति देनेसे घबराता हूँ क्योकि मै अपनेको इसका अधिकारी नही समझता परन्तु 'नजीर' साहबके आग्रहको टाल न सका। इसके साथ ही, उनके एक दूसरे आग्रहने मुझे असमजसमे डाल दिया है। उन्होने अपनी रचनाओके इस संग्रहको मुझे समर्पित किया है। ऐसी दशामे मेरा कुछ लिखना कहाँतक निष्पक्ष होगा, मै नही कह सकता।

'नजीर' बनारसीकी रचनाएँ मुझे बहुत पसन्द है। कुछको उनके मुँहसे सुना है। मेरा विश्वास है कि दूसरोको भी यह उतना ही प्रभावित करेंगी जितना कि मै हुआ हूँ। भाषा उस शैलीकी है जिसे उर्दू कहते है परन्तु, शैली कोई भी हो, भाषा हमारी ही है और मेरी रायमे 'नजीर' साहबकी ये रचनाएँ वर्तमान हिन्दी वाङ्मयकी श्रीवृद्धि करती है। अब इनके रसका आस्वादन करना उन लोगोके लिए भी सुलभ हो गया जो उर्दू लिपि नही जानते। भाषामे कृत्रिम क्लिष्टता नही है, यो तो साहित्यकी भाषा दैनन्दिनकी बोलचालकी बोलीसे कुछ भिन्न होती ही है। आखिर कवियोकी भाषामे आनेवाले संस्कृत और कभी-कभी व्रजभाषाके शब्दोको भी तो सब लोग नही समझते परन्तु भाव ग्रहण करनेमे कोई कठिनाई नही होती। हम अँगरेजी-जैसी सर्वथा विदेशी भाषाका भी तो आनन्द लेते ही है।

कई रचनाएँ राजनीतिक विषयोंपर है, देश-प्रेम, ओज और स्फूर्तिसे भरी हुई। परन्तु 'नजीर'को प्रतिभा सकुचित परिधिके भीतर नही खेलती। शृंगार-रसोत्पादक रचनाएँ भी वैसी ही हृदयाकर्षक है और 'ताड़

मद्दे जिल्लहू' मे हास्यका अच्छा निदर्शन है। जो लोग ऐसा मानते है कि 'करुण एव रस.' उनको गान्धीजीपर लिखे गये पद्य तुष्टि देगे। 'बेवा' भी यास, दर्द, व्यथाकी जीती-जागती तसवीर है। 'नजीर'ने कई ऐसे विषयोका समावेश किया है जिनकी ओर बहुधा उर्दू कवि अबतक दृष्टिपात नही करते रहे है। कविकी लेखनीसे उस सस्कृति और उस पर्य्यावरणकी झलक मिलनी चाहिए जिसमे उसकी वाणी प्रस्फुटित हुई है। गुल और बुलबुल, सिकन्दर और जमशेदकी भी अपनी जगह है परन्तु जिस धरतीपर उर्दू लिखी और बोली जाती है वहाँ तो हमको कमल, कोकिल, भ्रमर ही देख पडते है। राम, कृष्ण, अर्जुन, सीताकी ही स्मृतियाँ चित्तको दोलायित करती है। 'नजीर'-जैसे उदीयमान कवियोने इस रहस्यको समझा है। उन्होने अपने सामने उन नदियो और पहाडो, उन झरनो और वनस्थलियो, उन फूलो और पक्षियोको रखा है जो प्रकृतिकी भारतको अपूर्व देन है और उन्होने उन त्योहारो, उत्सवो और ग्राम-गीतोकी ओर ध्यान दिया है जिनके माध्यमसे जनताके हृदयोकी धमक अपनेको व्यक्त करती है। इसलिए इनकी कवितामे भारतीय आत्मा बोलती है। इस संग्रहमे 'गाँवकी गोरी' 'गंगातटपर साँझ सवेरा', और 'मिलो गलेसे गले बार-बार होलीमे' इसके उत्तम उदाहरण है। ये कविताएँ साधारण कविताएँ नही है। ये राष्ट्रमे भावात्मक समीकरणके सुदृढ उपकरण है। हिन्दू-मुसलमानके बीचकी खाई पाटनेवाले पुलके स्तम्भ है। इनका राष्ट्रीय महत्त्व है।

मै 'नजीर' साहबके इस संग्रहको आदरकी दृष्टिसे देखता हूँ और ऐसी आशा करता हूँ कि उनकी और भी रचनाएँ नागरी लिपिके द्वारा घर-घर पहुँच सकेंगी।

जालिपा देवी, वाराणसी
१० जुलाई १९६१

—सम्पूर्णानन्द

दीबाचा

अबसे दस-बारह बरस पहलेकी बात है, कोई मुशाइरा था। एक ऐसे शाइरने अपनी बारी आनेपर कलाम सुनाना शुरू किया कि शाइरकी शख्सीयत,[1] खुश-आहंगी[2] और कलामके मअ़नवी महासिन[3] ने बयकवक्त[4] मुझे मुतवज्जेह[5] कर लिया। यह बात भी मुझे फौरन मालूम हो गयी कि शाइरको 'नजीर बनारसी' कहते है। जहाँतक याद आता है, 'नजीर' अपनी वह गजल सुना रहे थे "तुम्हे याद हो कि न याद हो," औरोका हाल मालूम नही, लेकिन मै इस गजलके एक-एक मिसरअ़पर झूम-झूम गया। 'नजीर' बनारसी मेरी तरह बहुत जूद-आश्ना[6] तबीअ़तके आदमी है। नतीजा यह हुआ कि इसी मुशाइरामे हम एक-दूसरेसे घुल-मिल गये। यह बाहमी[7] खुलूस[8]-व-तपाक[9] उस दिनसे अबतक महज[10] कायम नही बल्कि रू-ब-तरक्की[11] है।

इसके बाद मुतअ़द्दिद[12] मौकोपर 'नजीर' बनारसीसे मुलाकाते भी हुई, उनको देखने, समझने, परखने और कलामको सुननेका इत्तेफाक होता रहा। इज्माली[13] और तफसीली दोनो

---

१ व्यक्तित्व, २ स्वर-माधुर्य, ३ काव्यके अर्थसम्बन्धी गुण, ४ एक ही समयमें, ५ आकर्षित, ६ शीघ्र परिचित होनेवाला, ७ पारस्परिक, ८ शुद्ध प्रेम, ९. उत्साह, १० केवल, ११ विकासोन्मुख, १२ अनेक, १३. सक्षिप्त।

तरीकोसे उनकी शाइरी और शख़्सीयतका मै असर लेता रहा। जो उमंग और तरंग और जिन्दगीका हौसला उनके कलाममे मैने पाया उसे मै कद्रे-अव्वल[1] की चीज समझता हूँ, और अपने लिए उसे नेमत तसव्वुर[2] करता हूँ। बनारसकी तहजीब 'नजीर'के किर्दारमे[3] और उनकी शाइरीके पैकरमे[4] रच उठी है। उनका कलाम हमे यह कहनेपर मजबूर करता है कि शाइर उस धरतीका सपूत है जिसकी कोखसे उसने जन्म लिया है। इतना ही नही कि 'नजीर'के कलाममे एक उभार और एक उठान है, बल्कि इस उभार और उठानमे एक तवाजुन[5] और संजीदगी[6] है, एक ऐसी तर्बियतयाफ़्तगी[7] जिसका दूरसे भी कोई तअल्लुक़ ओछेपनसे नही है। 'नजीर'की शाइरीमे एक जवाने-सालेहका[8] किर्दार झलकता है, उनकी आवाजमे एक चुटीलेपनके साथ-साथ ऐसी गम्भीरता है जो दावते-फ़िक्रो-नजर[9] देती है। नया हिन्दुस्तान उनकी अकसर नज्मो और गजलोमे अँगडाइयाँ लेता हुआ नजर आता है। उनके अल्फ़ाजके ज़ेरोबममे[10] हम नजीर ही के दिलकी धड़कने नही सुनते बल्कि नयी हिन्दुस्तानी तहजीब और जिन्दगीके दिलकी धडकने भी सुनते है। उनके कलाममे एक खुलूस[11] है, एक रख-रखाव है और एक ऐसी कशिश[12] है जो हमारे अन्दर एक सेहतमन्दाना[13] और हयात आवर[14] तडप पैदा कर देती है। मअ़नवी

---

१ प्राथमिक महत्त्व, २ कल्पना, ३ चरित्र, ४ काया, ५ सन्तुलन, ६ गम्भीरता, ७ प्रशिक्षण-सम्पन्नता, ८ सदाचारी युवक, ९ चिन्तनका आवाहन, १० सगीतका उतार-चढाव, ११ शुद्ध हृदयता, १२ आकर्षण, १३ स्वस्थ, १४ जीवन-शक्तिवर्द्धक।

लिहाजसे[१] उनके कलाममे एक वज्न होता है और फ़न्नी लिहाजसे[२] उनके कलाममे एक नोक पलक होती है जिसे नजर अन्दाज[३] नही किया जा सकता। 'नजीर' बनारसी फितरतन् शाइर है लेकिन शाइरोके फन्ने-शरीफ़की[४] तमाम पाबन्दियो और निकातसे[५] वाकिफ़ है, इसलिए बेराहरवीके[६] वह कभी शिकार नही होते।

शाइरी इन्तेहाई मह्वियत[७], गुमशुदगी[८] और तन्हाई और होशमन्दीकी[९] वहदतका[१०] नाम है। होश व मस्तीकी यह वहदत नजीरके कलाममे रह-रहकर अपनी नजर-फरेब[११] झलक दिखाती हुई नजर आती है। 'नजीर' बनारसीको जिन्दगी और हिन्दुस्तानकी मुत्तहदा तहजीबसे[१२] अथाह और अपरम्पार प्रेम है। वह फिर्कापरस्ती[१३] के कभी शिकार नहीं हुए, वह पक्के नेशनलिस्ट है; उनके एक-एक मिसरअ्मे[१४] गंगा और जमुनाकी लहरोका रक्स व नग्मा[१५] दिखाई और सुनाई देता है। ऐसा पुरखुलूस तरन्नुम[१६] हमारी शाइरीके लिए एक नेमत[१७]-व-रहमत[१८] और बरकत[१९] है। 'नजीर' बनारसीने इक्तेसाबे-फन[२०] बहुत समझदारी और काविशके[२१] साथ किया है, जिसका सबूत उनके कलामकी पुख्ताकारी,[२२]

---

[१] अर्थकी दृष्टिसे, [२] कलाकी दृष्टिसे, [३] उपेक्षित, [४] महत्त्वपूर्ण कला, [५] मर्मों, [६] कुपथ गमन, [७] नितान्त तल्लीनता, [८] आत्मविस्मृति, [९] चेतनता, [१०] एकता, [११] दृष्टिमोहक, [१२] सयुक्त सभ्यता, [१३] साम्प्रदायिकता, [१४] कविताका एक पद, [१५] नृत्य एव संगीत, [१६] सौहार्दपूर्ण गुंजन, [१७] निधि, [१८] दैवी अनुकम्पा, [१९] प्रसाद, [२०] कलाउपार्जन, [२१] परिश्रम, [२२] परिपक्वता।

सादगी[1] और पुरकारी और बयानकी चाबुकदस्तीसे मिलता है। कुछ अश्आर पेश करता हूँ।

मेरे शानेपर[4] यही जुल्फ[5] थी
जो है आज मुझसे खिची खिची।
मेरे हाथ मे यही हाथ था
तुम्हे याद हो कि न याद हो।

कही तुमको जाना हुआ अगर
न गये बगैर 'नजीर' के।
वह जमाना अपने 'नजीर' का
तुम्हे याद हो कि न याद हो।

वह मेरा नसीब जगा के भी मेरी हसरते[6] न जगा सके।
वह पलट के आ तो गये मगर गये दिन पलट के न आ सके।।
नजर आयी सैकडो सूरते मगर अपनी वजअ़को[7] क्या करें।
वह नजर जो उनसे मिलायी थी किसी और से न मिला सके।।

न हो कुबूल तो किसमत हमारे सज्दों[8] की।
मगर यह सर नही औरो के सगे-दरके[9] लिए।।

नुमूदे-सुब्ह[10] मेरे वास्ते उनका तबस्सुम[11] है।
जहाँ दम तोड़ती है रात वह मेरी सहर[12] क्यो हो।।

---

१ सरलता, २ प्रभावकारिता, ३ वर्णनकी कुशलता, ४ काँधे, ५ केशपाश, ६ कामनाएँ, ७ रीति, ८ साष्टांग प्रणाम, ९ द्वारशिला, १० प्रातः आविर्भाव, ११ मुसकान, १२ प्रभात।

सजाए आदमी फ़र्जन्दे आदम[१] ऐ मआ़जल्लाह[२] !
वहाँ जन्नत छुटी उनसे यहाँ कूए-बुताँ[३] हमसे[४] ॥

न जनाबे-शैख का है, न जनाबे-बरहमन का।
है वतन तो सिर्फ उसका जो वतन के काम आये ॥

मुसीबत भी दे राहत देनेवाले !
मगर इतनी कि जी घबरा न जाये ॥

और तो कुछ न हुआ पीके बहक जाने से।
बात मैख़ाने[५] की बाहर गयी मैख़ाने से ॥

अपना हाले-तबाह[६] क्या देखूँ ?
इश्क को आँख है निगाह नही ॥

मैं तो मान जाऊँगा, दिल है यह न मानेगा।
एतिमाद[७] की लज्जत बदगुमाँ[८] को क्या मालूम ॥

मैंने सुना कि आपको मुझसे है बदगुमानियाँ[९]।
झूट तो यह नही मगर सच भी न हो ख़ुदा करे ॥

---

१ आदम तथा आदमकी सन्तानका दण्ड, २ ईश्वरकी शरण, ३ सुन्दरियोंकी गली, ४ यह एक कथाकी ओर सकेत है, प्रथम मानव हजरत आदमकी सृष्टिके उपरान्त उनको वैकुण्ठमें स्थान देकर सर्व-प्रकारकी स्वतन्त्रताके साथ केवल एक वस्तुके खानेकी-मनाही कर दी गयी थी। परन्तु आदमने भूलसे उसे खा लिया, परिणाम-स्वरूप उन्हें वैकुण्ठसे पृथ्वीपर उतार दिया गया, ५ मद्यशाला, ६ दुर्दशा, ७ विश्वास, ८ अविश्वासी, ९ दुर्भावना।

हर शै[1] हसीन[2] होती है हुस्ने-निगाह[3] से।
कुछ भी न हो हसीन जो हुस्ने-नजर[4] न हो ॥

तेरा हुस्न सो रहा था, मेरी छेड ने जगाया।
वह निगाह मैंने डाली कि सँवर गयी जवानी ॥

हर-एक हँसीमे एक मय्यित[5] है तवस्सुम[6] की।
हर फूल जनाजा एक मर्हूम[7] कली का है ॥

आज तो आवरुए-इश्क[8] प' हर्फ[9] आ जाता।
हाथ पहुँचा था कई बार गरीबाँ[10] के करीब ॥

हमारे वास्ते हर साँस एक हकीकत[11] है।
यह जिन्दगी किसी वहशतजदे[12] का ख्वाब नही ॥

आँखो की नीद दोनो तरह से हराम[13] है।
उस बे-वफा को याद करें या भुलाये हम ॥

'नजीर' इन्सानियत का दम गनीमत है मेरे दम से।
मुहब्बत मेरा मज्हब है, वफादारी है खू[14] मेरी ॥

इतनी-सी बात के लिए इतना उदास हो ?
अच्छा तो बात भी न करेंगे किसीसे हम ॥

---

१ वस्तु, २ सुन्दर, ३-४ दृष्टि-सौन्दर्य, ५ शव, ६ मुसकान, ७ मृत, ८ प्रेमकी मर्य्यादा, ९ कलंक, १० कुर्तेका गला, ११ वास्तविकता, १२ उन्मादग्रस्त, १३ वर्जित, १४ स्वभाव।

सर प' एक ताँबे का गागर हाथ मे रस्सी लिये ।
सुब्ह की देवी चली रात की मदिरा पिये ।
दामने-मश्रिक[१] प' जर्री[२] लहर दौड़ाती हुई ।
गॉव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।
—गाँव की गोरी

लहराती दबे पॉव चली जाती है गंगा ।
क्या जानिए क्या गाती है कुछ गाती है गंगा ।
जा-जा के मेरे पास पलट आती है गंगा ।
बीते है जो अफ्साने[३] वह दुहराती है गंगा ।
याद आया कभी साथ में आये थे किसी के ।
हमने भी कभी नाज उठाये थे किसी के ।
—चाँदनी रातमे गंगाकी सैर

महेतावाँ[४] है उसी शान से रोशन[५] अब भी ।
रात के हाथ मे है रात का कंगन अब भी ।
तेरे ही दम से मेरी शब[६] है सुहागन अब भी ।
है हर एक रुख से हसी रात की दुलहन अब भी ।
मेरे महबूब[७] न जा, ऐ मेरे महबूब न जा ।
—मेरे महबूब न जा

नही हमको अग़यार[८] की अब जरूरत ।
हमारा चमन हम करेगे हिफाजत ।
फरिश्ता[९] भी आये तो लेकर इजाजत ।

---

१ पूर्व अंचल २ सुनहरी, ३ कथाएँ, ४ प्रकाशमान चन्द्रमा, ५ दीप्त, ६ रात्रि, ७ प्रीतम, ८ विदेशी ९ देवता ।

फलक[1] यह नही सर्जमीने-चमन है ।
यह जन्नत नही है हमारा वतन है ।

—तआरुफ

हिन्द की तेग[2] हूँ लहराऊँगा गगा की तरह ।
अर्सए जंग[3] मे बल खाऊँगा जमुना की तरह ।
कभी उतरूँगा तो चढ जाऊँगा दरिया की तरह ।
मैं मुजाहिद[4] हूँ मुझे कौन डराने वाला ।

—हिन्दुस्तानी मुजाहिद

हँसता पर्वत, हँसमुख झरना ।
पाँव पसारे गंगा जमुना ।
गोदी खोले धरती माता ।
मेरा निवासस्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

—प्यारा हिन्दुस्तान

चमन की आँख मे भी क्या चमन का हुस्न गडता है ।
कली खिलने नही पाती कि भौंरा टूट पड़ता है ।

हमे तो उस लबे-नाजुक[5] को देनी थी जहमत[6] ।
अगर न बात बढाते तो और क्या करते !

माहवशो[7] की भीड़ लगी है ।
वह भी इसी मे हो तो अजब क्या !

---

[1] आकाश, [2] तलवार, [3] रण-क्षेत्र, [4] योद्धा, [5] मृदु अधर, [6] कष्ट, [7] चन्द्रमुखियों ।

खफा होते हो क्यो जिक्रे-वफ़ा पर[1] ?
किसी ने कह दिया है बेवफा क्या ?

कहा जाता है कि उर्दू शाइरीपर कुछ दिनोसे जुमूदी कैफियत तारी है ।[2] ऐसे वक्फोसे[3] दुनियाकी हर जवान और अदब को[4] गुजरना पड़ता है । हमारी क़ौमी[5] जिन्दगीमे यह दौर[6] निस्बतन[7] एक इन्तेशारी[8] और उबूरी दौर[9] है ।' 'नजीर' बनारसीके कलामकी इशाअतसे[10] इस अम्रका[11] पता चलता है कि उर्दू शाइरीका यह जुमूद[12] एक नयी बेदारी[13] का पेश-खेमा[14] है । इसके साथ जिस कौमियतकी[15] तामीर[16] नये हिन्दुस्तानमे हो रही है उसकी हसीन झलक 'नजीर' बनारसीके साजे-कलाम[17] के शुअलो[18] मे हमे नजर आती है । 'नजीर' बनारसीका पूरा कलाम हसीन उम्मीदोका एक पयाम[19] है और एक हसीन मुस्तक्बिल[20] की बशारत[21] है ।'

इलाहाबाद —*'फिराक' गोरखपुरी*
२५ दिसम्बर १९५७

---

१ प्रेम-चर्चा, २ शिथिलतापूर्ण अवस्था व्याप्त है, ३ विराम-काल, ४ साहित्य, ५ राष्ट्रीय, ६ युग, ७ अपेक्षाकृत, ८ कोलाहलपूर्ण, ९ अन्तरिम काल, १० प्रकाशन, ११ बात, १२ शैथिल्य, १३ जागर्ति, १४ भूमिका, १५ राष्ट्रीयता, १६ निर्माण, १७ काव्य-वाद्य, १८ अग्नि-शिखा, १९ सन्देश, २० भविष्य, २१ शुभ-सवाद ।

बयाँ मेरा ज़बाँ मेरी

नाम नजीर अहमद है, और वकौल[१] अमीर मीनाई मर्हूम—

नाम का नाम तखल्लुस[२] का तख़ल्लुस है 'अमीर'।
यह अजब हुसने-ख़ुदादाद[3] मेरे नाम मे है।

आजसे तकरीबन ४७ साल कब्ल[४] काशीकी पवित्र नगरीमे पैदा हुआ, और आज तक ब-फ़ज्ले-ख़ुदा[५] अपने वतने-अज़ीजमे[६] कयामपजीर[७] हूँ। वालिद मर्हूम[८] हकीम नूर-मुहम्मद बनारसके मशहूर तबीबो[९]मे-से थे, लिहाजा[१०] तबाबत[११] ही को मेरा आबाई पेशा[१२] कहिए। शेअ़र गोई[3] अवएले-उम्र[१४] ही से दाखिले-जिन्दगी[१५] है। पहली नज्म उस वक्त कही थी जब शायद बारह-तेरह सालका था। शरफे तलम्मुज[१६] हज़रते 'बेताब' बनारसी मर्हूम यादगारे 'मुस्हफी'-[१७]से रहा है। और मेरे मजाके-सुखन[१८] और शुऊर[१९] की बेदारी-[२०]मे बहुत बडा दख्ल[२१] बिरादरे मुकर्रम[२२] हकीम मुहम्मद यासीन

---

१ कथनानुसार, २ कविका उपनाम, ३ ईश्वर प्रदत्त आनन्द, ४ पूर्व, ५ ईश्वरकी कृपासे, ६ प्रिय स्वदेश, ७ निवासकर्ता, ८ स्वर्गीय पिता, ९ हकीमों, १० अतः, ११ हकीमी, १२ पैतृक-वृत्ति, १३ काव्य-रचना, १४ आरम्भिक जीवन, १५ जीवन-अग, १६ शिष्यता-श्रेय, १७ लखनऊके प्रसिद्ध कवि मुस्हफीके शागिर्द, १८ काव्य अभिरुचि, १९ चेतना, २० जागृति, २१ प्रभाव, २२ ज्येष्ठ भाई।

साहेब 'मसीह' बनारसीका भी है, जिनका शुमार[1] बनारसके मुमताज[2] हकीमोमे होता है और जो अलावा एक माहिर तबीबके[3] एक अच्छे शाइर है और जिनकी सबसे बडी ख़ूबी यह है कि अदब दोस्त[4] और अदब नवाज[5] है ।

गजल मेरा मिजाज[6] है और मैं गजलको और अस्नाफे सुख़न[7]के मुकाबलेमे मुश्किल समझता हूँ। मेरा ख़याल है कि खुसूसियाते गजल[8]के साथ गजल कहना आसान नही। गजलमे इस बातकी पूरी सलाहियत[9] मौजूद है कि वह जुम्ला[10] खयालात-व-तअस्सुरातको[11] बख़ूबी[12] और बआसानी पेश कर सके। इसका दामन ख़ासा वसीअ[13] है और इसकी तंग दामानी[14] और तुनकजर्फी[15]का शिकवा[16] अवस[17] है। इसके दामनमे गमेदौराँ[18] और गमेजानाँ[19] दोनोको पनाह मिली है और मिलती रहेगी। मेरा ही एक शेअ़र है।

गमे दौराँ न हुआ या गमे जानाँ न हुआ।
कौन-सा गम मेरा शर्मिन्दए एहसाँ[20] न हुआ ।।

मैं तो इन दोनोको एक-दूसरेसे अलग चीज समझता ही नही हूँ।

मैं शेअ़रगोई[21] को न सिर्फ अदब[22] बल्कि कौमियत[23] की एक बहुत बडी ख़िदमत समझता हूँ। मेरी नजरमे जबान

---

१ गणना, २ प्रमुख, ३ कुशल चिकित्सक, ४ साहित्य प्रेमी, ५ साहित्य सेवी, ६ स्वभाव, ७ काव्य-भेद, ८ गजलकी विशेषताएँ, ९ योग्यता, १० समस्त, ११ कल्पनाओं एवं उद्गारों; १२ भलीभाँति, १३ पर्याप्त विशाल, १४ संकुचित होने, १५ सकीर्णता, १६ शिकायत, १७ व्यर्थ, अनर्गल, १८ कालचक्रका शोक, १९ प्रेमशोक, २० आभारी २१ काव्य रचना, २२ साहित्य, २३ राष्ट्रीयता ।

और कौमियतमे गहरा तअल्लुक है। आजहानी[1] सर तेजबहादुर सप्रूने इलाहाबादके एक तर्ही मुशाइरा[2] मे जिसके वह सद्र[3] थे मेरी गजल सुननेके बाद फरमाया कि "अगर उर्दू यही होती जो 'नजीर' साहेबकी जबानमे है तो शायद उर्दूको आज यह दिन देखने नसीब न होते।"

इस मज्मूआ[4] की इशायत[5] के लिए मै अपने अजीज[6] और नौजवान दोस्त प्रोफेसर एम० ए० हफीज बनारसी सल्लमहूका अजहद मम्नून[7] हूँ जिनकी अनथक कोशिश और मेहनतके वगैर इस कामका होना सख्त मुश्किल ही न था बल्कि मुझ-से दीवानेके लिए एक हद तक नामुमकिन था।

और आखिरमे यह कहना चाहूँगा कि मैने वही कहा है जो मैने देखा है और जो महसूस[8] किया है और वैसे ही कहा है जिस तरह मेरे दिलने मुझसे कहनेको कहा। अब इसका फैसला नाकेदीन हजरात[9] करेंगे कि मेरे कलामका उर्दू अदबमे क्या मकाम[10] है।

—नजीर बनारसी

---

१ दिवंगत, २ समस्या-द्वारा होनेवाला कवि-सम्मेलन, ३ सभापति, ४ संग्रह, ५ प्रकाशन, ६ प्रिय, ७ नितान्त आभारी, ८ अनुभव, ९ समालोचकगण १० स्थान।

अनुक्रम

१. प्यारा हिन्दुस्तान ३
२. हिन्दुस्तानी मुजाहिद ९
३. पयामे वतन ११
४. तआ़रुफ़ १३
५. पहली जंगे-आज़ादी १५
६. अक़ीदतके फूल १७
७. बेवा २०
८. आह गान्धी! २२
९. जीवन बैरी २४
१०. कारवाने-तरक़्क़ी २६
११. गान्धीजीकी यादमें ३१
१२. जवाहिर पारे ३२
१३. अम्नका देवता ३४
१४. एक मुहाजिर दोस्तसे ३६
१५. गंगाके किनारे ३७
१६. गाँवकी गोरी ३९
१७. चाँदनी रातमें गंगाकी सैर ४१
१८. गुरुदेव ४२
१९. श्रद्धांजलि ४४
२०. प्रेमचन्द ... ४७

२१. महाकवि निराला : दो श्रद्धांजलियाँ ४९
२२. गोस्वामी तुलसीदास ५२
२३. लक्ष्मीवाई ५६
२४. महाकवि कालिदास ६२
२५. देश-सिंगार ६५
२६. ताड़ मद्द जिल्लुहू ६८
२७. दौड़ा दी मुहव्वत नस-नसमें वंसीके बजानेवालेने ७१
२८. गंगा तटपर साँझ-सवेरा ७२
२९. दीवाली ७६
३०. वसन्त ७८
३१. मिलो गलेसे गले वार-वार होलीमें ८०
३२. गजलें ८३
३३. क़ित्आत १६५
३४. रुबाइयात १७१
३५. लख्त-लख्त १७७

●

गंगोजमन

•

प्यारा हिन्दुस्तान

जिसका है सब को ज्ञान यही है।
सारे जहाँ की जान यही है।
जिससे है अपनी आन यही है।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

हँसता पर्वत, हँसमुख झरना।
पाँव पसारे गंगा जमुना।
गोदी खोले धरती माता।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

एक तो ऊँचा सब से हिमाला।
उस पर मेरे देश का झण्डा।
धरती पर आकाश का धोका।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

पर्वत कितना जमके अड़े है।
कैसे-कैसे भीम खड़े है।
झरने गिर-गिर पाँव पड़े है।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

पर्वत ऊँची चोटीवाले ।
बाँके तिर्छे नोक निकाले ।
अर्जुन जैसे वान सँभाले ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

आरती इसकी चाँद उतारे ।
ऊषा इसकी माँग सँवारे ।
सूरज इस पर सव कुछ वारे ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

झूमती गाये, नाचते पंछी ।
सारी दुनिया, रक्सो-मस्ती[1] ।
कृष्ण की वंशी, हाय रे वंशी ?

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

जाल विछाये, जाल सँभाले ।
कमसिन[2] सड़कें, माँग निकाले ।
वाल विखेरे नद्दी नाले ।

---

[1] नृत्य एव उन्माद, [2] अल्पवयस्क ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

रात की नारी डूब गयी है ।
सुब्ह की देवी जाग गयी है ।
पनघट पर एक भीड़ लगी है ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

सुन्दर नारी, नार सँभाले ।
घूँघट काढ़े और हटा ले ।
चलते-फिरते प्रेम शिवाले ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

धरती की पोशाक नयी है ।
खेती जैसे सब्ज परी है ।
मेहनत अपने बल प' खडी है ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

पड़ती बूँदे, बजती पायल ।
धरती जल थल, पंछी घायल ।
बोले पपीहा, कूके कोयल ।

मेरा निवास-स्थान यही है ।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है ।

देश का एक-एक नयन कटोरा।
सारे जहाँ पर डाले डोरा।
अपना अजन्ता अपना एलोरा।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

ताजमहल बे-मिस्ल हसीना।
इसमें मिला कितनों का पसीना।
जब कहीं चमका है यह नगीना।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

अहदे-वफा की लाज तो देखो।
शाह के दिल पर राज तो देखो।
प्रेम के सिर पर ताज तो देखो।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

भारत की तकदीर को देखो।
जन्नत की तस्वीर को देखो।
आओ ज़रा कश्मीर को देखो।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

एक इसी कश्मीर का दर्शन।
कितनों के दुख-दर्द का दर्पन।
आस नहाये, बरसे जीवन।

मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

एक तरफ़ बंगाल का जादू।
सर से कमर तक गेसू ही गेसू।
फैली हुई टैगोर की खुश्बू।
मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

काली बलाएँ सर पर पाले।
शाम अवध की डेरा डाले।
ऐसे मे कौन अपने को सँभाले।
मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

हुस्न की तस्कीं,[1] इश्क़ की ढारस।
वाह रे अपनी सुब्हे बनारस।
घाट के पत्थर जैसे पारस।
मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

मन्दिर, मस्जिद और शिवाले।
मानवता का भार सँभाले।
कितने युगो को देखे-भाले।
मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

---

[1] शान्ति, तृप्ति।

फूलों के मुखडे चूम रहे हैं।
काले भौंरे घूम रहे हैं।
अम्न के वादल झूम रहे हैं।
मेरा निवास-स्थान यही है।
प्यारा हिन्दुस्तान यही है।

•

हिन्दोस्तानी मुजाहिद[१]

दबदबे[२] मे किसी जालिम के न आनेवाला ।
आग मज्लूम[३] के सीने की बुझानेवाला ।
चढ़के सूली प' भी हक़ बात सुनानेवाला ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

शोखियाँ[४] वर्क[५] की, सूरज की हरारत[६] हूँ मै ।
छेड़ मुम्किन ही नही जिससे वह आफ़त[७] हूँ मै ।
जिसको माने हुए दुनिया है वह ताक़त हूँ मै ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

हाथ मेरा दिले बेदर्द[८] मसलने के लिए ।
पॉव मेरा सरे-मग्रूर[९] कुचलने के लिए ।
चाहिए जंग का मैदान टहलने के लिए ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

गोली आती नहीं, आते हुए थर्राती है ।
अगर आती है तो बच-बचके निकल जाती है ।
मौत भी ऑख मिलाते हुए शर्माती है ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

---

१ योद्धा, २ भय, ३ अत्याचार-पीड़ित, ४ चंचलताएँ, ५ दामिनी, ६ ताप, ७ विपत्ति, ८ क्रूर व्यक्तिका हृदय, ९ दम्भीका सिर ।

मेरा मुत्‌रिब[1] के फसाने[2] से फसाना है अलग ।
जिसको मै झूमके गाता हूँ वह गाना है अलग ।
साज है मेरा जुदा, मेरा तराना है अलग ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कोन डरानेवाला !

बनके रजिश भी मेरे पास खुशी आती है ।
खून को देखके आँखो मे तरी आती है ।
गुदगुदाते है जो बरछे तो हँसी आती है ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

असरे-जज्बए-सादिक[3] न दिखा दूँ तो सही ।
बहते पानी मे न मै आग लगा दूँ तो सही ।
किसी जालिम की हो हस्ती न मिटा दूँ तो सही ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

हिन्द की तेग[4] हूँ, लहराऊँगा गगा की तरह ।
अर्सए जग[5] मे बल खाऊँगा जमुना की तरह ।
कभी उतरूँगा तो चढ जाऊँगा दरिया की तरह ।
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

भेज दो करके मेरे खून से तहरीर 'नजीर' !
मुझको धब्बे से बचाना है यह तस्वीर 'नजीर' !
कोई बदख्वाह[6] न देखे सूए-कश्मीर[7] 'नजीर' !
मै मुजाहिद हूँ, मुझे कौन डरानेवाला !

•

---

१ गायक, २ कहानी, ३ सच्चे उत्साहका प्रभाव, ४ तलवार, ५ रणक्षेत्र, ६ शत्रु, दुराकांक्षी, ७ कश्मीरकी ओर ।

पयामे-वतन[1]

ये मजबूरियाँ और मुख़्तार[2] बनकर।
बिके जा रहे हो खरीदार बनकर।
उमीदे वफ़ा[3], और इन कम-नज़र[4] से ?
जो अपनो में रहते हो अग़यार बनकर।

अगर हर तरफ मुस्कराये मुहब्बत।
हँसे रात भी सुब्हे-बेदार[6] बनकर।
चमन की अगर जिन्दगी चाहते हो।
चमन मे रहो शाखे-गुलजार[7] बनकर।

बहुत-से रियाकार[8] तुमको मिलेंगे।
मगर तुम न मिलना रियाकार बनकर।
हमेशा से खुद्दार[9] ही तुम रहे हो।
जहाँ अब भी रहना तो खुद्दार बनकर।

क़दम जब जमाना तो बनकर हिमाला।
ठहरना तो लोहे की दीवार बनकर।
जो हँसना तो आँखें मिलाकर क़ज़ा से[10]।
जो रोना तो भारत के गमखार[11] बनकर।

---

[१] स्वदेश सन्देश, [२] अधिकार-सम्पन्न, [३] प्रेमकी आशा, [४] संकीर्ण दृष्टि-वाला, [५] पराये-अपरिचित, [६] जागृत प्रभात, [७] पुष्पोद्यानकी डाली, [८] दिखावटी सद्व्यवहार करनेवाला, [९] स्वाभिमानी, [१०] मृत्यु, [११] संवेदना रखनेवाला।

जो छाना तो बादल की सूरत में छाना ।
बरसना तो तीरो की बौछार बनकर ।
अगर जंग करना गुलामी से करना ।
कभी सर जो देना तो सर्दार बनकर ।

जो झुकना कमाँ[1] बनके अर्जुन की झुकना ।
जो उठना तो टीपू की तलवार बनकर ।
वतन के जो काम आये उसका वतन है ।
लहू से जो सींचे, उसीका चमन है ।

* * *

---

[1] धनुष ।

तआरुफ़[1]

हमी थे, हमीं है अहिंसा के हामी।
उतारा है हँस-हँसके तौके-गुलामी[2]।
सलामी दो ऐ चाँद तारो सलामी!
हिमाला की चोटी गुँधी जा रही है।
वतन की जवानी चली आ रही है।
नही हमको अग्यार[3] की अब जुरूरत।
हमारा चमन हम करेंगे हिफाज़त।
फरिश्ता[4] भी आये तो लेकर इजाजत।
फलक[5] यह नही, सर्ज़मीने-चमन है।
यह जन्नत नही है, हमारा वतन है।
मुहब्बत से मिल-जुलके बाहम[6] रहेंगे।
यह माना कि तादाद में कम रहेंगे।
जहाँ सब रहेंगे वही हम रहेंगे।
जो औरों ने कुछ मालोज़र[7] दे दिये है।
वतन के लिए हमने सर दे दिये है।
मिटा दे जो दुश्मन को वह वार है हम।
वफादार थे और वफ़ादार हैं हम।
वतन की सिपर[8] और तलवार है हम।

---

१ परिचय, २ दासता-बन्धन, ३ विदेशी जन, ४ देवता, ५ आकाश, ६ परस्पर, ७ धन-सम्पत्ति, ८ ढाल।

जो दुश्मन कभी गर्मे-पैकार[1] होंगे।
तो हम पहले मरने को तैयार होंगे।

हमे डूबना और उभरना यही है।
है गंगा यही पार उतरना यही है।
जिये हम यही, हमको मरना यही है।
हम आवादो-वरवाद वेवाक[2] होंगे।
इसी खाक के है यही खाक होंगे।

अजल[3] को गले से लगाना गवारा[4]।
गवारा लुहू में नहाना गवारा।
वतन से नही हमको जाना गवारा।
वह जाये कही जो यहाँ का नही है।
हमारा तो सब कुछ यही था यही है।

कदम और आगे बढ़ाना है हमको।
अभी दूर मंजिल है जाना है हमको।
एक उजडे जहाँ को बसाना है हमको।
यह आजाद होने का हासिल नही है।
यह मंजिल का धोका है मंज़िल नही है।

•

---

१ युद्ध-रत, २ सकोच रहित, ३ मृत्यु, ४ सत्य।

पहली जंगे-आज़ादी

१८५७ के शहीदोंकी यादमें

बैठी है दिलो प' धाक अब भी ।
तुम उठ गये, उठ गया जनाज़ा ।
सौ साल हुए, मगर शहीदो !
अब तक है तुम्हारा खून ताजा ।

गरजे हो अगर वतन के शेरो !
मुँह तोप का बन्द हो गया है ।
फाँसी प' अगर लटक गये हो ।
सर और बलन्द हो गया है ।

मौत आयी गले जो तुमसे मिलने ।
तुमने उसे देश-प्यार समझा ।
जब आके अजल[१] ने थपकियाँ दी ।
माता का उसे दुलार समझा ।

जब गोलियाँ खाके गिर पड़े हो ।
भारत का क़दम सँभल गया है ।
कर्वट जो शहीद होके बदली ।
इतिहास का रुख बदल गया है ।

---

[१] मृत्यु ।

हर मोड पे था अजल का पहरा ।
हर गाम[१] प' जिन्दगी खडी थी ।
मरते थे वतन प' मरनेवाले ।
मरने ही मे सबकी ज़िन्दगी थी ।

तुम कत्ल हुए तो धार ख़ूँ की ।
धरती को सँवारने लगी है ।
मुँह बन्द हुआ है जब तुम्हारा ।
तारीख़ पुकारने लगी है ।

◆

---

[१] पग ।

अक़ीदत[१] के फूल

सरफरोशाने-वतन[२], रूहे वतन[३], जाने वतन[४]!
जाके हर दश्त[५] मे गरजे मेरे शेराने वतन[६]!
बढके दी जान तो कुछ और बढी शाने वतन !
चढ़के सूली से जो उतरे हो जवानाने वतन !
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन !

सबको आजादी का दीवाना बनाकर सोये ।
नीद अँगरेज की आँखों से उड़ाकर सोये ।
तुम जो सोये भी तो भारत को जग़ाकर सोये ।
नाज करता है वतन तुम प' जवानाने वतन ।
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन ।

गिरनेवालो को उठाया है दोबारा तुमने ।
खून मे डूबके कितनो को उभारा तुमने ।
लड़के तूफॉ से हमे पार उतारा तुमने ।
तुमको भूले है न भूलेंगे दिलेराने वतन !
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन !

---

[१] श्रद्धा, [२] स्वदेशपर शीश चढानेवाले, [३] स्वदेश-आत्मा, [४] स्वदेश-प्राण, [५] जंगल, [६]. स्वदेशके शेर ।

सोग मे कल कोई आँसू न वहा सकता था।
लाश क्या, आँख भी कोई न उठा सकता था।
कल तुम्हे कोई कफन भी न पिन्हा सकता था।
कम-से-कम आज तो तुम ओढ लो दामाने वतन।
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन!

अपनी माँ-वहनो के जेवर दिये सन्तान भी दी।
यह कोई कह नही सकता कि कही आन भी दी।
घर का सामान दिया, घर भी दिया, जान भी दी।
सवको कुर्बान किया, खुद हुए कुर्बाने वतन।
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन!

कभी अफ्साने[1] हुए तो कभी उन्वाने[2] हुए।
देश पर दिल से फिदा[3] कितने मुसल्मान हुए।
हाय! कितने उलमा[4] जान से कुर्बान हुए।
तुम तहे-ख़ाक[5] हो ऐ साहिवे ईमाने[6] वतन!
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन!

सन् वयालिसका तूफान उठानेवालो!
ईंट से ईंट हुकूमत की वजानेवालो!
मौत की गोद मे भी झूमके जानेवालो!
तुमको भूले है न भूलेगे फिदायाने वतन!
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन!

---

१ कहानी, २ शीर्षक, ३ निछावर, ४ मुसलमान विद्वान्, ५ मिट्टीके नीचे, ६ धर्मात्मा।

गोलियाँ सीने प' खायी तो मगर आन के साथ।
शानवाले थे मरे भी तो बडी शान के साथ !
मरके बापू भी मेरे हो गये सन्तान के साथ।
कुछ कमी अब तो नही तुमको दिलेराने[1] वतन !
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन !

वीर थे, भीम की, अर्जुन की निशानी तुम थे।
नाज भारत को था जिस पर वह जवानी तुम थे।
वाक़ई हिन्द की तलवार का पानी तुम थे।
तुमने ही खून से सीचा है गुलिस्ताने वतन।
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन !

ऐ मुसव्विर[2] तेरी तस्वीर न जाने देगे।
जाये सब, शोखिए तहरीर[3] न जाने देंगे।
जान भी जाये तो कश्मीर न जाने देगे।
बेचकर जान खरीदा है यह सामाने वतन !
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन !

जान को बेचके मैदाँ मे उतरने वालो !
देश के वास्ते ऐ जा से गुजरनेवालो !
तुमको रोता है 'नजीर' आज भी मरनेवालो !
तुम नही आज तो सूना है गुलिस्ताने वतन !
तुम प' हम फूल चढाते है शहीदाने वतन !

●

---

१ स्वदेशके वीर, २ चित्रकार, ३ लेखकी मनोहरता।

वेवा

दुनिया को हर खुशी से किनारा किये हुए ।
मज्बूर जिन्दगी का सहारा लिये हुए ।
चेहरे की जर्दियों से गिजां[1] आशकार[2] है ।
है तो बहार ही मगर उजड़ी बहार है ।
इज्हार[3] हो रहा है यह हाले-तबाह[4] से ।
गौहर की लाश देख चुकी है निगाह से ।
रुख्सार[5] कि वह रंग गये ताजगी[6] गयी ।
मुर्झाके फूल रह गये, खुशबू चली गयी ।
वालो की मस्त मस्त घटा अब न छायेगी ।
भूले से भी निगाह न विजली गिरायेगी ।
जीवन के कोने-कोने मे सूना पड़ा है अब ।
दिल की जगह प' दिल नही दिल की चिता है अब ।
हर आहे-सर्द[7] लाशे-तमन्ना[8] लिये हुए ।
बैठी है आप अपना जनाजा लिये हुए ।
अपने पती की दिल मे मुहब्बत लिये हुए ।
बैठी है आज चूड़ियाँ ठण्डी किये हुए ।
दिल को वह गम मिला है कि दिल दागदाग है ।
लाखो चिराग होके भी घर बे-चिराग है ।

---

[1] झंझा ऋतु, [2–3] प्रकट, [4] बुरी दशा, [5] कपोल, [6] प्रफुल्लता। [7] ठण्डी आह, [8] कामना-शव ।

बैठी थी कल जो घर मे सुहागिन बनी हुई ।
क्या भाग है वही है अभागिन बनी हुई ।

हमजोलियो मे जाने के काबिल नही रही ।
दुनिया को मुँह दिखाने के क़ाबिल नही रही ।
बेवा को अपने पास बिठाता नही कोई ।
इस मुफ्लिसी[१] का नाज उठाता नही कोई ।

वह बल ही अब नही है कि अब्रू[२] प' बल पडे ।
कुछ कह दिया किसी ने तो आंसू निकल पडे ।
साथ अपने अपनी ऑख का तारा लिये हुए ।
बेवा थी बेवगी का सहारा लिये हुए ।

सूरज हुआ गुरूब[३], अँधेरा-सा छा गया ।
बेवा के छुप के रोने का फिर वक्त आ गया ।
हिर-फिरके फिर निगाह पडी सूनी सेज पर ।
ऑसू भर आये ऑख में और झुक गयी नजर ।

आँचल से अपना जर्द-सा चेहरा छुपा लिया ।
चेहरा छुपा के ऑख से आँसू गिरा दिया ।
चेहरा छुपा के रोयी कि बेटा न देख ले ।
मासूम[४] मेरे गम का तमाशा न देख ले ।

बारिश मे नद्दियाँ तो चढी और उतर गयी ।
रोते हुए गरीब को उमरे गुजर गयी ।
मख्लूक[५] की खुदाई है खालिक[६] के राज मे ।
मेअ्यार[७] जिन्दगी का यही है समाज मे ।

---

१ दीनता, २ भृकुटी, ३ अस्त, ४ अबोध, ५ मनुष्यों, ६ ईश्वर, ७ अस्त ।

आह गान्धी !

एक क़लम-बर्दाश्ता[1] नज़्म जो गान्धीजीकी
मौतकी ख़बर पाते ही लिखी गयी

तेरे मातम में शामिल हैं जमीनो आसमां वाले !
अहिंसा के पुजारी सोग[2] में हैं दो जहां वाले !
तेरा अर्मान पूरा होगा ऐ अम्नो-अमां वाले !
तेरे झण्डे के नीचे आयेंगे सारे जहां वाले।
मेरे बूढ़े बहादुर, इस बुढ़ापे में जवांमर्दी[3] !
निशां गोली के सीने पर है गोली के निशां वाले !
निशां हैं गोलियों के या खिले हैं फूल सीने पर।
गुलिस्तां[4] साथ लेकर जा रहे हैं गुलसितां वाले।
उसीको मार डाला जिसने सर ऊंचा किया सबका।
न क्यों गैरत[5] से सर नीचा करे हिन्दोस्तां वाले।
मेरे गान्धी ! जमींवालों ने तेरी क़द्र जब कम की।
उठाकर ले गये तुझको जमीं से आसमां वाले।
जमीं पर जिनका मातम है फ़लक[6] पर धूम है उनकी।
ज़रा-सी देर में देखो कहां पहुंचे कहां वाले।

---

१ तत्क्षण-रचित, २ शोक, ३ युवकोचित वीरता, ४ पुष्पोद्यान, ५ लज्जा, ६ आकाश।

पहुँचता धूम से मंजिल प' अपना कारवाँ[1] अब तक ।
अगर दुश्मन न होते कारवाँ के कारवाँ वाले ।
सुनेगा ऐ 'नजीर' अब कौन मज्लूमो[2] की फर्यादे[3] ।
फुगाँ[4] लेकर कहाँ अब जायेगे आहो-फुगाँ वाले ?

●

---

१ यात्रीदल, २ अत्याचार-पीडितों, ३ आर्त्तनाद, ४ विलाप ।

जीवन वैरी

ख़ूगरे हम्द[1] से थोड़ा-सा गिला[2] भी सुन ले

बे-मौत न जाने कितनो को इस लाल परी ने मारा है।
मूरख न जला जीवन-सम्पत, मदिरा नही अग्नी-धारा है।
जो बूँद है एक चिन्गारी है, जो घूँट है एक अंगारा है।
जो जह्र मे खुद ही डूबी हो वह तुमको बचाना क्या जाने।
हर मौज हलाहल हो जिसकी, मुर्दे को जिलाना क्या जाने।
जो आग लगा दे पानी मे वह आग बुझाना क्या जाने।

बोतल से निकलकर शीशे तक लहराती हुई बल खाती है।
शीशे से जो लब तक आती है, दुलहन की तरह शर्माती है।
पर कण्ठ तले जब जाती है जाते ही छुरी बन जाती है।
बेकैफ़[3] जमाही आती है, हर जख्म हरा हो जाता है।
जब चढ के उतरती है जालिम जी और बुरा हो जाता है।
गम दूर तो इससे क्या होगा, गम और सिवा[4] हो जाता है।

यह दोस्त नही है दुश्मन है, जोगिन ये नही है पापिन है।
लाली ये नही है ऊषा की, शीशे मे गुलाबी डाइन है।
भाग इससे ये जालिम डस लेगी, जो लह्र है इसकी नागिन है।

---

१ प्रशसाकारी, २ निन्दा, ३ नीरस, ४ अधिक।

तू हाथ में सागर को लेकर क्या सोच रहा है फोड़ भी दे।
यह है तेरे जीवन का बैरी इस बैरी से नाता तोड भी दे।
दुश्मन के भरोसे क्या जीना, क्यों पीता है पीना छोड़ भी दे।

ठुकरा दे 'नजीर' इस मदिरा को वह साँवरे गोरे क्या कम है।
सरमस्त बनाने की खातिर मस्त आँखों के डोरे क्या कम हैं।
पैमाना[१] हटा दे, पीने को वह नैन कटोरे क्या कम हैं।

●

---

[१] मदिराका प्याला।

कारवाने-तरक़्क़ी[1]

हौसलो की बलन्दी है सब पर अयाँ[2] ।
नातवाँ[3] हम सही दिल नही नातवाँ ।
राह रोके किसी मे यह हिम्मत कहाँ ।
मंजिले साथ रखता है अज़्मे-जवाँ[4] ।
अब है आजाद हम अह्ले-हिन्दोस्ताँ[5] ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ ।

उफ भी मुँह से अगर की तो डाँटा गया ।
कितनी सख्ती से सामान छाँटा गया ।
किस बला की थी कातिल फिरंगी अदा[6] ।
ख़ून तक देशमाता का बाँटा गया ।
वक्त था, दे चुके सब्र का इम्तेहाँ ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ ।

सामने आयी आफत बडी से बड़ी ।
उठके तूफाँ लडा, आके आँधी लडी ।
शान्ति का सफीना[7] भँवर मे पडा ।
उस भँवर मे भी बुन्यादे-साहिल[8] पडी ।
ख़ून बापू का है सुर्खिए-दास्ताँ[9] ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ ।

---

१ प्रगतिका यात्री दल, २ व्यक्त-प्रकट, ३ शक्तिहीन-निर्बल, ४ युवा-संकल्प, ५ भारतनिवासी, ६ अँगरेजी चाल, ७ नौका, ८ तटकी नीव, ९ कहानी-शीर्षक ।

अज्मे ताजा[1] करो, यौमे जम्हूर[2] है।
अस्ल मंजिल अभी मंजिलो दूर है।
कारनामो पे करते चलो एक नजर।
आगे बढने का एक यह भी दस्तूर है।
हम अमर है, अमर है हमारे निशाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवा।

टूटते है हजारों चटानो के सर।
जब कही जाके बनती है एक रहगुजर[3]।
लाखो फ़र्हाद[4] मिल कर लड़ाते है जाँ।
तब ये शीरी[5] कही होती है जल्वागर[6]।
देखते जाइए मेहनतो के निशाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

कितने उजडे हुओ को बसाया गया।
बे-घरो के लिए घर बनाया गया।
कितने ऊँचो को लाया गया सित्ह पर।
कितने गिरते हुओ को उठाया गया।
और अभी साथ है कितने बे-खानमाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

कितनी तामीर[8] अभी जेरे तामीर[9] है।
औजे तक़्दीर[10] मुहताजे तदबीर[11] है।

---

१ नवीन संकल्प, २ जनतन्त्रदिवस, ३ मार्ग, ४-५फारस देशकी एक प्राचीन ऐतिहासिक घटनाको ओर संकेत जिसमें 'फर्हाद' नामक प्रेमीने अपनी प्रेमिका 'शीरी'की इच्छापर पर्वत काटकर दूधकी नहर निकाली थी, ६ सुशोभित, ७ विस्थापित, ८ निर्माण, ९ निर्माणाधीन, १० भाग्यकी उच्चता, ११ यत्नकी अपेक्षा रखनेवाले।

गर उमगे न हो दिल मे तामीर की,
आदमी एक कागज की तस्वीर है।
काश सब लोग हो हमसफर[1] हमजवाँ[2]।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

तफिरका[3] हर कदम पर मिटाते चलो।
साथ कदमो के दिल भी मिलाते चलो।
अपना जीवन बनाना है सुन्दर अगर।
सबकी जीवन-सभा को सजाते चलो।
सबके-सब होगे जब तक न अब शादमाँ[4]।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

कितने तूफाँ को मिल-जुल के घेरा गया।
कितने दरियाओ का रुख भी फेरा गया।
अब भी देहात मे है अँधेरा मगर,
जिससे अन्धेर था वह अँधेरा गया।
राह मे अब है कुछ रोशनी कुछ धुवाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

हुस्न के साथ सडके निकाली गयी।
देश माता की माँगे निकाली गयी।
ज़िन्दगी हर तरफ़ लह्र लेने लगी।
इतनी ख़ूबी से नहरे निकाली गयी।
लहलहाने लगी धान की खेतियाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

---

[१] सह-यात्री, [२] सह-वक्ता, [३] विभेद, [४] प्रसन्न।

पेड पैरो पे अपने खड़े हो गये।
क्या ये बे-पाले-पोसे बड़े हो गये?
आँधियो से भी लेने लगे टक्करे।
मोम जितने थे उतने कडे हो गये।
बढते जायेगे सडको के यह पास्बाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।
भोर मे अपने घूँघट उठाये हुए।
सर पे काँधे पे गागर सजाये हुए।
गोरे मुखडे लिये गाँव की गोरियाँ।
भीड-सी पनघटो पर लगाये हुए।
जितना प्यारा समय उतना प्यारा समाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।
कितने खेतो के सीने उभारे गये।
कितने पौदो के गेसू[3] सँवारे गये।
था न पानी जहाँ सैकडो मील तक।
हम वहाँ लेके दरिया के धारे गये।
कह रही है यह तर होके सूखी जवाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।
पुल बने, गाड़ियाँ आने-जाने लगी।
पटरियाँ रेल की जगमगाने लगी।
जगलात इस तरह से सँवारे गये।
बस्तियाँ जंगलो पर भी छाने लगीं।
उठके कहने लगा इंजनों का धुवाँ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ।

---

१ रक्षक, २ दृश्य, ३ केश।

अपने पर्वत को जब हम सजाने लगे ।
हँसके आईना झरने दिखाने लगे ।
हुस्न इतना बढ़ा, गैर मुल्को मे लोग ।
आर्जू लेके दर्शन को आने लगे ।
देश बन जाये जब तक न जन्नत निशाँ ।
रुक सकेगा न रोके मे यह कारवाँ ।
बुनकरो को, किसानो को, मज्दूर को ।
कोई समझे न मज्बूर, मज्बूर को ।
अब तो चलना है जनता की आवाज पर ।
वर्ना लग जायेगी ठेस जम्हूर[1] को ।
जो भी चाहे बने देश का पास्वाँ[2] ।
रुक सकेगा न रोके मे यह कारवाँ ।
अपनी धरती मे सूरज निकलने को है ।
जिन्दगी का नया दौर चलने को है ।
जिसको बच्चा समझते हो नौ साल का ।
अब वह जम्हूर दुनिया बदलने को है ।
इसकी गर्दे-कदम[3] होगी अब कहकशाँ[4] ।
रुक सकेगा न रोके मे यह कारवाँ ।
छटती जाती है अब तीरगी[5] ऐ 'नजीर' !
मुस्कराने को है रोशनी ऐ 'नजीर' ।
कारवाने-तरक्की का हर-हर कदम
चूमती जाती है जिन्दगी ऐ 'नजीर' !
साथ है शान्ती और अम्नो-अमाँ ।
रुक सकेगा न रोके से यह कारवाँ ।

---

१ जनता, २ रक्षक, ३ पैरो की धूल, ४ आकाश-गंगा, ५ अन्धकार ।

गान्धीजीकी यादमें

उस शान्तिवाले दाता से व्यवहार न टूटे ऐ साथी !
हम झूलते है झूला जिस प' वह नार न टूटे ऐ साथी !

क्यो रोक रहा है बढने दे, इस प्रेमलता को चढने दे ।
बहता है जो आँसू बहने दे, यह तार न टूटे ऐ साथी !

परलोक की बाते तो चलकर परलोक मे समझी जायेगी ।
हम सबकी मुहब्बत का बन्धन इस पार न टूटे ऐ साथी !

वह काम करे हम क्यों जिससे भारत के पिता का दिल टूटे ।
मन्दिर का कलस या मस्जिद का मीनार[1] न टूटे ऐ साथी ।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस मे रहे भाई-भाई ।
गूँधा है जो बूढे माली ने वह हार न टूटे ऐ साथी !

उस वक्त तलक सुख-सागर की लहरो से न खेला जायेगा ।
इस देश-द्रोही की जब तक तलवार न टूटे ऐ साथी !

जीना हो कि मरना ऐ साथी ! सब साथ का अच्छा होता है ।
दम टूटे, तो टूटे आपस का व्यवहार न टूटे ऐ साथी !

रखना है 'नजीर' उनको जो सुखी, उपदेश का उनके पालन कर ।
इस तार से वह सुनते है खबर, यह तार न टूटे ऐ साथी !

●

---

[1] शिखर ।

जवाहिर पारे[1]

पण्डित जवाहरलाल नेहरू वज़ीरे-आज़म हिन्दको
छियासठवी सालगिरहके मौक़अ् पर !

वह जवाहिर उम्र जिसकी अव छियासठ साल है।
है वलन्द इक्वाल[2] और इतना वलन्द इक्वाल है।
सारी वहने मानती है उसको भाई की तरह !
सारी माताएँ समझती है कि मेरा लाल है।
शान्ती मुहरा है उसका, अम्न उसकी चाल है।
है विसातेजग[3] शर्मिन्दा वह ऐसी ढाल है।
है वह भारत ही का, लेकिन सिर्फ भारत का नही।
लाल मोतीलाल का अव एशिया का लाल है।
आ़म[4] है उनकी मुहब्बत ख़ासकर वचपन के साथ।
जैसे मन है साथ तन के और तन है मन के साथ।
नन्हे वच्चो मे जो पहुँचे, ख़ुद भी वच्चे हो गये।
इतना भोलेपन का आदर इतने भोलेपन के साथ।
तेरा आ़लम[5] क्या कि तन्हा[6] ख़ुद ही एक आ़लम[7] है तू।
शान्ती और अम्न का हँसता हुआ परचम[8] है तू।
ऐ मेरी गगोजमन की गोद के पाले सपूत !
आज दुनिया के वड़े दरियाओ का सगम है तू।

---

१ मणि-कण, २ प्रतापवान्, ३ युद्धक्षेत्र, ४ सर्व-सामान्य, ५ अवस्था, ६ अकेले, ७ ससार, ८ ध्वजा।

शाखेगुल[1] से कम नही है ताजगी तहरीर[2] की।
हाय रे तस्वीर जीती-जागती तस्वीर की।
तेरी रग-रग मे है गंगा और जमुना मौजजन[3]।
तेरे चेहरे पर बहारे वादिये कश्मीर की।

कौन बनकर आ गया तावो-तवाने-एशिया[4]।
किससे लेता है जवानी हर जवाने एशिया।
हिन्दवालो ! हिन्द की मिट्टी की अज्मत[5] देख लो।
हिन्द की मिट्टी का एक पुतला है जाने एशिया।

तू बनेगा एक दिन रूहे-रवाने[6] एशिया।
बढती है तेरे कदम के साथ शाने एशिया।
होगी कुटियो पर जवाहिर रेज[7] सूरज की किरन।
जगमगायेगा तुझी से आसमाने एशिया।

पर्दा-पर्दा साज है जिसका वह ऐसा साज है।
उसकी हर आवाज पूरे मुल्क की आवाज है।
जिसको जितना नाज है अपने वतन पर ऐ 'नजीर' !
उसको उतना ही जवाहिरलाल पर भी नाज है।

●

---

१ फूलोंकी डाली, २ लेखनशैली, ३ तरगित, ४ एशियाका शक्तिबल, ५ महत्ता, ६ शरीरमें दौडनेवाला प्राण, ७ मणिवर्षक।

अम्नका देवता

आदमीयत का तरफदार उठा दुनिया से ।
अम्ने-आलम[1] का अलमदार[2] उठा दुनिया से ।
एशिया-भर का वफादार उठा दुनिया से ।
वक्त का काफिला-सालार[3] उठा दुनिया से ।
ऐ अजल ![4] आदमी दुनिया से गुजर सकता है ।
कारनामा[5] तेरे मारे कही मर सकता है ।
रोशनी देके हमे रोशनी वाला न रहा ।
शान्ती कैसे मिले शान्ती वाला न रहा ।
चलता-फिरता वह मुहब्बत का शिवाला न रहा ।
वही गोकुल है मगर बाँसुरी वाला न रहा ।
अब नही पूरी मुलाकात तो आधी ही सही ।
आज बापू नही बापू की समाधी ही सही ।
अम्न का सर बहुत ऊँचा है झुके नामुम्किन ।
जिसकी फितरत[6] है उभरना वह दबे नामुम्किन ।
खाके ठोकर कदम आगे बढे नामुम्किन ।
काफिला मौत के रोके से रुके नामुम्किन ।
सामने देख पलटकर मुए-तक्दीर[7] न देख ।
मंजिले आस मे है यास[8] की तस्वीर न देख ।

---

१ विश्व-शान्ति, २ ध्वजारोहक, ३ यात्रीदलका प्रधान, ४ मृत्यु, ५ कृत्य, ६ स्वभाव, ७ भाग्यकी ओर, ८ निराशा ।

सिर्फ उन्वान[1] ही बदला है, कहानी है वही ।
मरनेवाले को हर एक जिन्दा निशानी है वही ।
अम्नेआलम[2] के तरफदारों का पानी है वही ।
हम वही और इरादो की जवानी है वही ।
हर अदा ऐसी कि मुँह फेर दे खूँखारो[3] का ।
हर नजर ऐसी कि दम तोड दे तलवारो का ।

जिसकी लहरो मे न हो आग वह पानी ही नही ।
जो हो तूफान से खाली, वह रवानी ही नही ।
भूल जाये जिसे दुनिया वह कहानी ही नही ।
जो न काम आये वतन के वह जवानी ही नही ।
खून हिन्दी है तो गंगा की रवानी भी रहे ।
जैसी तलवार है तलवार का पानी भी रहे ।

* * *

---

१ शीर्षक, २ विश्वशान्ति, ३ रक्ताहारी-खूनी ।

एक मुहाजिर[1] दोस्तसे

न दिलशिकस्ता[2] मिलेंगे गुंचे[3], न दिल गिरिफ्ता[4] कली मिलेगी।
अदाए-अह्ले-चमन[5] जो बदली, फिजा[6] भी बदली हुई मिलेगी।
तेरी गरीबी का क्या मदावा[7] कि तू है एहसास[8] का सताया।
रहा अगर तेरा जेह्न[9] मुफ़्लिस[10] तो हर जगह मुफ्लिसी मिलेगी।
खलाए-जेह्नी[11] को अपने[12] पुर कर नहीं तो जीना भी होगा दूभर।
यह जैबे-फितरत[13] रही जो खाली तो सारी दुनिया तेही[14] मिलेगी।
वतन को तू छोड दे मगर क्या गमे-वतन तुझको छोड देगा?
वह साजकी हो कि मुत्रिबा[15] की हर एक सदा दुख-भरी मिलेगी।
वहाँ प' अह्ले-वतन[16] मिलेंगे तो वह भी तस्वीरे-गम[17] मिलेंगे।
अदा-अदा गमजदा[18] मिलेगी, नजर-नजर शब्नमी[19] मिलेगी।
यहाँ का जब तज्किरा[20] छिडेगा तो उन फिजाओं में दम घुटेगा।
बुझी-बुझी शम्ए-दिल[21] रहेगी, धुवाँ-धुवाँ जिन्दगी मिलेगी।
न कर मुझे मौत के हवाले, वतन से ऐ दूर जानेवाले!
जहाँ तडपती है आज लाशें वहीं प' कल जिन्दगी मिलेगी।
यह जर्द पत्ते सिमट-सिमटकर समेट ही लेंगे अपने बिस्तर।
चमन सलामत, बहार एक दिन तवाफ[22] करती हुई मिलेगी।
नया जमाना, नया सवेरा, नयी-नयी रोशनी मिलेगी।
यह रात जब ले चुकेगी हिचकी, हयात[23] एक दूसरी मिलेगी।

---

१ स्वदेश-परित्यागी, २ भग्नहृदय, ३ कली, ४ मलिन हृदय, ५ उद्यान-निवासियोंकी रीति, ६ वातावरण, ७ औषधि, ८ भावना, ९ मन, १० दरिद्र, ११ मानसिक शून्यता, १२ पूर्ण, १३ प्रकृतिकी जेब, १४ खाली, १५ गायिका, १६ देशवासी, १७ चिन्ता मूर्ति, १८ शोकग्रस्त, १९ ओस-जैसी गोली, २० चर्चा, २१ हृदय-दीप, २२ परिक्रमा, २३ जीवन।

गंगाके किनारे

ता-हद्दे नजर[1] जब नजरो मे जन्नत के नजारे होते थे ।
बातो मे कनाए[2] होते थे, नजरो मे इशारे होते थे ।
ऐसे मे जो आँसू गिरते थे गिरते ही सितारे होते थे ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गंगा के किनारे होते थे ।

वह रात का सुन्दर सन्नाटा, चुप साधे हुए जैसे मजिल ।
गंगा की धडकती छाती पर अर्मा के दिये झिलमिल झिलमिल ।
पानी मे लरजती रहती थी चाँद और सितारो की महफिल ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गंगा के किनारे होते थे ।

हर मौजे-रवाँ[3] पर लहराती हँसती-सी रुपहली एक धारी ।
जैसे किसी चंचल के तन पर लहराये बनारस की सारी ।
गंगा की अदा प्यारी-प्यारी कुछ और भी होती थी प्यारी ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गंगा के किनारे होते थे ।

अशनान निगाहे करती थी परकाश की चढती नद्दी मे ।
आकाश के उभरे तारे थे डूबे हुए कैफो-मस्ती[4] मे ।
बैठे नजर आते थे हम-तुम चन्दा की रुपहली कश्ती मे ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गगा के किनारे होते थे ।

---

१ दृष्टिकी सीमा तक, २ संकेत ३ गतिशील लहर, ४ आनन्द-उन्माद ।

महताब[1] की किरनें झुक-झुककर कुछ जाल रुपहले बुनती थी ।
गगा की कसम मौजें आकर कदमो पे सर अपना धुनती थी ।
सब प्रेम-कथाएँ कहती थी, सब प्रेम-कथाएँ सुनती थी ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गगा के किनारे होते थे ।

यूँ राग-सा छेडे रहता था बहता हुआ पानी का धारा ।
जैसे कोई जोगी रात गये गाता हो बजाकर इकतारा ।
इस झूमती गाती गगा का होता था समाँ प्यारा-प्यारा ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गगा के किनारे होते थे ।

अर्मानो की कलिया खिलती थी, आशाओ के दीपक जलते थे ।
बदमस्त हवाओ के झोके चलते हुए पखा झलते थे ।
रात और हसी हो जाती थी, इस हुस्न से हम-तुम चलते थे ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गगा के किनारे होते थे ।

गंगा के किनारे आते थे, आजाद तबीअ़त होती थी ।
बेबाक[2] से हम-तुम रहते थे, बेबाक मुहब्बत होती थी ।
हर शै[3] पे हुकूमत करते थे, हर शै पे हुकूमत होती थी ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गंगा के किनारे होते थे ।

जैसे कि 'नज़ीर' उन रातो पर कुदरत[4] भी करम[5] फरमाती थी ।
बेदार[6] खुदा कर देता था आँखो मे अगर नीद आती थी ।
मन्दिर मे गजर बज जाता था, मस्जिद मे अजाँ हो जाती थी ।
जब चाँदनी रातो मे हम-तुम गंगा के किनारे होते थे ।

---

१ चन्द्रमा, २ स्वच्छन्द, ३ वस्तु, ४ ईश्वरीय शक्ति, ५ कृपा, ६ सजग ।

गाँवकी गोरी

रात की चादर सहर[१] के रुख[२] से सरकाती हुई ।
एक ताजा जिन्दगी की लहू दौड़ाती हुई ।
फितरतन्[३] हर मंजरे फितरत[४] को शर्माती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

पत्ता-पत्ता गुनगुनाता है सबा[५] के साज पर ।
झूमती जाती है फितरत[६] अपनी ही आवाज पर ।
मुँह अँधेरे मुसकराती, फूल बरसाती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

सर प' एक तांबे का गागर, हाथ मे रस्सी लिये ।
सुब्ह की देवी चली है रात की मदिरा पिये ।
दामने-मश्रिक[७] मे जर्री[८] लहू दौडाती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

अपनी ही उठती जवानी से नजर नीची किये ।
एक नयी चुँदरी की धोती अपने काँधे पर लिये ।
मन-ही-मन मे कुछ लजाती और शर्माती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

---

१ प्रभात, २ मुखड़े, ३ स्वभावतः, ४ प्राकृतिक दृश्य, ५ प्रातः पवन, ६ प्रकृति, ७ पूर्व-अंचल, ८ सुनहरी ।

वह हटा लेना कभी, रखना कभी गागर प' हाथ ।
वहमी रह-रह के वह मरके हुए आँचल के साथ ।
अपनी ताकत और अपने बल प' बल खाती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

होंट पर लाली नहो, रुख्सार[1] पर पौडर नही ।
मग़रिबी[2] धब्बा कही भी हुस्ने मश्रिक[3] पर नही ।
सादगी के साथ रंगीनी को ठुकराती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

हर तमन्ना[4] कश्मकश[5] मे आर्जू मुश्किल मे है ।
चौदवी का चाँद है और सोल्हवी मंजिल मे है ।
सर उठाती, सर झुकाती, नाज फरमाती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

बाल झोको से हवा के रुख़[6] तलक आये हुए ।
चन्द्रमा के मुख प' बादल जिस तरह छाये हुए ।
अपनी तहजीबे-कदीमाना[7] प' इतराती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

एक तरफ मैं और कुछ सूखे हुए पत्तो के ढेर ।
एक तरफ टूटे हुए कच्चे हरे आमो के ढेर ।
रास्ते मे सबसे बचती, मुझसे कतराती हुई ।
गाँव की गोरी चली पनघट को कुछ गाती हुई ।

---

१ गाल, २ पाश्चात्य, ३ भारतीय सौन्दर्य, ४ अभिलाषा, ५ असमजस, ६ मुख, ७ प्राचीन सभ्यता ।

चाँदनी रातमें गंगाकी सैर

यह चांदनी रात और यह गंगा का किनारा।
ता-हद्देनजर[१] नूर[२] का बहता हुआ धारा।
पानी में लरजता[३] हुआ मासूम शरारा।[४]
हर मौज का रह-रहके यह बेचैन इशारा।
इठलायी है, बल खायी है, लहरायी है सीढी।
इस घाट पे किस नाज के साथ आयी है सीढी।

लहराती, दबे पाँव चली जाती है गंगा।
क्या जानिए क्या गाती है कुछ गाती है गंगा।
जा-जाके मेरे पास पलट आती है गंगा।
बीते है जो अफसाने[५] वह दुहराती है गंगा।
याद आया, कभी साथ मे आये थे किसीके।
हमने भी कभी नाज उठाये थे किसीके।

बारीक सुरो मे कोई गाता था यही पर।
जादू कोई नजरो से जगाता था यही पर।
दुन्या कोई वादो की बसाता था यही पर।
मुझको कोई मदहोश[६] बनाता था यही पर।
जिस जीने[७] प' बैठा था ये जीना भी वही है।
दरिया भी वही और सफीना[८] भी वही है।

---

१ दृष्टिकी चरम सीमा तक, २ प्रकाश, ३ काँपता हुआ, ४ भोली-भाली चिनगारी, भावार्थ दीपक, ५ कहानियाँ, ६ उन्मत्त, ७ सीढी, ८ नौका।

इश्क अपने जुनूँ[१] मे था तो हुस्न अपनी अदा मे ।
जलवे[२] थे नहाये महो-अंजुम[३] की जिया[४] मे ।
आती थी हँसी उनको जो इस आबोहवा मे ।
चादी के वरक उडते थे रह-रहके फिजा[५] मे ।
हम वह थे, मुहब्बत थी न शिक्वा[६] न गिला[७] था ।
तरफैन[८] की ऑखो मे फकत[९] रंगे वफा था ।

वह फूल से होट और वह अम्वाजे-तबस्सुम[१०] ।
शरमाये जिन्हे देखके चश्मे-महो-अजुम[११] ।
सीने मे वह जज्बात[१२] का पुरकैफ तलातुम[१३] ।
हर बात मे नग़मा[१४] तो हर एक लै मे तरन्नुम[१५] ।
महके हुए गेसू[१६] का महकना अरे तौबा !
मस्ती भरी नजरो का बहकना अरे तौबा !

है चॉद वही और सितारे भी वही है ।
दरिया वही बहते हुए धारे भी वही है ।
हर मौज के मासूम इशारे भी वही है ।
नजरे भी वही और नजारे भी वही है ।
हर लह्ज़ यही बढके कदम चूम रही थी ।
हम वज्द[१७] मे थे और फिजा[१८] झूम रही थी ।

●

---

१ उन्माद, २ छवियाँ, ३ चॉद-तारे, ४ ज्योति, ५ शून्य, ६-७ शिकायत, ८ दोनों ओर, ९ केवल, १० मुस्कानकी लहरे, ११ चॉद और सितारोंकी आँखे, १२ भावनाओं, १३ आनन्दमय हलचल, १४ सगीत, १५ रागनी, १६ केश-लट, १७ उन्माद, १८ वातावरण ।

गुरुदेव

जिसको अब तक न पा सका विज्ञान।
है वो बे-पंख कल्पना की उडान॥
सब तो उनको समझ नहीं सकते।
जिसका अब जैसा गुण हो वैसा ज्ञान॥
जाने कितनी शताब्दी के बाद।
आया टैगोर जैसा एक इनसान॥
उनकी एक-एक विचार-धारा में।
है छुपा राग-रंग का तूफान॥
इस तरह राग-रागनी का रचाव।
जैसे पर्वत की ऊँची-नीची चटान॥
फूटते है वहाँ-वहाँ से गीत।
टूटती है जहाँ-जहाँ से तान॥
कही साधू को मौत आयी है।
जिन्दगी ने बदल लिया है मकान॥
डूबने पर भी देश का सूरज।
जगमगाये हुए है सारा जहान॥
आज भी गुन उन्ही का गाते है।
जन, गन, मन के मीठे-मीठे गान॥
देखने मे 'रवीन्द्र' एक ऋषि।
और समझो तो पूरा हिन्दुस्तान॥

●

श्रद्धांजलि

सुब्ह की शान से मुसकराता हुआ
पूरे बगाल को जगमगाता हुआ
सबको किरनो की माला पह्नाता हुआ
घुप अँधेरो के छक्के छुडाता हुआ
ले के तारीकियो का जवाब आ गया
चलत-फिरता हुआ आफताब आ गया

जिन्दगी उसकी तल्वार भी ढाल भी
उसके पाबोस तूफाँ भी भूचाल भी
साज जैसा है वैसा ही सुर-ताल भी
रक्स मे उसका माजी भी और हाल भी
कल वतन आज दुन्या तरफदार है
तब वो भारत था अब पूरा ससार है

उनकी चितवन मे ठाकुर का सा बॉकपन
उनकी नजरो मे जो शेख़ वह बर्हमन
देवता की अदा महरिशी का चलन,
आदमीयत की तब्लीग उनका मिशन
'काबुलीवाला' कहने को उन्वान है
यह तो बगाली–काबुल पे एहसान है

साज को छेड़ते गुनगुनाते हुए
देश मे देश के गीत गाते हुए
सोयी इनसानियत को जगाते हुए
आदमीयत की शोभा बढाते हुए
ताजगी बख्श दी रंग से राग से
बज्म पर फूल बरसा दिये आग से

फूँक दी जर्रे-जर्रे मे रूहेशबाब
अपने गीतो से रग-रग मे भर दी शराब
बुझते चेहरो को दे दी नयी आबोताब
इन्क़िलाब और इतना हसी इन्किलाब
दी जिला जिन्दगी के खदोखाल को
खुद सँवरना पड़ा हुस्ने बंगाल को

बाग मे जैसे नौखेज मालन कोई
जैसे घूँघट मे शरमाये दूल्हन कोई
मन मे मुसकाये जैसे सुहागन कोई
जैसे दिखलाये रह रह के दरपन कोई
उनके शब्दो मे वो हुस्न वह बाँकपन
जैसे कच्ची कली और कुँवारी किरन

गीत सबकी मुहब्बत का गाते हुए
दिल का वीरान गोकुल बसाते हुए
एक नयी धुन मे बंसी बजाते हुए
खुद को और सबको बेखुद बनाते हुए
ले के गीताजली सामने आ गये
और आते ही ससार पर छा गये

उनकी तस्वीर से भी अया बाँकपन
चेहरा हँसता हुआ जैसे सुब्हे-वतन
सर का हर बाल यूँ जैसे रवि की किरन
फ़लसफ़ी उनके माथे की एक-एक शिकन
काबिले फ़ख्र है उनकी सज और धज
वह भी है जैसे इस दौर के पूर्वज

कम नही हुस्न से उसका बाजार भी
चित्रकार और अच्छे अदाकार भी
सोज भी साज भी, साज के तार भी
देशभगती भी है प्रेम भी प्यार भी
आत्मा ही का यह बल है यह जोर है
आज दुन्या मे टैगोर टैगोर है

जुल्फे बंगाल पर जिनका साया है आज
जिनसे हर भारती का सर ऊँचा है आज
देश-विदेश मे जिनकी चरचा है आज
कारनामा हर एक जिनका जिन्दा है आज
जिनसे दुन्या ने पायी है 'गीताजली'
उनको मेरी तरफ से भी श्रद्धाजली

●

प्रेमचन्द

बनके टूटे दिलो की सदा प्रेमचन्द ।
देश से कर गये हैं वफा प्रेमचन्द ।
जब कि पूरी जवानी प' था साम्राज ।
उस जमाने के हैं रहनुमा प्रेमचन्द ।
देखने मे शिकस्ता-सा एक साज है ।
साथ लाखो दुखे दिल की आवाज है ।

इनके अधरो प' मुस्कान चितवन प' बल ।
इनके शब्दो मे जान, इनकी भाषा सरल ।
इनकी तहरीर गगा की मोजे-रवाँ ।
इनका हर लफ्ज कागज प' जैसे कँवल ।
इनको महबूब हिन्दी भी, उर्दू भी थी ।
इनके हर फूल के साथ खुश्बू भी थी ।

मुफ्लिसी थी तो उसमे भी एक शान थी ।
कुछ न था, कुछ न होने प' भी आन थी ।
चोट खाती गयी, चोट करती गयी ।
जिन्दगी किस कदर मर्दे-मैदान थी ।
उनमें मिलती थी पुरखो की बू-वास भी ।
साँस लेता था साथ इनके इतिहास भी ।

अब वह जनता की सम्पत है धनपत नही।
वह वतन की अमानत है दौलत नही।
लाखो दिल एक हो जिससे वह प्रेम है।
दो दिलो की मुहब्बत मुहब्बत नही।
प्रेमचन्द प्रेम का अर्थ समझा गये।
बनके बादल उठे, जेह्न पर छा गये।

राह मे गिरते–पडते सँभलते हुए।
साम्राजी से तेवर बदलते हुए।
आ गये जिन्दगी के नये मोड़ पर।
मौत के रास्ते से टहलते हुए।
बनके बादल उठे, देश पर छा गये।
प्रेमरस सूखे खेतो प' बरसा गये।

फर्द था फर्द से कारवाँ बन गया।
एक था एक से एक जहाँ बन गया।
शह्र वाराणसी! देख तेरा गुबार।
उठके मेमारे हिन्दोस्ताँ बन गया।
मरनेवाले के जीने का अन्दाज देख।
देख काशी की मिट्टी का एजाज देख।

●

महाकवि निराला : दो श्रद्धांजलियाँ

अलग उसका रस्ता अलग उसकी मंजिल
निराली डगर और राही निराला
अजव सूर्य डूबा है हिन्दी जगत मे
कि डूबा तो कुछ और फैला उजाला

वह चुप है तो सवकी जबानें खुली है
है एक शोर बरपा निराला निराला
हमेशा गमकता महकता रहेगा
मुहव्वत का मन्दिर वफा का शिवाला

नही वह मगर उसका शोहरा रहेगा
वह जिन्दा था जिन्दा है जिन्दा रहेगा
मिटा देगा कितनो को इत्तिहास लेकिन
जो जीने के काबिल है जीता रहेगा

वह वहके तो वेहोशियो ने सँभाला
न आयेगा इस जर्फ का पीने वाला
कोई पा सकेगा न अव इस की मदिरा
कोई छू सकेगा न उसका प्याला

कभी जीते जो उसने झुकना न जाना
वड़ी आन वाला वडी शान वाला

जहाँ चाहा फरजानगी ने गिराना
वहाँ बढ़के दीवानगी ने सँभाला

मुबारक हो ए शहर काशी के प्रेमी
किनारे लगे आज तूफाँ के पाले
यह कहकर बहा दी है राखो तुम्हारी
कि माँ तेरी सन्तान तेरे हवाले

खटकता था आँखों मे जो खार बनकर
उसे आज दिल की कली दे रहे हैं
न लेने दिया चैन का साँस जिसको
उसे आज श्रद्धांजली दे रहे हैं

• •

हूक दिल से उठी आँख नम हो गयी
आज गंगा की एक मौज कम हो गयी

माँ तेरे साज का तार टूटा है क्या
आज आवाज मे जिन्दगी क्यो नही
क्यों है मुर्झाई जूही की एक-एक कली
आज बेला के मुँह पर हँसी क्यो नही

गीत गज इस कदर आज मद्धिम है क्यो
कैसा पैगाम गायक के नाम आ गया
शोक मे क्यो है 'आराधना' 'अर्चना'
क्या कोई 'शक्ति पूजा' के काम आ गया

होश मे लोग आने लगे वह भी कब
उसने जब खो दिये अपने होशो-हवास
मौत ने कर दिया जब निगाहो से दूर
तब कहीं लोग आये है आज उसके पास

उस ने हम को दिया जब नया रास्ता
बनके दुश्मन हमारे कदम उठ गये
तेग तो उठ न सकती थी उसके खिलाफ
उस के बरअक्स कितने कलम उठ गये

कोयलो पर अशरफी की मोहरे लगी
पारखी चुप था साहित्य संसार का
वह खरीदार पागल बनाया गया
जिसने ऊँचा किया भाव बाजार का

शब्द उसके अटल जैसे अंगद का पाँव
कल्पना में हिमाला की ऊँचाइयाँ
उसकी चुप उसकी गम्भीरता की दलील
उसके दिल मे समुन्दर की गहराइयाँ

सब को हँस-हँसके देता रहा जिन्दगी
और खुद जहर के घूँट पीता रहा
वक्त ने कर दिया साँस लेना महाल
ऐसे माहौल मे भी वह जीता रहा

जिस ने दी सबको जूही की ताजा कली
उसको मेरी तरफ से भी श्रद्धांजली

◆

गोस्वामी तुलसीदास

जिसको बिजली समझ रहे है सब
है वह कमसिन बहार का आँचल
है हरी घास पाँवो के नीचे
और सर पर है सुर्मई बादल
चू पड़ी है फुहार सावन की
जैसे छिड़के है कोई गंगाजल
है खड़े इन्तजार मे परवत
आस मे है हरे - भरे जंगल
सबके तन पर हरा दुशाला है
कौन दुनिया मे आने वाला है
फितने सोयेंगे फ़ितनासाज़ो के
जागी तकदीर एक ब्रहमन की
आत्माराम को मुबारक हो
दिन सनीचर का रात सावन की
हँस पडे एक साथ सारे फूल
हर कली मुस्कुरायी गुलशन की
देवताओं की भीड आयी है
अभिलाषाएँ ले के दर्शन को
इस तरह गुनगुना रही है हवा
जैसे सोहर सुना रही है हवा

दूज का चाँद और तीज के दिन
यह भी हुल्सी का ही मुकद्दर है
निकल आये है आज दो-दो चाँद
एक फलक पर है एक जमी पर है
है गगन का तो चाँद बदली मे
वह चमकता है जो जमी पर है।
जिसको कतरा समझ रहे थे लोग
अब वह कतरा नही समुन्दर है
सबके टूटे हुए दिलो की आस
पूरे भारत मे एक तुलसीदास

बच न सकता था धर्म का वेडा
फिर भी बीडा उठा लिया तुमने
डूब कर रामनाम की धुन मे
डूबतो को वचा लिया तुमने
कोई ठोकर तुम्हे न रोक सकी
अपनी मजिल को पा लिया तुमने
सच तो यह है कि लिखके रामायन
सबको अपना वना लिया तुमने
जाने-तहजीब हो शराफत हो
तुम अकेले ही पूरे भारत हो

वक्त की आँधियो को रोका है
हँसके आप आफतो से खेले है
हिन्दुओ का तो ख़ैर जिक्र हो क्या
ग़ैर-हिन्दू भी कितने चेले है

आपके साथ पूरा भारत है
कौन कहता है आप अकेले है
तीज तेवहार की तो जान है आप
आपसे जिन्दगी के मेले है
रामलीला जहाँ है आप भी है
आप ही तो भरतमिलाप भी है

जव समुन्दर से मिल गया कतरा
फिर वह कतरा नहीं समुन्दर है
क्या भरोसा है राम-भक्ति पर
और लहजे मे कैसा तेवर है
सर झुकेगा न ऐसे तुलसी का
मुझको नाज अपनी वन्दगी पर है
अपने तीरो-कमाँ के साथ आओ
तव झुकेगा यह सन्त का सर है
मानते सव है वह फकीर है आप
सारी दुनिया मे एक नजीर है आप

हर अदव को लगाया सीने से
सवकी भाषा के शव्द अपनाये
किसी मजहव को वुरा न कहा
सवको मिल्लत के राज समझाये
हर तरह की कली कलम से चुनी
और चुन चुन के फूल वरसाये
फूल वरसाये और ऐसे फूल
जिनमे इस देश की गमक आये

धरती माता की आर्जू तुलसी
संस्कृति की आबरू तुलसी

बात पर ध्यान दीजिएगा जरा
बात हर बात पर निकलती है
जिन्दगानी भी कुछ अजीव-सी थी
मौत भी आपकी अजीब-सी है
तीज को आये सत्मी को गये
आने जाने मे एक राज भी है
सारी दुनिया को यह बताना था
जिन्दगी सिर्फ चार दिन की है
अपने बल और अपने त्याग से आज
रागनी मिल रही है राग से आज

जिन्दगी से लिया है काम इतना
पोंछती है पसीना मौत आ के
मौत के घाट इस तरह उतरे
याद करते है घाट गंगा के
स्वर्ग की राह सबको दिखला दी
काशी नगरी से स्वर्ग मे जा के
गोस्वामी कबूल कर लीजिए
मै भी लाया हूँ फूल श्रद्धा के
वह और उनकी पवित्रता भी अटल
जैसे तुलसी के साथ गंगा जल

●

लक्ष्मीबाई

रानी झाँसीकी यादमें

चुप हुई तारीख़[1] जब आया बनारस का सवाल।
इस पुराने शह्र ने देखे हैं इतने माहो-साल[2]।
अपने पैरो पर खड़ा है कब से चुप साधे हुए
मिल नही सकती कही इस बूढ़े साधू की मिसाल।
घाट पर वह सर उठाये ऊँची-ऊँची बुर्जियाँ
करती रहती हैं जो हरदम शह्रियो की देखभाल।
जोतशी है आज भी, और ऐसे-ऐसे जोतशी
देखकर जिनको सितारे भूल जाये अपनी चाल।
क्यो न जी उट्ठे अवध की शाम के मारे हुए
जिन्दगी बिखरा रहा है सुब्हे काशी का जमाल।
बालिका एक याद आ जाती है गगा की कसम
दिल मे आ जाता है जब भी देश-भक्तो का ख़ियाल।
मुस्करा कर एक मौज उट्ठी थी अस्सी घाट से।
जिन्दगी लेकर बढी जो लक्ष्मी के ठाट से।
रास्ते मे छोडता आया है कितनी सुब्हो-शाम।
उम्र का भी काफिला[3] होता है कितना तेजगाम[4]।
लक्ष्मी घुटनो के बल चलती थी कल की बात है

---

१ इतिहास, २ मास तथा वर्ष, ३ यात्रीदल, ४ द्रुतगामी।

आज लेती है जवानी उठके बचपन का सलाम।
एक होती है जहाँ पर दो दिलो की धडकने
जिन्दगी की राह मे आ ही गया वह भी मकाम[१]।
फिरते-फिरते फिर गये नौखेज[२] अर्मानो के दिन
आ गया पैगामे रुख्सत[३] लेके शादी का पयाम।
वह बढी आगे बुजुर्गो के चरन छूती हुई
अपने कदमो मे लिये सीता का अन्दाजे-खराम[४]।
बाँकी चितवन मे लिये पुरखो का हर एक बाँकपन
जिन्दा करने जाती है अपने बडो-बूढों का नाम।
लक्ष्मी दानी तो थी ही और दानी हो गयी।
अर्जे झाँसी पर कदम रखते ही रानी हो गयी।

एक नजर मे भाँप ली हर-एक फिरंगी[५] की नजर।
तख्त पर वह, हाथ उसका कब्जए शमशीर[६] पर।
फौज के रोके रुका है जोशे-आजादी[७] कही।
बढ गया दरियाए-दिल[८] इस बाँध को भी तोडकर।
आ गया आजादिए-हिन्दोस्ताँ का जब सवाल
बन गया फौलाद का दिल और पत्थर का जिगर।
कर दिया पैगाम जारी कम्पनीवालो के नाम
कट तो सकता है मगर अब झुक नही सकता है सर
लाश पर तामीरे-आजादी[९] खड़ी होने को है
है कमरबस्ता[१०] सिपाही, तोपची सीना सिपर[११]।

---

१ स्थान, २ तरुण, ३ विदा-सन्देश, ४ विचरण भाव, ५ अँगरेज, ६ तलवारकी मुठिया, ७ स्वाधीनता-उत्साह, ८ हृदय-सिन्धु, ९ स्वाधीनताभवन, १० कटिबद्ध, ११ सीनाको ढालकी तरह ताने हुए।

शेरनी भारत की कड़की, बढ़के बिजली की तरह
क़ल्अए झाँसी पे अँग्रेजों का क़ब्ज़ा देखकर
जम गयी अपने इरादे पर हिमाला की तरह।
और उट्ठी आग की उठती-सी ज्वाला की तरह।

घन गरज तोपों की और गोलों की धाँ-धाँ धाएँ-धाएँ
शह्ह बन्दूकों का जंगल, गोलियों की ठाएँ-ठाएँ।
जिस तरफ़ देखो, उधर हद्दे-नज़र[1] तक ख़ून-ख़ून
लाश आगे, लाश पीछे, लाश दायें, लाश बायें।
उस कठिन रास्ते प' है रानी का घोड़ा गामज़न[2]
सूरमा भी एक नज़र देखे तो छक्के छूट जायें।
एक भयानक ख़ामुशी[3] हर एक तरफ़ गाती हुई
मौत का ख़ूनी अँधेरा कर रहा है साएँ-साएँ।
राजमाता की निगाहों में अँधेरा छा गया
गौसख़ाँ रुख़सत हुआ लेता हुआ सर की बलाएँ
अपना नन्हा-सा कुँवर सीने से लिपटाये हुए
है ख़ियाल इसका कि अंग्रेजों की नज़रें खा न जायें।
आ न सकती थी मगर घोड़ा उड़ा कर आ गयी।
हुक्मराँ[4] झाँसी की अब झाँसी के बाहर आ गयी।

मौत से खिलवाड़ करती, तेग़[5] चमकाती हुई
नअ़रए-हुब्बे-वतन[6] से ख़ून गरमाती हुई।
अपनी बल देने चली है अपने प्यारे देश पर
अपनी तहज़ीब[7] और अपने बल प' बल खाती हुई।

---

[1] दृष्टिकी सीमा, [2] गतिशील, [3] नीरवता, [4] शासिका, [5] तलवार, [6] देश-प्रेमका सिंहनाद, [7] सभ्यता।

वह गरजती जा रही है मस्त बादल की तरह
बढती जाती है सरो का मेह बरसाती हुई।
गोलियो की सन्सनाहट हो कि तोपो की गरज
गीत आजादी का हर एक साज पर गाती हुई।
मारती है कहकहा[1] खूनी फ़रिश्ते[2] की तरह
जालिमों के खून से शमशीर[3] नहलाती हुई।
वीरता को देखकर, गम्भीरता को देखकर
मौत आ-आकर पलट जाती है शर्माती हुई।
फत्ह[4] करके मुस्करायी हर फिरगी[5] घात पर।
मालवे की रात लेकर छा गयी गुजरात पर।

देश के सारे फ़िदाई[6] जोर दिखलाते गये
आखिरी दम तक हर एक तूफॉ से टकराते गये।
ऐसे प्यासे थे कि पानी पी गये तलवार का
ऐसे भूके थे कि हॅसकर गोलियॉ खाते गये।
जो फ़िरगी सामने आया दिया पूरा जवाब
जितना बल माथे प' देखा उतना बल खाते गये।
लक्ष्मीबाई के साथी भी बहादुर कम न थे
हर सितम[7] पर मुस्कराते झूमते गाते गये।
जिस तरह मारे कोई ठोकर सरे-गद्दार पर
इस तरह ह्यूरोज का हर हुक्म ठुकराते गये।
अपने खूने-गर्म से रख-रखके बुन्यादे-चमन
हर कदम पर गुल खिलाते फूल बरसाते गये।
जाइए कुर्बा शहीदाने वतन की आन के।
चढ गये सूली प' भी सावन का झूला जान के।

---

१ अट्टहास, २ देवता, ३ तलवार, ४ विजय, ५ अंग्रेजी, ६ बलिदानी, ७ अत्याचार।

याद तो होगा तुझे ऐ सर-ज़मीने ग्वालियर
आयी थी एक शेरनी जब छोड़ कर अपनी कछार।
कर रही थी मौत का स्वागत अनोखी शान से।
साथ अपने लेके अपनी बेवगी[1] की यादगार[2]।
जिस के दम के साथ दिल टूटा था हिन्दुस्तान का
जान जिस देवी ने दी लडते हुए मर्दानावार[3]।
कहती है जिसकी समाधी सर उठाकर आज भी
मैं हूँ काशी की अमानत[4], मैं हूँ झाँसी का वकार[5]।
कह रही थी देखकर हँसते हुए जख्मों के फूल
वाह रे रंगे-गुलिस्ताँ[6], वाह रे रंगे-बहार।
अपनी ही तलवार का आईना रखकर सामने
अपने हाथो अपने बहते खून से करके सिंगार।
ओढकर चुँदरी लहू की फिर से दुल्हन बन गयी।
जग के मैदान मे बेवा सुहागिन बन गयी।

मेरे प्यारे देश तेरे माह-पारो[7] पर सलाम
तेरी धरती के चमकते चाँद-तारो पर सलाम।
जोश से आगे बढे जो हिन्द सागर की तरह
उन जवानों के लहू की तेज धारो पर सलाम।
जिन के दम से काफिले[8] का रुख सूए-मजिल[9] हुआ
काफिलेवालो का उन मजिल के मारो पर सलाम।
ज़ख्म पर अपने जो जख्मों की तरह हँसते रहे
मौसमे-गुल[10] भेजता है उन बहारो पर सलाम।

---

१ वैधव्य, २ स्मारक, ३ वीर पुरुषोंकी भाँति, ४ थाती, ५ मान, ६ पुष्पोद्यान, ७ चाँदके टुकडों, ८ यात्री दल, ९ मंजिलकी ओर, १० पुष्प-ऋतु।

गोलियाँ खा-खाके सीने जिनके छलनी हो गये
उन वफादारो प' उन सीना-फिगारो[1] पर सलाम।
आज भी आती है जिनकी खाक से बूए-वफ़ा[2]
उन लुहू की वादियो[3], उन लालाजारो[4] पर सलाम।
ऐ 'नजीर' ! उस खून मे डूबो जवानी पर सलाम।
जो अमर है उस अमिट झाँसी की रानी पर सलाम।

•

---

[1] विदीर्ण-वक्ष अर्थात् दुःखाकुल, [2] प्रेम-सुगन्ध, [3] मैदानों, [4] पुष्प-उद्यानों।

महाकवि कालिदास

हर हसीन मजर[1] की आड मे गुजर उनका
हँस पडे उधर जलवे[2], रुख हुआ जिधर उनका।
उनको सबसे है निस्बत[3], वह है शाइरे फितरत[4]
हर कली मे दिल उनका, फूल मे जिगर उनका।
हर हवा के झोके मे कालिदास का कासिद[5]
हर पहाड का झरना एक नामाबर[6] उनका।
उनका रथ हर एक पथ पर, वह खयाल के रथ पर
हर जगह कियाम[7] उनका, हर तरफ सफर उनका

कालिदास तन्हा[8] भी और पूरी महफिल[9] भी
राहरव[10] भी, रहबर[11] भी, रास्ता भी, मजिल भी।
हर विचार-धारा मे धडकने है भारत की
मादरे वतन[12] के वह है दिमाग भी दिल भी।
हो तरग सरिता की या उमग दरिया की
सबसे वह अलग भी है और सबमे शामिल भी।
घन गरज के वह राजा, मेघदूत है उनका
वह तो खुद ही तूफाँ है और खुद ही साहिल[13] भी।

---

१ दृश्य, २ छवियाँ, ३ सम्बन्ध, ४ प्रकृति-कवि, ५ सन्देश-वाहक, ६ पत्रवाहक, ७ निवास, ८ अकेला, ९ सभा, १० पथिक, ११ पथप्रदर्शक, १२ मातृभूमि, १३ किनारा।

कालिदास फितरत[1] की वह हसीन अँगडाई ।
जिस प' नाज करती है हर चमन की रअ़नाई[2]
कुछ अ़याँ[3] हिमाला से, कुछ अयाँ हिमाचल से
कल्पना की ऊँचाई, कल्पना की गहराई ।
हर हसीन मुस्काहट मौज उनके मन की है
हर कली के घूँघट पर उनकी कार-फरमाई[4] ।
हुस्न देके फूलो को, आँख देके भौरो को
आप ही तमाशा है, आप ही तमाशाई ।

कालिदास का दिल क्या, दिल नही दफीना[5] है ।
जिसमे राजे फितरत[6] है वह कवी का सीना है ।
कालिदास पर लिखना मेरे बस से वाहर था ।
कल्पना के माथे पर अव तलक पसीना है ।
कद्र जो करे दिन की दिन तो है उसी का दिन
जो लिखे हर एक रुत पर, उसका हर महीना है ।
शाइरो की दुनिया है दायरा[7] अँगूठी का
कालिदास अँगूठी का वे-वहा[8] नगीना है ।

छा गये है दुनिया पर वनके दर्द का वादल ।
आँसुओं की भाषा मे लिख गये है शाकुन्तल ।
आश्रम की वीरानी,[9] गम और इतना तूफानी
काँप-काप उठे पंछी, चीख़-चीख उठा जंगल ।

---

१ प्रकृति, २ लालित्य, ३ प्रकट, ४ अधिकार, ५ धरतीमें गडा धन, ६ प्रकृति-रहस्य, ७ वृत्त-गोलाई, ८ अमूल्य, ९ निर्जनता ।

एक शकुन्तला का गम और सबकी आँखें नम
फूटकर ऋषी रोये, रोये दुनिया के दल।
लोग पढते जाते हैं, होश उड़ते जाते हैं
इश्क की कहानी क्या जो बना न दे पागल।
सर झुकाना पड़ता है एक-एक उपमा पर।
कालिदास छाये हैं आज अदब की दुनिया पर।

•

देश-सिंगार

आओ अम्वाजे-वहार[1] की तरह बल खाये।
कभी कौसर[2] कभी गंगा की तरह लहराये।
मिलके इस तर्ह मुहब्बत के तराने गाये।
झूमकर मस्जिदो-मन्दिर भी गले मिल जाये।
आड मज्हव की न लेकर कोई वेदाद[3] करे।
बन्दिगी यूँ करे हम-तुम कि ख़ुदा याद करे।
क्या नयी चीज कोई शैख[4] की दस्तार[5] मे है?
वही रिश्ता तो है उसमे भी जो जुन्नार[6] मे है।
यह लड़ाई तो खरीदार-ख़रीदार मे है।
नुक्स[7] जल्वे[8] मे नही, तालिबे-दीदार[9] मे है।
जल्वा यूँ रक्स[10] करे जल्वानुमा[11] झूम उठे।
वह मुहब्बत की सदा[12] दो कि ख़ुदा झूम उठे।
देश का हुस्न जमाने को दिखाना है अभी।
चाँद तारो को भी हैरान बनाना है अभी।
माँग चोटी से हिमाला को सजाना हे अभी।
शम्अ कैलाश के पर्वत प' जलाना है अभी।
शम्अ वह शम्अ जो हर घर मे उजाला कर दे।
सारी दुनिया का अँधेरा तहोबाला[13] कर दे।

---

१ वहारकी लहरे, २ स्वर्गकी एक सरिता, ३ अत्याचार, ४ मौलवी, ५ पगडी, ६ जनेऊ, ७ त्रुटि, ८ छवि, ९ दर्शनार्थी, १० नृत्य, ११ छवि-प्रदर्शक, १२ पुकार, १३ नष्ट-भ्रष्ट।

कितने पर्वत हैं जो सर अपना झुकायेंगे अभी ।
खेत कितने हैं जो बालों को बिछायेंगे अभी ।
कितने दरिया तेरे पैर आके धुलायेंगे अभी ।
कितने झरने तुझे आईना दिखायेंगे अभी ।
ऐ मेरे प्यारे वतन तुझको सँवरना होगा ।
तू हसीं[1] है तुझे एक रोज निखरना होगा ।

हर नदी एक हसीना[2] की तरह बल खाये ।
हर रविश रेशमी साड़ी की तरह लहराये ।
हर डगर चौथी की दुलहन की तरह शर्माये ।
देखे नजरें तो मनाजिर[3] को हया[4] आ जाये ।
अपनी धरती की जवानी अभी भरपूर नहीं ।
माँग है माँग मे हँसता हुआ सेंदूर नहीं ।

सर तेरे सामने सरकश[5] को झुकाना होगा ।
उठके तूफाँ को तेरा नाज उठाना होगा ।
तेरी आवाज मे आवाज मिलाना होगा ।
हादिसों[6] को भी तेरे साज प' गाना होगा ।
जिन्दगी आयेगी, आजादिए कामिल[7] की कसम ।
मुश्किलें घटने लगीं बढ़ते हुए दिल की कसम ।

एक दिन किस्मते-हर-अह्ले-वफा[8] बदलेगी ।
दिल बुझे जाते हैं जिससे वह हवा बदलेगी ।

---

[1] रूपवान-सुन्दर, [2] रूपसी, [3] दृश्यों, [4] लज्जा, [5] उद्दण्ड, [6] दुर्घटनाओं, [7] पूर्ण स्वाधीनता, [8] प्रेमकी साधना करनेवालोंका भाग्य।

जिससे शर्मिन्दा वतन है वह अदा बदलेगी।
ऐ 'नजीर' एक-न-एक रोज फिजा[1] बदलेगी।
सबके चेह्रे प' हँसी आयेगी, नूर[2] आयेगा।
आयेगा, आयेगा, वह दिन भी जुरूर आयेगा।

●

---

[1] वातावरण, [2] ज्योति, तेज।

ताड़ मद्द ज़िल्लुहू[1]

रात का गम्भीर सम्राट और दिन का मन्त्री ।
यूँ खडा है जिस तरह से बैंक का एक सन्त्री ।
मेरे अच्छे ताड मैं तेरी बलन्दी के निसार[2] ।
हर गजर[3] तेरी रिआया तू है सबका ताजदार[4] ।

बालेपन से तू खडा होता है अपने पैर पर ।
यह हकीकत है कोई तअ्नो[5] नही है गैर पर ।
तेरे रुख़[6] पर पडती है खुर्शीद[7] की पहली किरन ।
तुझ प' सद्के[8] रोज होता है सहर[9] का बाँकपन ।

आसमाँ से तू करीब और आसमाँ तुझसे करीब ।
है खुदाए दो जहाँ का आसताँ[10] तुझसे करीब ।
तेरे पत्ते पर गुमाँ[11] मुझको परे-जिब्रील[12] का ।
तेरी लम्बाई प' धोका सूरे-इस्राफील का[13] ।

---

१ अरबीका आशिष-वाक्य अर्थात् 'उसकी छाँव दीर्घ हो, २ निछावर, ३ वृक्ष, ४ शासक, ५ व्यङ्ग्य, ६ मुख, ७ सूर्य, ८ बलि, ९ प्रभात, १० स्थान-ड्योढ़ी, ११ भ्रम, १२ जिब्रील नामक फरिश्तेके पख, १३ इस्लामी विश्वासके अनुसार इस्राफील फरिश्ता प्रलयके दिन एक सूर (नरसिंहा) बजायेंगे जिसकी भयानक आवाजसे समस्त प्राणी मर जायेंगे ।

तू जवाँ लाठी है वूढे आसमाँ के वास्ते।
एक सुतूने वा-महल[1] वज्मे-जहाँ[2] के वास्ते।
सन्नियासी है, कोई जोगी है, आखिर क्या है तू।
जिस कदर वेलाग है उतना ही बेपर्वा है तू।

साहिबे-दस्तारे-फितरत[3] मालिके-ताजे-शही[4]।
सर की लेते है बलाएँ माह[5] भी खुर्शीद[6] भी।
मस्त अपने हाल मे, पगडी मे दीवाना है तू।
यह नही खुलता कि सूफी[7] है कि मौलाना है तू।

जर्फ[8] तेरा सारे कमजर्फो की खातिर पन्द[9] है।
तेरे हर कूजे[10] के अन्दर एक दरिया वन्द है।
तेरी सहवा[11] आतशी[12] भी और सीमावी[13] भी है।
यानी दिन की आफतावी[14] शव[15] की महतावी[16] भी है।

जिसकी सावित है मसीहाई[17] वो ईसादम[18] है तू।
कितने जख्मी फेफडो के वास्ते मर्हम है तू।

---

१ उपयुक्त स्थानपर स्थित स्तम्भ, २ ससार-सभा, ३ जिसको प्रकृतिने श्रेष्ठताकी पगडी वाँधी है, ४ राजमुकुटधारी, ५ चाँद, ६ सूर्य, ७ सन्त, ८ समाई, ९ उपदेश, १० मिट्टीका छोटा पानदान, ११ सुरा, १२ आग्नेय, १३ पारदीय, १४ सौर्य, १५ रात्रि, १६ चन्द्र, १७ हजरत ईसामसीह अन्धे, कोढी, अपाहिज आदि-रोगियोंपर अपना हाथ फेरकर उन्हें स्वस्थ कर देते थे तथा मृतक व्यक्तियोंको फूँक मारकर पुनर्जीवित कर देते थे, यहाँ उनके इसी गुणकी ओर सकेत है, १८ ईसा जैसी फूँकवाला।

जिन्दगी के बख्शनेवाले[1] मसीहा अस्सलाम[2]।
अस्सलाम ऐ बेरी-बेरी के मदावा[3] अस्सलाम।

आनेवाली आँधियो के ऐ गवाहे मोअ्तबर[4]!
हर हवाई हादिसा[5] गाता है तेरे साज पर!
अपनी ऊँचाई का झण्डा गाडता रहता है तू।
इस बलन्दी से भी सबको ताडता रहता है तू।

तू अकेला और टक्कर तेरी हर आँधी के साथ।
हर बला का सामना और इतनी पामर्दी[6] के साथ।
सामना तोपो का तूने तोप बन-बनकर किया।
मअ्र्का[7] जो सर न हो सकता था तूने सर किया।

तूने अँग्रेजो को सर देकर किया था सुर्खरू[8]।
तूने रख ली जग मे बर्तानिया की आबरू।
मर्द फिर मर्दे-जरी[9], मारे हुए मैदान भी।
तू सिपाही भी, सिपहसालार[10] भी सुलतान[11] भी।

दादे-इस्तिक्लाल[12] देता हूँ जवाहिरलाल को।
जिसने अपनाया है तेरे पाये इस्तिक्लाल[13] को।
अम्ने-आलम[14] के एरादे से पलट सकते नहीं।
आँधियो! हट जाओ, इनके पाँव हट सकते नही।

●

---

१ जीवनदायक, २ प्रणाम, ३ चिकित्सा, ४ विश्वसनीय साक्षी, ५ दुर्घटना, ६ दृढ़ता, ७ संग्राम, ८ श्रेयवान्, ९ वीर पुरुष, १० सेनापति, ११ सम्राट् १२ स्वतन्त्रता की बधाई १३ दृढ़ पग, १४ विश्व-शान्ति।

दौड़ा दी मुहब्बत नस-नसमें बंसीके बजानवालेने

अब दौरे मुसीबत जायेगा बतला दिया आनेवाले ने।
संकट मे लिया है छुपके जनम संकट से छुड़ानेवाले ने॥
संसार के मन को मोह लिया एक गाय चरानेवाले ने।
दौड़ा दो मुहब्बत नस-नस मे बंसी के वजानेवाले ने॥

भादो के बरसते बादल मे फैला हुआ सुन्दर उजयारा।
हर देखनेवाला हैराँ है क्या कर दिया आनेवाले ने॥
आजादी मिली हर कैदी को हर पाँव की बेडी टूट गयी।
यह किसको उतारा दुन्या मे दुन्या के वनानेवाले ने॥

रुख़ फेरके तिरछी चितवन से दिन फेर दिये मज्लूमो के।
दुन्या की उडायी खुलके हँसी दुन्या के बनानेवाले ने।
फिर 'चीर हरन' के वाद कोई नंगी नही उतरी जमुना मे।
हर एक का पर्दा रक्खा है उस पर्दा उठानेवाले ने॥

तूफान बुझाने को जो उठे दिल बैठ गये तूफानों के।
वह दीप जलाया आँधी मे एक दीप जलानेवाले ने॥
घनश्याम! तुम्हारे बल पर हम यह अव भी गरजकर कहते है।
आजाद किया इनसानो को एक जेल मे आनेवाले ने॥

घर तेरा 'नजीर' आवाद रहे क्या कोई उजाडेगा उसको।
खुद आके बसाया हो जिसको गोकुल के वसानेवाले ने॥

◆

गंगा-तटपर साँझ-सवेरा

वह डूवा सूरज वह दिन ने झुककर वढा दिया रोशनी का डेरा।
वह रखके काँधे प' काली कमली हर एक तरफ से उठा अँधेरा।
उदासियाँ वढ़के चार जानिव लगाये जाती हैं अपना फेरा।
लुटेगा अव साँझ का भी ज़ेवर है घात में रात का लुटेरा।
समय ने करवट वदल-वदलकर जो सूनी कर दी हैं सारी राहें।
तो साँस ले-लेके लम्वी-लम्वी हवाएँ भरने लगी हैं आहें।

ये सुरमई पहने आयी रजनी नजर से छिपने लगा किनारा।
है दूर विजली के चन्द खम्वे, निगाह को कैसे दें सहारा।
इधर ख़मोशी,[1] उधर ख़मोशी, ख़मोश[2] मौजें, ख़मोश धारा।
पलटके आयी पुकार मेरी किसी को मैंने अगर पुकारा।
मैं अपने दिल को उभारता हूँ, मगर समाँ[3] दिल डुवो रहा है।
पडा है गंगा के पार रेता कि अजदहा कोई सो रहा है।

वह चमचमाते कलस का आलम,[4] वह सर उठाये-उठाये मन्दर।
वह इतने ऊँचे कि जिन प' अपनी नजर उठाते हुए उठे सर।
है कान में कुछ मधुर सदाएँ[5], नजर में शैन आर्ती का मंजर[6]।
पवित्रता की वह मौज जिससे अँधेरा दिल हो उठे उजागर।
इधर दवे पाँव नींद आयी, गयी वह गंगा की वेकरारी।
किवाड मन्दिर के वन्द करके अभी-अभी सो गया पुजारी।

---

१ नीरवता, २ मौन, ३ दृश्य, ४ अवस्था, ५ आवाजें, ६ दृश्य।

बुझी-बुझी-सी दिखाई देने लगी है जलती हुई चिताएँ।
दबी-दबी-सी है अग्नि ज्वाला, है सर्द-सी मौत की सभाएँ[1]।
फिजाओं[2] मे टूटकर गगन से यह गिरती पड़ती है तारिकाएँ।
कि साधनालोक तोडने को उतरती आती है अपसराएँ।[3]
वह काला-काला-सा नाग जैसा हर एक तरफ झूमता अँधेरा।
समय की वह साँए-साँए जैसे बजाये तुमडी कोई सँपेरा।

कभी जो चुप-चाप तुमको देखा कुछ और भी प्यार से पुकारा।
जहाँ भी गमगीन[4] मुझको पाया वहाँ बहा दी हँसी की धारा।
अगर कभी आस दिल की टूटी लहर-लहर ने दिया सहारा।
भरी है ममता से माँ की गोदी, नही है गंगा का यह किनारा।
जो थपकियाँ मौज दे रही है तो लोरियाँ भी सुना रही है।
और इस तरह से कि जैसे माँ अपने बालको को सुला रही है।

है रात बाकी हवा के झोके अभी से कुछ गुनगुना रहे है।
अगर कथा कह रहे है तुल्सी, कबीर दोहे सुना रहे है।
अमर है वह सन्त और साधू जो मरके भी याद आ रहे है।
जो काशी नगरी से उठ चुके है वह मन की नगरी बसा रहे है।
यह घाट तुलसी के नाम से है यही वह करते थे जाप देखो।
जहाँ प' तुल्सी, वही प' गंगा, पवित्रता का मिलाप देखो।

---

१ बारह बजे रातके बाद कोई नयी चिता नही ली जाती, जो चिता जलती होती है वही जलती रहती है। यहाँ उसीको तरफ इशारा है। २ शून्य, ३ साधना-लोक तोड़नेका इशारा विश्वामित्रकी इबादतकी ओर है जिसको तोडनेके लिए एक अप्सरा आयी थी, ४ मलिन।

है रात अब कूच करनेवाली, सब अपने खेमे बढा रहे हैं।
वह जिनके दम से थी जगमगाहट उन्ही के दम टूटे जा रहे हैं।
निशा की शोभा बढानेवाले, सभाएँ अपनी बढा रहे हैं।
बहुत-से डूबे, बहुत-से टूटे, बचे-खुचे झिलमिला रहे हैं।
यह कौन पर्दे मे छुपके तारो को मात पर मात दे रहा है।
यह हिचकियाँ रात ले रही है कि साँस परभात ले रहा है।

किये है यह दीप-दान किसने ठहर-ठहरकर मचल रहे हैं।
है रोशनी के जिगर के टुकडे हवा से तेवर बदल रहे हैं।
नही-नही, यह दिये नही है जो बहते पानी प' जल रहे हैं।
गगन से तारे उतर-उतरकर लहर-लहर पर टहल रहे हैं।
दिये की लौ सहमी जा रही है, हवा का झोका लपक रहा है।
हर एक दिये मे है दिल किसी का ठहर-ठहरकर धडक रहा है।

मिला है गंगा का जल जो निर्मल उतरके ऊषा नहा रही है।
हवा है या रागिनी है कोई टहलके बीना बजा रही है।
अँधेरे करते है साफ रस्ता, सवारी सूरज की आ रही है।
किरन-किरन अब कलस-कलस को सुनहरी माला पिन्हा रही है।
हुई है कितनी हसीन घटना नजर की दुनिया सँवर रही है।
किरन चढी थी जो बनके माला वह धूप बनके उतर रही है।

हर एक परायी नजर से अपनी नजर बचाकर गुज़र रही है।
ये देवियाँ है मेरे नगर को जो सीढियो से उतर रही है।
घरो की परियाँ बदन समेटे उतरके अश्नान[1] कर रही है।
जो इनमे अश्नान कर चुकी है किनारे हटके सँवर रही है।

---

[1] स्नान।

है देखनेवाले की नजर मे यहाँ की मस्ती यहॉ का यौवन ।
कि दृष्टि जैसी है सृष्टि वैसी, खियाल जैसा हो वैसा दर्शन ।

कही प' गुजरात की है परियाँ कही प' मर्वाड की निशानी ।
वह सिन्ध का हुस्ने-बे-तकल्लफ[1], वह शोख पंजाब की जवानी ।
खुले हुए केश की लटों में महकते बंगाल की कहानी ।
यह घाट है सामने नजर के कि देवताओं की राजधानी ।
न जाने कितनों ने देश छोड़े है अपनी मुक्ति की जुस्तजू मे ।
यहाँ प' आये है जान लेकर यहाँ प' मरने की आर्जू में ।

यहॉ खडी हो के हर इमारत नसीब अपना जगा रही है ।
वह जिसकी हालत बिगड़ चुकी है वहअपनी बिगडी बना रही है ।
नये-नये घाट बन रहे है, नवीनता मुस्कुरा रही है ।
हर आर्जू[2] जैसे रक़्स[3] मे है निगाह मंगल मना रही है ।
यहॉ मुहब्बत की छांह देखो, यहाँ मुहब्बत की धूप देखो ।
यहॉ का आनन्द लेने वालो, यहाँ का सम्पूर्ण रूप देखो ।

पहन के आबेरवॉ की साडी रवाँ है सीमाबवार[4] गंगा ।
रवॉ है मौजे कि माँ के दिल की तरह से है बेकरार[5] गंगा ।
वो छूत हो या अछूत सबका उठाके चलती है भार गंगा ।
यहॉ नही ऊँच नीच कोई, उतारे है सबको पार गंगा ।
'नजीर' अन्तर नही किसी मे, सब अपनी माता के है दुलारे ।
यहॉ कोई अजनबी नही है न इस किनारे न उस किनारे ।

•

---

१ संकोचहीन सौन्दर्य, २ कामना, ३ नृत्य, ४ पारेकी भाँति, ५ आकुल-व्याकुल ।

दीवाली

मेरी साँसो को गीत और आत्मा को साज देती है
ये दीवाली है सबको जीने का अन्दाज देती है
हृदय के द्वार पर रह-रहके देता है कोई दस्तक
बराबर ज़िन्दगी आवाज पर आवाज देती है
सिमटता है अँधेरा पाँव फैलाती है दीवाली
हँसाये जाती है रजनी हँसे जाती है दीवाली

कतारे देखता हूँ चलते-फिरते माहपारों की,
घटाएँ आँचलो की और बरखा है सितारो की
वो काले-काले गेसू सुर्ख़ होट और फूल से आरिज
नगर मे हर तरफ परियाँ टहलती है बहारो की
निगाहो का मुकद्दर आके चमकाती है दीवाली
पहनकर दीपमाला नाज फरमाती है दीवाली

उजाले का जमाना है उजाले की जवानी है,
ये हँसती जगमगाती रात सब रातो की रानी है
वही दुन्या है लेकिन हुस्न देखो आज दुन्या का
है जब तक रात बाकी कह नही सकते कि फानी है
वो जीवन आज की रात आके बरसाती है दीवाली
पसीना मौत के माथे प' छलकाती है दीवाली

सभी के दीप सुन्दर है हमारे क्या तुम्हारे क्या
उजाला हर तरफ है इस किनारे उस किनारे क्या

गगन की जगमगाहट पड़ गयी है आज मद्धिम क्यो
मुँडेरो और छज्जो पर उतर आये है तारे क्यों
हजारो साल गुजरे फिर भी जब आती है दीवाली
महल हो चाहे कुटिया सब प' छा जाती है दीवाली

उसी दिन द्रौपदी ने कृष्ण को भाई बनाया था
वचन के देने वाले ने वचन अपना निभाया था
जनम दिन लक्ष्मी का है भला इस दिन का क्या कहना
यही वह दिन है जिसने राम को राजा बनाया था
कई इतिहास को एक साथ दुहराती है दीवाली
मुहब्बत पर विजय के फूल बरसाती है दीवाली

गले मे हार फूलों का, चरन मे दीपमालाएँ
मुकुट सर पर, मुकुट पर जिन्दगी की रूप-रेखाएँ।
लिये है कर मे मंगल घट न क्यो घट-घट प' छा जाये
अगर परतौ पडे मुर्दादिलो पर वह भी जी जाये
अजब अन्दाज से रह-रह के मुस्काती है दीवाली
मुहब्बत की लहर नस-नस मे दौड़ाती है दीवाली

तुम्हारा हूँ तुम अपनी बात मुझसे क्यो छिपाते हो
मुझे मालूम है जिसके लिए चक्कर लगाते हो
बनारस के हो, तुमको चाहिए त्योहार घर करना
बुतो को छोड़ कर तुम क्यो इलाहाबाद जाते हो
न जाओ ऐसे मे बाहर 'नजीर' आती है दीवाली
ये काशी है यही तो रंग दिखलाती है दीवाली

●

बसन्त

तमन्नाओ के गुल खिलाने के दिन है।
ये कलियो के घूँघट उठाने के दिन है॥
निगाहो से पीने पिलाने के दिन है।
यही रँगने रग जाने के दिन है॥
ये केश और मुखडे सजाने के दिन है।
ठिकाने को राते ठिकाने के दिन है॥
निगाहे-मुहव्वत उठाने के दिन है।
करीने से विजली गिराने के दिन है॥
यही आँचलो के सरकने का मौसम।
यही हुस्न के सर उठाने के दिन है॥
मुवारक हो लहराके चलने की यह रुत।
मुहव्वत की गंगा वहाने के दिन है॥
जरा वढके ऐ मस्त वालो की मलका।
घटा वनके दुन्या प' छाने के दिन है॥
उठाओ न वोतल उठाने की जहमत।
कि यह वे-पिये झूम जाने के दिन है॥
ये दौरे जवानी है, दौरे जवानी।
यही वे-पिये लड़खडाने के दिन है॥
कही रग से राग अलग हो न जाये।
गवय्ये सलीके से गाने के दिन है॥

बहार, ऐ हरे रंग की शाल वाली !
खिला गुल, तेरे गुल खिलाने के दिन है ।।
बसन्ती हवाएँ बसन्ती फिजाऍ ।
यही रंग मे डूब जाने के दिन हैं ।।
गले मिल रही है खडो हो के फसले ।
मिलो दिल से यह दिल मिलाने के दिन है ।।
पवन तेरे बंसी बजाने को रुत है ।
जमाने तेरे झूम जानें के दिन हैं ।।
'नजीर' आओ मिल-जुल के 'मगले'[1] मनाये ।
ये पानी प' गाने-बजाने के दिन है ।।

◆

---

[1] बुढवा मंगल बनारसका वह शानदार त्योहार जो बजरों और किश्तियोंपर मनाया जाता था ।

मिलो गलेसे गले वार-बार होलीमें

कही पडे न मुहब्बत की मार होली मे।
अदा से प्रेम करो, दिल से प्यार होली मे!
गले मे डाल दो बाहो का हार होली मे।
उतारो एक बरस का ख़ुमार होली मे।
मिलो गले से गले वार-वार होली मे।

लगाके आग बढ़ी आगे रात की जोगिन।
नये लिवास मे आयी है सुब्ह की मालिन।
नजर-नजर है कुँवारी अदा-अदा है कमसिन।
है रग-रग से सब रंगवार होली मे।
मिलो गले से गले वार-वार होली मे।

हवा हर एक को चल-फिर के गुदगुदाती है।
नही जो हँसते उन्हे छेडकर हँसाती है।
हया गुलो को तो कलियो को शर्म आती है।
वढाओ वढके चमन का वकार[1] होली मे।
मिलो गले से गले वार-वार होली मे।

ये किसने रंग भरा हर कली की प्याली मे।
गुलाल रख दिया किसने गुलो की थाली मे।
कहाँ को मस्ती है मालिन मे और माली मे।
यही है सारे चमन की पुकार होली मे।
मिलो गले से गले बार-वार होली मे।

---

[1] मान।

तुम्ही से फूल चमन के तुम्ही से फुलवारी ।
सजाये जाओ दिलो के गुलाव की क्यारी ।
चलाये जाओ नशीली नजर से पिचकारी ।
लुटाये जाओ बरावर बहार होली मे ।
मिलो गले से गले वार-बार होली मे ।

मिले हो वारह महीने की देख-भाल के वाद ।
यह दिन सितारे दिखाते है कितनी चाल के वाद ।
यह दिन गया तो फिर आयेगा एक साल के बाद ।
निगाहे करते चलो चार[1] यार होली मे ।
मिलो गले से गले बार-बार होली मे ।

बुराई आज न ऐसे रहे न वैसे रहे ।
सफ़ाई दिल मे रहे आज चाहे जैसे रहे ।
गुबार दिल मे किसी के रहे तो कैसे रहे ।
अबीर उडती है वनकर गुवार होली मे ।
मिलो गले से गले वार-वार होली मे ।

हया[2] मे डूबनेवाले भी आज उभरते है ।
हसीन-शोखियाँ करते हुए गुजरते है ।
जो चोट से कभी बचते थे चोट करते है ।
हरन भी खेल रहे है शिकार होली मे ।
मिलो गले से गले वार-वार होली मे ।

---

[1] दृष्टिसे दृष्टि मिलाते चलो, [2] लज्जा-सकोच ।

कदम-कदम प' खुशी के कँवल खिलाके चलो।
कदम के साथ 'नजीर' आज दिल मिलाके चलो।
बुझे-बुझे-से हो क्यो दिल को जगमगाके चलो।
नजर से दूर करो अन्धकार होली मे।
मिलो गले से गले बार-बार होली मे।

◆

ग़ज़ल

(१)

और तो कुछ न हुआ पीके बहक जाने से ।
बात मैखाने[1] की बाहर गयी मैखाने से ।
कोई पैमाना[2] लडा जब किसी पैमाने से ।
हमने समझा कि पुकारा गया मैखाने से ।

दो निगाहों का जवानी मे है ऐसा मिलना ।
जैसे दीवाने का मिलना किसी दीवाने से ।
दिल की दुनिया मे सवेरा-सा नजर आता है ।
हसरतें[3] जाग उठी है तेरे आ जाने से ।

दिल की उजडी हुई हालत प' न जाये कोई ।
शह्र आबाद हुए है इसी वीराने[4] से ।
जल्वागर[5] आज उन्हे भी सरे-मिम्बर[6] देखा ।
जिनको देखा था निकलते हुए मैखाने से ।

दरो-दीवार प' क़ब्जा है उदासी का 'नजीर' !
घर मेरा घर न रहा उनके चले जाने से ।

●

---

१ मद्यशाला, २ मद्यपात्र, ३ कामनाएँ, ४ निर्जन स्थान, ५ शोभावान्, ६ धर्मोपदेशकके आसनपर ।

(२)

है मस्त सावन की शामे-रंगी, शराब के दौर चल रहे हैं।
फ़लक[1] प' डूबा जो एक सूरज हजार सूरज निकल रहे हैं।
वो मस्त फ़ित्ने[2] जो दोस्त की मस्त-मस्त आँखो मे पल रहे हैं।
हमे सँभलने न देंगे फिर भी बकद्रे-हिम्मत[3] सँभल रहे हैं।

सहर[4] हुई रात-भर के आँसू पलक तक आकर मचल रहे हैं।
फलक के सारे सितारे डूबे, मेरे सितारे निकल रहे हैं।
है चश्मे-साकी[5] जो कार-फ़र्मा,[6] अजीब शै[7] बन गयी है सहबा[8]।
जमी प' करवट बदलने वाले फलक[9] से तेवर बदल रहे हैं।

हुई है सारी जमीन जलथल, न हमको कल है न शैख[10] को कल।
हमारी तौबा[11] फिसल रही है तो पाँव उनके फिसल रहे हैं।
अजाब के बन्द हैं दरीचे[12] खुला हुआ मैकदे का दर[13] है।
फलक प' बादल टहल रहा है जमी प' कुछ रिन्द[14] चल रहे हैं।

'नजीर' उनकी नशीली आँखो मे सुर्ख डोरे नही खरामाँ[15]।
शराबखानो मे दो शराबी नयी अदा से टहल रहे हैं।

●

---

१ आकाश, २ विपत्तियाँ, ३ यथा-साहस, ४ प्रभात, ५ शराब पिलानेवालेके नयन, ६ कार्यशील, ७ अद्भुत वस्तु, ८ सुरा, ९ आकाश, १० मौलवी-धर्मगुरु, ११ मदिरात्यागकी प्रतिज्ञा, १२ वातायन, १३ द्वार, १४ मदिरा-प्रेमी, १५ डोलते हुए।

(३)

जिसकी नज़रो मे हो काँटा वो बियाबाँ[1] समझे ।
हम गुलिस्ताँ[2] को बहर रंग गुलिस्ताँ समझे ।
दास्ताँ[3] कुछ हो मुहब्बत ही को उन्वाँ[4] समझे ।
गमे-दौराँ[5] को भी जुज्वे-गमे-जानाँ[6] समझे ।

हमसे एक जुर्म हुआ वाएजे-दौरे-हाजिर[7] !
जुर्म यह जुर्म कि हम आपको इनसाँ समझे ।
दख्ल-अन्दाज[8] न हो छोड दे ऐ दस्ते-जुनूँ[9] !
जेब से जेब, गरेबाँ[10] से गरेबाँ समझे ।

उनको गमगीन[11] न देखेगे हम अपने होते ।
जो समझना हो वो हमसे गमे-दौराँ समझे ।
आपको आपके गेसूए-परीशाँ[12] की कसम !
आप सिर्फ आप मेरा हाल-परीशाँ[13] समझे ।

उठके कुछ अह्ले-जुनूँ[14] कर गये अपनी वाली ।
बह्र[15] को बह्र न तूफाँ ही को तूफाँ समझे ।
हमसे मिलने के लिए आये बहुत लोग 'नजीर' ।
दर्दे-इनसाँ[16] को जो समझा उसे इनसाँ समझे ।

●

---

[1] वन, [2] उद्यान, [3] कथा, [4] शीर्षक, [5] कालचक्रकी चिन्ता, [6] प्रेम चिन्ताका भाग, [7] वर्त्तमान कालके धर्मोपदेशक, [8] बाधक, [9] उन्मादका हाथ, [10] कुर्त्तेके गलेका चाक, [11] चिन्तित, [12] बिखरे हुए केश, [13] विह्वल दशा, [14] उन्मत्त गण, [15] समुद्र, [16] मानव पीडा ।

(४)

• तुम आये तो जीने का सहारा नजर आया।
एक डूबने वाले को किनारा नजर आया।
अर्मानो की डूबी हुई कश्ती उभर आयी।
मायूसे-तमन्ना[1] को सहारा नजर आया।

रात उनसे गले मिलके कुछ इस हुस्न से रोये
हर अश्क[2] मुहब्बत का सितारा नजर आया।
• वह जर्दिये-रुख्सार[3], वो बिखरे हुए गेसू[4]
हर हुस्न हमें गम का सँवारा नजर आया।

वह बहकी नजर, बहके कदम, तेज तनफ्फुस[5]
कल हमको अजब हाल तुम्हारा नजर आया।
• तुम भी तो सताये-से नजर आते थे मुझको
मैं तुमको अगर दर्द का मारा नजर आया।

• तुमको कोई अपना नजर आया तो बताओ
हमको तो कोई भी न हमारा नजर आया।
जिस गम को भी आना हो 'नजीर' आये खुशी से।
वह आ गये अब मुझको सहारा नजर आया।

●

---

१ कामना-पूर्तिकी ओरसे निराश, २ अश्रु, ३ गालोंका पीलापन, ४ केश, ५ साँस।

(५)

गुंचओ-गुल[1] की कमी है न बहारॉ[2] की कमी
चन्द कॉटे भी कि पूरी हो गुलिस्तॉ[3] की कमी ।
मेरे हर शेअर मे यूँ दोस्त के एहसॉ की कमी
धूप मे जैसे किसी सायए-दामॉ[4] की कमी ।
कैसे पूरी करूँ इस आलमे-इम्कॉ[5] की कमी ।
आदमी का तो है जंगल मगर इनसॉ की कमी ।
इतने तारो का लहू और ये बे-रंग सहर[6]
मुझसे पूछो मेरे ख़ुर्शीदे-दरख़्शॉ[7] की कमी ।
जिन्दगी अब भी है बेचैन सँवरने के लिए
आज भी है मेरे अफसाने[8] मे उन्वॉ[9] की कमी ।
जब भी ऑसू मेरी ऑखो से बढे है आगे
मुझको महसूस हुई है तेरे दामॉ की[10] कमी ।
लडके आपस मे मरे और वतन पर न मरे
इस कदर ख़ून, मगर ख़ूने-शहीदॉ की कमी ।
कल भी जंजीरो की झंकार प' गाया हमने
आज भी हमसे ही पूरी हुई जिन्दॉ[11] की कमी ।
हमको जीने का सलीका नही मालूम 'नजीर' !
वर्ना इस दौर[12] मे है कौनसे तूफॉ की कमी ।

●

---

१ कली और फूल, २ बहार ऋतु, ३ पुष्प-उद्यान, ४ दामनकी छाया, ५ संसार, ६ प्रभात, ७ प्रकाशमान सूर्य, ८ आत्म-कथा, ९ शीर्षक, १० दामन, ११ कारागृह, १२ युग ।

(६)

जब देख रहे थे हसरत[1] से वह दर्द में डूबा प्यार कहाँ ।
अब तुझ प' निछावर करने को अश्कों के शिकस्ता[2] हार कहाँ ।

गोयाई[3] मे वह इन्कार कहाँ, खामोशी मे वह इकरार[4] कहाँ ।
अब मेरी बिसाते[5]-उल्फत पर यह जीत कहाँ यह हार कहाँ ।

जिससे मुझे जख्मी होने की हर वक्त तमन्ना[6] रहती थी ।
पलकों के घनेरे साये में चलती हुई वह तलवार कहाँ ।

यह जामे-बिलूरी[7] क्या होगा, यह बादए-रंगीं[8] क्या होगा ।
जिस मौज प' अब लहराता हूँ वह मौजे-मए-गुल्नार[9] कहाँ ।

अफ्कारे-जमाना[10] के हाथों गम यूँ ही दबा-सा रहता है ।
हाजत[11] ही नही अब पीने की पीने से मुझे इन्कार कहाँ ।

तुम साथ मे लेकर चलना भी चाहो तो मै शायद चल न सकूँ ।
पाबन्द[12] हूँ अब आजाद कहाँ मज्बूर हूँ खुद-मुख्तार[13] कहाँ ।

जब दिल मे खुशी की मौजे थी हर सम्त[14] खुशी लहराती थी ।
अब चैन की लहरें गंगा के इस पार कहाँ उस पार कहाँ ।

---

१ अभिलाषा, २ खण्डित, ३ बोलना, ४ स्वीकारोक्ति, ५ वह दर्री या कपड़ा जिसपर शतरंज खेलते हैं, ६ कामना, ७ शीशेका मदिरापात्र, ८ रंगीन शराब, ९ लाल मदिराकी तरंग, १० कालचिन्ता, ११ आवश्यकता, १२ बन्दी, १३ स्वतन्त्र, १४ दिशा ।

एक शम्अ[१]-सी दिल मे जलती है दिल फिर भी बुझा-सा रहता है ।
है सोज[२] मगर अब साज[३] कहाँ, जज्बा[४] है मगर बेदार[५] कहाँ ।

वह किब्ला-व-कअ्बा[६] है मेरे, मानूँगा 'नजीर' उनका कहना ।
वरना रहे-उल्फत[७] मे हाएल[८] मज्हब की कोई दीवार कहाँ ।

◆

---

१ दीपक, २ सन्ताप, ३ वाद्य, ४ भावना, ५ जाग्रत, ६ माननीय व्यक्ति, ७ प्रेममार्ग, ८ बाधक ।

(७)

यह जल्वागहे-खास[1] है कुछ आम[2] नही है।
कमजोर निगाहो का यहाँ काम नही है।

जिसमे न चमकते हो मुहब्बत के सितारे।
वह शाम अगर है तो मेरी शाम नही है।

क्या जाने मुहब्बत की है यह कौन-सी मंजिल।
वह साथ है फिर भी मुझे आराम नही है।

तुम सामने खुद आये, नवाजिश[3] यह तुम्हारी।
अब मेरी नजर पर कोई इल्जाम नही है।

अफसोस वह कब मेरी तरफ देख रहे है।
जब मेरी नजर मे कोई पैगाम[4] नही है।

शायद कि 'नजीर' उठ चुका अब दिल का जनाजा।
अब साँस के पर्दों मे वह कुहराम[5] नही है।

●

---

१ विशिष्ट दर्शन-स्थल, २ सामान्य, ३ कृपा, ४ सन्देश, ५ कोलाहल।

(८)

ये इनायतें[1] गजब की, ये बला की मेह्रबानी।
मेरी खैरियत भी पूछो किसी और को जवानी।
नही मुझसे कुछ तअल्लुक तो खफा-खफा-से क्यो है ?
नही जब मेरी मुहब्बत तो यह कैसी बद-गुमानी[2]।

मेरा गम रुला चुका है तुझे बिखरी जुल्फवाले।
यह घटा बता रही है कि बरस चुका है पानी।
तेरा हुस्न सो रहा था मेरी छेड ने जगाया।
वह निगाह मैने डाली कि सँवर गयी जवानी।

मेरी बे-जबान आँखो से गिरे है चन्द कतरे।
वह समझ सके तो आँसू, न समझ सके तो पानी।
है अगर हसी[3] बनाना तुझे अपनी जिन्दगी को।
तो 'नजीर' इस जहाँ को न समझ जहाने-फानी[4]।

●

---

१ कृपाएँ, २ दुर्भावना-भ्रम, ३ सुन्दर, ४ नश्वर ससार।

(९)

बर्क़[1] गिरी, गिरा करे, आग लगी, लगा करे
जिसका चमन से कुछ न हो फ़िक्रे-चमन[2] वो क्या करे ।
मैंने सुना कि आपको मुझसे हैं बद-गुमानियाँ[3]
झूट तो यह नहीं मगर सच भी न हो ख़ुदा करे ।

अपनी जगह प' मैं भी हूँ अपनी जगह प' दिल भी है
अब मेरी इसमें क्या ख़ता, तीर अगर ख़ता[4] करे ।
हिज्र[5] की हो तवील[6] रात या तेरा गेसुए-दराज़[7]
उम्र दराज़[8] सबकी हो, सबका ख़ुदा भला करे ।

झूम उठे शजर-शजर,[9] जाग उठी कली-कली,
काश यही हँसी कोई आठ पहर हँसा करे ।
ज़ानुए-दोस्त[10] और फिर दामने-दोस्त[11] की हवा
होश में आ रहा हूँ मैं, होश न हो ख़ुदा करे ।

ठेस 'नज़ीर' लग गयी जिनसे मेरे वक़ार[12] को
दिल न मिलेगा उनसे अब चाहे नज़र मिला करे ।

●

---

[1] बिजली, [2] उपवनकी चिन्ता, [3] भ्रम-अविश्वास, [4] चूक, [5] वियोग, [6] दीर्घ, [7] दीर्घ केश, [8] दीर्घ, [9] वृक्ष, [10] प्रीतमकी जाँघ, [11] प्रीतमका दामन, [12] सम्मान ।

(१०)

बजा[1] है, हाँ शिकारे-नाजे-बेजा[2] हो गये हम-तुम
नजर उठने लगी सबकी, तमाशा हो गये हम-तुम।
वही हम-तुम, वही महफ़िल, वही महफिल की रअ्नाई[3]·
मगर क्या जानिए क्यो वे-तमन्ना[4] हो गये हम-तुम।

ये मज्बूरी-सी मज्बूरी ये नाचारी-सी[5] नाचारी·
कि तन्हा[6] हो न सकने पर भी तन्हा हो गये हम-तुम।
परीशानी भी हम दोनो तक आने मे हिचकती थी।
जहाँ आफत कोई आयी· सफ-आरा[7] हो गये हम-तुम।

सुराही भी चली आती है, सागर[8] भी खनकते है
मगर जब बे-नियाजे-जामो-मीना[9] हो गये हम-तुम।
जहन्नुम की अगर कुछ आँच आ सकती है जन्नत मे
तो फिर सच है मुहब्बत करके रुस्वा[10] हो गये हम-तुम।

मुहब्बत ऐ 'नजीर' इस दह्र[11] से ना-पैद[12] हो जाती·
मुहब्बत की यह किस्मत थी कि पैदा हो गये हम-तुम।

●

---

१ सत्य, २ अनुचित गर्वका शिकार, ३ शोभा, ४ कामनारहित, ५ विवशता, ६ अकेले, ७ पंक्तिबद्ध, ८ मदिरापात्र, ९ मदिराके प्याले और सुराहीसे इच्छारहित, १० बदनाम, ११ संसार, १२ लुप्त।

(११)

हाय रे कह्र[1]। दूर से जाम दिखा गया कोई।
आज तो बेपिलाये भी आग लगा गया कोई।

नश्शए-इश्क[2] मे है चूर, शैख़ जी हमसे दूर-दूर
जाइए फिर मिलेगे हम, देखिए आ गया कोई।

इश्क की है तलब[3] अगर, हुस्न प' दिल निसार[4] कर
दौलते-दर्दे-इश्क[5] क्या मुफ्त मे पा गया कोई।

गर्के-शराब[6] हर नजर, गेसूए-मस्त[7] ता-कमर[8]
राह दो अह्ले-बज्म[9] राह, बज्म मे आ गया कोई।

जिक्र अभी का है, अभी सुनके गजल 'नजीर' की
मस्त घटा की तर्ह से वज्द[10] मे आ गया कोई।

---

१ गजब, २ प्रेम उन्माद, ३ इच्छा, ४ उत्सर्ग, ५ प्रेम पीडाकी निधि, ६ मदिरामें डूबी हुई, ७ मस्त केश, ८ कमर तक, ९ सभाके लोगों, १० उन्माद।

(१२)

हर गुल[1] है आज चाक-गरीबाँ[2] तेरे बगैर।
मातम-कदा[3] बना है गुलिस्ताँ[4] तेरे बगैर।
अपना ही एक घर नही वीराँ[5] तेरे बगैर।
सूनी है आज महफिले-इम्काँ[6] तेरे बग़ैर।

साँसें है मुज्महिल-सी[7] तो नज़रे उदास-उदास।
सूनी है जैसे अंजुमने-जाँ[8] तेरे बगैर।
जैसे बुझी-बुझी-सी है तारो की रौशनी।
बे-नूर[9] आज है महे-ताबाँ[10] तेरे बगैर।

शीशा कही है, जाम[11] कही, बादा-कश[12] कही।
उजड़ी पड़ी है मज्लिसे-रिन्दाँ[13] तेरे बगैर।
मै कबसे फिर रहा हूँ सुकूँ[14] की तलाश मे।
कबसे मेरी नजर है परीशाँ तेरे बगैर।

जैसे तेरे बग़ैर है दुनिया ही ना-तमाम[15]।
हर दास्ताँ[16] है तिश्नए-उन्वाँ[17] तेरे बगैर।

---

१ फूल, २ कुरतेका गला फाड़े हुए, ३ शोक-गृह, ४ पुष्पोद्यान, ५ उजाड, ६ संसार-सभा, ७ उदासीन, ८ प्राण-सभा, ९ ज्योतिहीन, १० प्रकाशमान चन्द्रमा, ११ मदिरापात्र, १२ शराबी, १३ शराबियोंकी गोष्ठी, १४ शान्ति, १५ अपूर्ण, १६ कहानी, १७ शीर्षकका अपेक्षी।

औरो के दर[1] प' रख दिया सर तेरे वास्ते।
काएम[2] न रह सका मेरा ईमाँ[3] तेरे वग़ैर।

उनके बगैर तू ही परीशाँ नही 'नजीर'!
है तेरी तर्ह वह भी परीशाँ तेरे बगैर।

•

---

१ द्वार, २ स्थिर, ३ धर्मविश्वास।

(१३)

रगों मे दौड़ती-फिरती-सी वह शराब नही।
अब उस नजर का तसादुम[1] भी कामयाब[2] नही

उसे हलाल[3] है जीना ह़राम[4] है जिसका।
ये मय[5] अज़ाब[6], अगर जिन्दगी अज़ाब[7] नही।

जो तौबा[8] की तो घटाओ ने आके घेर लिया।
जो तौबा तोडी तो मैखाने[9] मे शराब नही।

हमारे पीने प' वाएज[10] जो मुँह बनाता है।
अदा[11] खराब सही आदमी ख़राब नही।

हमारे वास्ते हर साँस एक हकीकत[12] है।
ये जिन्दगी किसी वहशतजदे[13] का ख्वाब नही।

'नजीर' चाहे यह दुनिया हो चाहे वह दुनिया।
खराबहाले-मुहब्बत[14] कही खराबः नही।

●

---

१ संघर्ष, २ सफल, ३ अनिषिद्ध, ४ दूभर, शराव, ६ दण्डनीय पाप, ७ दुःखमय, ८ मदिरा-त्यागकी प्रतिज्ञा, ९ मदिरालय, १० धर्मोपदेशक, ११ भाव-भंगी, १२ वास्तविकता, १३ उन्मादग्रस्त, १४ दुर्दशाग्रस्त प्रेमी।

(१४)

कितनी नज़रे है नयी आ़रिजे-तावाँ[1] के क़रीब ।
कितने काँटो का है अम्बार[2] गुलिस्ताँ के करीब ।

आज तो आबरूए-इश्क[3] प' हर्फ[4] आ जाता ।
हाथ पहुँचा था कई बार गरीबाँ[5] के करीब ।

दूर इतने कि निगाहो की रसाई[6] मुश्किल ।
और क़ुर्बत[7] का ये आ़लम[8] कि रगे-जाँ[9] करीब ।

उनके दामन से उलझने की तो जुर्अत[10] न हुई ।
हाथ पहुँचा भी तो अपने ही गरीबाँ के करीब ।

उन प' और उनके सफीने[11] प' तरस आता है ।
जो न साहिल[12] ही के नज्दीक न तूफाँ के करीब ।

इतनी जुल्मत[13] कि नशेमन[14] भी नजर आ न सके ।
काश बिजली ही गिरे कोई गुलिस्ताँ के क़रीब ।

जितने ना-अह्ल[15] है कश्ती से उतर जायेंगे ।
जरा कश्ती को पहुँचने तो दो तूफ़ाँ के क़रीब ।

---

१ तेजोमय मुख, २ ढेर, ३ प्रेमकी मर्यादा, ४ कलंक, ५ कुरतेका गला, ६ पहुँच, ७ समीपता, ८ अवस्था, ९ प्राण-धमनी, १० साहस, ११ नौका, १२ तट, १३ अन्धकार, १४ नीड़, १५. अयोग्य ।

आदमीयत की सनद आपकी दस्तार[१] नहीं।
कुछ दिनों बैठिए जाकर किसी इनसाँ के क़रीब।

झिलमिलाये न कहीं शम्ए-वफ़ा[२] देख 'नजीर'!
आ गया है गमे-दौराँ[३] गमेजानाँ[४] के क़रीब।

◆

---

१ पगडी, २ प्रेम-दीप, ३ कालचक्र-शोक, ४ प्रेम-शोक।

(१५)

आस ही से दिल मे पैदा जिन्दगी होने लगी।
शम्अ़ जलने भी न पायी रौशनी होने लगी।
इन्तिहाए-इश्क[1] है, कैसी जफा,[2] कैसा गिला[3] ?
अब तो उनकी हर खुशी अपनी खुशी होने लगी।

रोक अपना हाथ, रोक अब ऐ जुनूने-जामा-दर[4] !
हुस्ने-पर्दा-दार[5] की पर्दा-दरी[6] होने लगी।
उलझी-उलझी साँस, घबरायी नजर, बहके-कदम।
ऐ निगाहे मस्त ! दुनिया दूसरी होने लगी।

चाँद मेरा, कहकशाँ[7] मेरी, गुलो-गुचा[8] मेरे।
तुम मेरे होने लगे, दुनिया मेरी होने लगी।
डूबे तारे, झिलमिलायी शम्अ़, शब्नम[9] रो पड़ी।
इन्तेजारे-सुब्ह[10] था लो सुब्ह भी होने लगी।

सोजे-दिल[11] से रौशनी होने लगी दिल मे 'नजीर'!
इश्क को दुनिया भी दुनिया हुस्न की होने लगी।

●

---

१ प्रेमकी चरम सीमा, २ अत्याचार, ३ निन्दा, ४ कपडे फाड़नेवाला उन्माद, ५ परदावाला अर्थात् मर्यादावान्, ६ निरावरण करना अर्थात् बदनाम करना, ७ आकाशगगा, ८ फूल तया कलियाँ, ९ ओस, १० प्रभात-प्रतीक्षा, ११ हृदय-सन्ताप।

(१६)

हश्र[1] से नही कुछ कम एक दुखा हुआ दिल भी।
सबके सब परीशाँ है, वह भी, उनकी महफिल भी।
साहिबे-नजर[2] भी तू और साहिबे-दिल[3] भी।
रंगे-रुख़[4] ही पर मत जा देख रंगे-महफिल भी।

थे तो खोये-खोये-से साथ थे मगर उनके।
अंजुमन[5] से बाहर भी, अंजुमन मे शामिल भी।
घेर-घार मे बाँहे, फेर-फार मे जुल्फे।
एक मेरी असीरी[6] को तौक भी सलासिल[7] भी।

दीजिए दुआ उसको, जिसने सबको चौंकाया।
ऊँघता था तूफाँ भी, सो रहा था साहिल[8] भी।
सैर उठते तूफाँ की बैठकर लबे-साहिल[9]!
एक दिन वह आयेगा, बैठ जायेगा दिल भी।

दोस्त भी है दुश्मन भी ऐ 'नजीर' दिल अपना।
रास्ते का रहबर[10] भी, रास्ते मे हाएल[11] भी।

◆

---

१ प्रलय, २ दृष्टिवान्, ३ हृदयवान् अर्थात् ज्ञानी, ४ मुख भाव, ५ सभा, ६ बन्दीकरण, ७ जंजीरे, ८-९ तट, १० पथ-प्रदर्शक, ११ बाधक।

(१७)

मुहब्बत मे कोई एक-दूसरे से बेखबर क्यो हो।
पयाम[1] अपना हो या उनका रहीने[2] नामावर क्यो हो।
वहाँ मेरा गुजर भी हो तो सकता है मगर क्यों हो।
वह महफिल सिर्फ मेरे वास्ते ज़ेरो[3]-जबर क्यो हो।

तुम्हारी याद से दिल का बहल जाना तो मुम्किन है।
मगर इस याद के आने से तस्कीने[4] नजर क्यों हो।
वह एक नीची नजर जिसने नजर का हर सुकूँ[5] लूटा
वही जालिम नजर अब वज्हे तस्कीने नजर क्यों हो।

जमाना तुमसे क्या अस्बाबे[6]-ख़ामोशी न पूछेगा?
तुम्हारे मुख्तसर[7] करने से किस्सा मुख्तसर क्यो हो।
नुमूदे-सुब्ह[8] मेरे वास्ते उनका तबस्सुम[9] है।
जहाँ दम तोडती है रात वह मेरी सहर[10] क्यों हो।

मुहब्बत है तो आकर मेरे शानों[11] पर बिखर जाये
परीशाँ हो अगर गेसू[12] तो मेरे हाल पर क्यो हो।

---

[1] सन्देश, [2] सन्देशवाहकका आभारी, [3] अस्त-व्यस्त, [4] दृष्टिकी तृप्ति, [5] शान्ति, [6] मौनका कारण, [7] संक्षिप्त, [8] प्रभात-आलोक, [9] मुसकान, [10] प्रभात, [11] काँधों, [12] केश।

तुम्हारी ही जुदाई मैकदे[1] तक लेके जाती थी।
मेरी दुनिया के मालिक अब मेरी दुनिया उधर क्यों हो।
वह आगे जा नहीं सकते ह़दे-आदाबे[2]-उल्फ़त से।
'नजीर !' इस भीड़ मे तुझ पर मुह़ब्बत की नजर क्यों हो।

●

---

[1] मद्यशाला, [2] प्रेम-मर्य्यादाकी सीमा।

(१८)

जाँ-नवाज[१] अब वही निगाह नही ।
वर्ना जीना कोई गुनाह नही ।
आँख मे अश्क लब प' आह नही ।
अब कोई गम का भी गवाह नही ।
फिर किसी आर्जू ने दम तोडा ।
एक जनाजा है लब प' आह नही ।
रंग चेह्रे का देखने वाले !
दिल की हालत अभी तबाह नही ।
अपना ह़ाले-तबाह क्या देखूँ ?
इश्क को आँख है निगाह नही ।
उनको लिल्लाह[२] कोई कुछ न कहो ।
मै ही ख़ुद अपना ख़ैरख़ाह नही ।
या वह रौनक नही है मह़फिल मे ।
या हमारी ही वह निगाह नही ।
देखिए शक्ले-जिन्दगी[३] क्या हो ।
अब तो उनसे भी रस्मो[४]-राह नही ।
जब से छोडा है उनके दर[५] को 'नजीर' ।
दो जहाँ मे कही पनाह नही ।

---

[१] प्राणशक्तिदायक, [२] ईश्वरके लिए [३] जीवनका रूप, [४] मिलना-जुलना, [५] द्वार ।

(१९)

क्या मिला तुमको पुर्सिशे-गम[1] से
दामने-जब्त[2] छुट गया हमसे।
वही क़त्रे गवाहे-गम[3] मेरे।
उनकी पल्को प' है जो शब्नम-से।
आये थे गम से खेलने के लिए।
बचके वह भी न जा सके गम से।
एक नजर उनको देखने के लिए।
की है कितनो ने दोस्ती हमसे।
आज यह है कि बज़्म से हम है।
कभी यह था कि बज्म थी हमसे।
फ़िक्र और मावराए-आ़लम[4] की।
किसको फुर्सत है आ़लम से।
या छुटी उनकी बज्म हमसे 'नजीर'।
या छुटी थी बहिश्त आदम से।

●

---

[1] दुःखका हाल पूछना, [2] धैर्य्यका दामन, [3] शोकसाक्षी, [4] परलोक।

(२०)

इसे भी याद रख, ठुकराने वाले आर्जू मेरी ।
एक ऐसा दिन भी आयेगा कि होगी जुस्तुजू[1] मेरी ।
लिया है फूल जब तूने तो यह काँटा भी लेता जा ।
जहाँ रक्खा है दिल मेरा वही रख आर्जू मेरी ।

बुरा हो खौफे-रुस्वाई[2] का, कुछ मज्मअ़[3] जहाँ देखा ।
यही समझा कि शायद हो रही है गुफ्तुगू मेरी ।
छुपे जाओ, छुपे जाओ, जहाँ तक छुप सको मुझसे ।
जरा मैं भी तो देखूँ, है कहाँ तक जुस्तुजू मेरी ।

जरा मैं भी सुनूँ, मुझको भी दीजे शुक्र का मौका ।
शिकायत हो रही थी रात किसके रूबरू मेरी ।
'नजीर' इनसानियत का दम गनीमत है मेरे दम से ।
मुहब्बत मेरा मज्हब है वफादारी है खू[4] मेरी ।

●

---

[1] खोज, [2] अपयशका भय, [3] जनसमूह, [4] स्वभाव ।

(२१)

अक्सर इस तर्ह से भी रात बसर होती है।
रात की रात नज़र जानिबे-दर[1] होती है।
जिससे दुनियाए-सुकूँ[2] जेरो-जबर[3] होती है।
वह मुलाक़ात सरे-राह-गुजर[3] होती है।

ठेस लगती है जहाँ इश्क की खुद-दारी[5] को।
जिन्दगी बढ़के वहीं सीना[6]-सिपर होती है।
यह सुपैदीए-सहर[7] है कि सितारो का कफ़न।
रात दम तोड़ रही है कि सहर[8] होती है।

अपने दामन से तो मै पोछ रहा हूँ आँसू।
दामने-दोस्त की तौहीन मगर होती है।
आप आराइशे-गेसू[9] में लगे है नाहक़।
फ़ातेहे-दिल[10] तो मुहब्बत की नजर होती है।

रास्ता रोके हुए कब से खड़ी है दुनिया।
न इधर होती है जालिम न उधर होती है।
तू नजर भरके सरे-बज्म न देख उनको 'नजीर'
इससे रुस्वाइए-तहज़ीबे-नज़र[11] होती है।

●

---

१ द्वारकी ओर, २ शान्ति-संसार, ३ अस्तव्यस्त. ४ पथमें, ५ स्वाभिमान, ६ ढाल बन जाती है, ७ प्रभात-आलोक, ८ प्रभात, ९ केश सँवारना, १० हृदय-विजेता, ११ दर्शन-सभ्यताकी बदनामी।

(२२)

हिजावे-हुस्ने दो आलम[1] फकत[2] हिजावे-गजल[3] ।
उठेगा हश्र[4] अगर उठ गयी नकावे-[5]गजल ।
कभी उतर न सका नश्शए-शरावे गज़ल ।
वही हूँ मैं वही सर-मस्तिए-शवावे[6] गजल ।

न आफ्तावे-फलक[7] है न माह्तावे-फलक[8]
यह दो हसीन वरक है तेरे कितावे-गजल ।
जवानियाँ तो उठी कितनी और ढल भी गयी
वही उरूसे[9]-गजल है, वही शवावे-गजल ।

कही न सायए-गेसू[10] न सायए-दामाँ
यह धूप है गमे-दौराँ[11] की या अताबे[12]-गजल ।
हयात[13] मत्लए-अन्वार[14] होती जाती है
रुखे-हबीब[15] है दीवाचए[16]-कितावे-गजल ।

विठा दिये गमे-दौराँ ने शाम के पहरे
गुरूब[17] हो न सका फिर भी आफ्तावे-गज़ल ।

---

[1] दोनों लोकोंके सौन्दर्यका आवरण, [2] केवल, [3] गजलका पर्दा, [4] प्रलय, [5] मुखावरण, [6] गजलके यौवनकी मस्ती, [7] आकाशका सूर्य, [8] आकाशका चन्द्रमा, [9] नव-वधू, [10] केशोंकी छाया, [11] कालचक्रकी चिन्ता, [12] प्रकोप, [13] जीवन, [14] प्रकाशोदय स्थान, [15] प्रीतमका मुख, [16] भूमिका, [17] अस्त ।

बिखर रहे है फिजा[1] मे हयात के नगमे[2] ,
किसीने छेड दिया है कही रबाबे[3]-गजल ।
'नजीर' कम नही गुलहाए[4]-गुलशने-उर्दू ।
हसीन-तर[5] है मगर आरिजे[6] गुलाबे गजल ।

---

१ वातावरण, २ जीवन-गान, ३ सारंगी के जैसा एक वाद्य, ४ गुल (पुष्प) का बहुवचन, ५ सुन्दरतम, ६ कपोल ।

(२३)

हज़ार बार जहाँ जाके लुट गया हूँ मैं।
क़दम वही के लिए फिर उठा रहा हूँ मैं।
रुको रुको मेरे सर्मायिए-निगाह[१] रुको
सुनो सुनो कि तुम्ही को पुकारता हूँ मैं।

वह आ रहे थे तो नज्रे न उठ सकी मेरी
वह जा रहे हैं तो मुड़-मुड के देखता हूँ मैं।
चलेगा वस तो जमाना भी मुझ प' हँस लेगा
अभी जमाने प' खुद मुस्करा रहा हूँ मैं।

सितारो! तुम मेरे खोये हुए तवस्सुम[२] हो
इसी तरह से कभी मुस्करा चुका हूँ मैं।
'नजीर'! सामने उनके जो मेरा जिक्र आया
दबी ज़बान से बोले कि जानता हूँ मैं।

●

---

[१] दृष्टि निधि, [२] मुस्कान।

(२४)

जल्वा[1] कहाँ कि जोरे-नजर आजमाएँ हम।
पर्दा उठायें वह तो नजर भी उठायें हम।

ऐ जाने-इन्तेजार[2]! कोई ऐसी शक्ल भी
हर आने वाले पर तेरा धोका न खायें हम।

आँखो की नीद दोनो तरह से हराम है
उस बे-वफ़ा को याद करे या भुलायें हम।

है पीरे-मैकदा[3] भी, मुअज़्ज़िन[4] भी मह्वे-ख्वाब[5]
ढलती है रात, ऐसे मे किसको जगाये हम।

मस्जिद का दर भी बन्द, दरे-मैकदा[6] भी बन्द
किस दर प' जायें कौन-सा दर खटखटाये हम।

हल्का करें तो कैसे करें दिल के बोझ को
दस्ते-दुआ[7] उठाये कि सागर[8] उठाये हम।

पहुँचेंगे मैकदे मे तो ढालेंगे बेहिसाब।
मस्जिद मे जायेंगे तो गिनेंगे खताएँ[9] हम।

वह शामे-मैकदा हो कि सुब्हे हरम[10] 'नजीर'!
लेने लगे है दोनो के सर की बलाएँ हम।

●

---

[1] छवि, [2] प्रीतम, [3] मदिरालयका वयोवृद्ध संचालक, [4] अजान देनेवाला, [5] निद्रामग्न, [6] मद्यशालाका द्वार, [7] प्रार्थनामें उठा हुआ हाथ, [8] मदिराका प्याला, [9] दोष, [10] मस्जिदका प्रभात।

(२५)

आज वह खुद-ब-खुद सामने आ गये।
कुछ समझ-सोच कर हम ही कतरा गये।
वहकी-वहकी अदा गिरती-पडती नजर।
वज्म मे आते ही बज्म पर छा गये।

चश्मे-साकी[1] के उठने का आलम[2] न पूछ।
कितने पैमाने आपस मे टकरा गये।
मुझसे खलवत[3] मे हँस-हँसके की गुफ्तगू[4]।
मुझको महफिल मे देखा तो शर्मा गये।

आप रोजे-जजा[5] के लिए रोइए।
हम तो अपने किये की सजा पा गये।
मेरी सब हर्कते तो है वाएज[6] वही।
आप क्यो अपनी हर्कत से वाज आ गये।

एक वुजुर्ग आये थे मैकदे मे 'नजीर'।
एक कम-उम्र तौबा[7] से टकरा गये।

●

---

१ मदिरा पिलानेवालेके नयन, २ अवस्था, ३ एकान्त, ४ वार्त्ता, ५ प्रतिदान दिवस अर्थात् प्रलय, ६ धर्म-उपदेशक, ७ मदिरा-त्यागकी प्रतिज्ञा।

(२६)

कोई नही शबे-मायूस[1] की सहर[2] के लिए।
अब आफ़ताब[3] तुम्ही हो मेरी नजर के लिए।
मेरी निगाह मे अब भी है सैकड़ों दामन।
मगर कोई भी नही अपनी चश्मे-तर के लिए।

इस इब्तेदाए-मुहब्बत[4] की इन्तेहा[5] कर दो।
नजर उठी है अब एक दूसरी नजर के लिए।
चमक-चमक मेरी दुनिया के आफ्ताब चमक।
तरस गयी मेरी आँखें मेरी सहर के लिए।

खुशी ने रंज ने सबने तो साथ छोड दिया।
[6]अ़ता हो अब कोई साथी तो उम्र भर के लिए।
न हो कुबूल तो किस्मत हमारे सज्दे की।
मगर यह सर नही औरों के संगे-दर[7] के लिए।

नज़र से हो नहीं सकता सुकूने-क़ल्ब[8] 'नजीर'!
कि दिल के वास्ते दिल है नजर नजर के लिए।

●

---

१ निराशकी रात्रि, २ प्रभात, ३ सूर्य, ४ प्रेम-आरम्भ, ५ अन्त, ६ प्रदान, ७ ड्योढीका पत्थर, ८ हृदय-शान्ति।

(२७)

क्या जानिए क्या आलम[1] अब अपनी खुशी का है।
होटो प' हँसी है या इल्जाम हँसी का है।
हर एक हँसी मे एक मय्यत[2] है तबस्सुम[3] की।
हर फूल जनाजा एक मर्हूम[4] कली का है।

जाने के लिए शायद आते है गले मिलने।
दिल खुश नही क्यो आखिर, मौका तो खुशी का है।
वह मद-भरी आँखे है जिस रिन्द[5] की किस्मत मे।
शीशा भी उसी का है, साग़र[6] भी उसी का है।

इस हुस्ने-[7]बयाँ के मै कुर्बान मगर वाएज़[8]।
यह जिक्र है जन्नत का या उनकी गली का है।
मरने से नही डरता, मरना है 'नजीर' आखिर।
वह बैठके रोयेंगे, रोना तो इसीका है।

◆

---

१ अवस्था, २ शव, ३ मुस्कान, ४ मृत, ५ मदिरा-प्रेमी, ६ मदिराका प्याला, ७ वार्ता शैलीकी सुन्दरता, ८ धर्मोपदेशक।

(२८)

कौन छुट गया पीछे, कारवाँ को क्या मालूम ?
एक जान की कीमत, एक जहाँ को क्या मालूम ?
रात क्यो चले आये उठके उनकी महफिल से ?
मेहमाँ प' क्या गुजरी, मेजबाँ[१] को क्या मालूम ?

मै तो मान जाऊँगा, दिल है यह न मानेगा
एअ़तिमाद[२] की लज़्जत बदगुमाँ[३] को क्या मालूम ?
चोट दिल प' लगती है इन दिनो तबस्सुम[४] से
हाँ मगर यह तुम-जैसे शादमाँ[५] को क्या मालूम ?

क्या अदाए-पुर्सिश[६] थी, बात पूछ ली दिल की
राज राज है फिर भी राजदाँ[७] को क्या मालूम ?
संगे-दर[८] हसीं देखा, सर झुका दिया अपना
आपको गिराँ गुजरा[९], सर-गिराँ[१०] को क्या मालूम ?

साथ है 'नजीर' उनके अज़्म[११] है जवाँ जिनके
राह-रव[१२] है मंजिल भी, कारवाँ को क्या मालूम ?

◆

---

[१] आतिथ्यकर्त्ता, [२] विश्वास, [३] अविश्वासकर्त्ता, [४] मुस्कान, [५] प्रसन्न, [६] पूछनेकी रीति, [७] अन्तरंग मित्र, [८] द्वार-शिला, [९] अप्रिय मालूम हुआ, [१०] जिसको अपना सर बोझल मालूम हो, [११] संकल्प, [१२] पथिक।

(२९)

यह राहे-मुहब्बत है इसमे ऐसे भी मकाम आ जाते है।
रुकिए तो पसीना आता है, चलिए तो कदम थर्राते है।
नब्जें है कि उभरी आती है, तारे है कि डूबे जाते है।
वह पिछले पहर बीमारो पर कुछ खास करम[1] फ़रमाते है।

वह मस्त हवाओ के झोके, कुछ रात गये, कुछ रात रहे।
जैसे यह कोई रह रहके कहे, घबराओ नही, हम आते है।
शब्नम की नुमाइश माथे पर, खिलती हुई कलियाँ होटो पर।
गुलशन मे सवेरा होता है, या बज्म मे वह शर्माते है।

पेशानी[2] कि झलकी पडती है, बिजली है कि चमकी जाती है।
गेसू[3] है कि बिखरे जाते है, बादल है कि छाये जाते है।
यह राहे-तलब[4] है दीवाने ! इस राह मे उनकी जानिब से।
आँखे भी बिछायी जाती है, काँटे भी बिछाये जाते है।

कहते नही बनता क्या कहिए, कैसा है 'नजीर' अफ्सानए-ग़म[5]।
सुनने प' तो वह आमादा[6] है, कहने से हमी घबराते है।

●

---

१ कृपा, २ ललाट, ३ केश, ४ साधना-मार्ग, अर्थात् प्रेम-मार्ग, ५ शोक-कथा, ६ तत्पर।

(३०)

हुज़ूरे-हुस्न[1] मुद्दत हो गयी अश्के-रवाँ[2] देखे।
जमाना हो गया अपने सितारों का जहाँ देखे।
न जाने ऐसे-ऐसे कितने मोती राएगाँ[3] होंगे।
जो आँसू हो चुके हैं राएगाँ तुमने कहाँ देखे।

न कोई दीद[4] के काबिल न कोई लायके सज्दा।
हजारों सूरतें देखी, हजारों आस्ताँ[5] देखे।
बिछड़ कर जानेवाले मुडके अक्सर देख लेते हैं।
जहाँ तक देख सकती है निगाहे-नातवाँ[6] देखे।

हुए आजाद अब पूरा गुलिस्ताँ देखना होगा।
गुलिस्ताँ छोड़ दे जो सिर्फ़ अपना आशियाँ[7] देखे।
निगाहे-मेह्र[8] भी देखी, निगाहे-कह्र[9] भी देखी।
'नजीर' इतने दिनो मे हमने भी कितने जहाँ देखे।

●

---

१ प्रीतमके सम्मुख, २ बहते आँसू, ३ अकारथ, ४ दर्शन, ५ ड्योढ़ी, ६ क्षीण-दृष्टि, ७ नीड़, ८ कृपा-दृष्टि, ९ कोप-दृष्टि।

(३१)

रगो मे जिनसे सुर्खी दौडती थी
वह रंगा रंग अफसाने कहाॅ है।
निगाहे जिनको सज्दे कर रही थी
वह चलते-फिरते बुतख़ाने कहाँ है।
छलकते थे जो पैमाँ[1] बाँधने को।
अब उन आँखो के पैमाने[2] कहाँ है।
बता ऐ गर्मिए-शौके-नजारा[3] !
घनी पलको के ख़सख़ाने कहाँ है।
तुम्हारी बज्म और इस दर्जा सूनी
अकेले क्यो हो दीवाने कहाॅ है।
फिजाए-बुत्कदा[4] मायूस-कुन[5] है
खुदा वालो! खुदाख़ाने[6] कहाँ है।
कोई ले आओ मेरे मोहतरम[7] को
जो आ जाते थे समझाने कहाँ है।
'नजीर' एक मस्त, उनका क्या ठिकाना
यहाँ थे, अब खुदा जाने कहाँ है।

●

---

१ प्रतिज्ञा, २ मदिराका प्याला, ३ दर्शनोल्लासकी गरमी, ४ देवालयका वातावरण, ५ निराशापूर्ण, ६ मस्जिद, ७ माननीय।

(३२)

भूला नहीं जमाने का लुत्फो-करम[1] अभी।
तुम सामने न आओ कि ताजा है गम अभी।

रुक-रुक के मिल रहा है तेरा सोजे-गम[2] अभी
थम-थम के जल रहा है चिरागे-हरम[3] अभी।

यूँ ही चलेगा किस्सए-दैरो-हरम[4] अभी।
मिलता नही किसी को वह नक्शे-कदम[5] अभी

नीची नजर किनाये[6] से खाली नही मगर
इतना लतीफ़ शेअ्र[7] न समझेंगे हम अभी।

अपनी निगाहे-लुत्फ[8] को जाएअ्[9] न कीजिए
मुझसे न उठ सकेगा ये बारे-करम[10] अभी।

अब भी यकीं नही मेरे ईमाने[11]-इश्क पर
खायी तो है तुम्हारे ही सर की कसम अभी।

दुनिया से जाके फिर कोई वापस न आयेगा
जहमत न हो तो और चलो दो कदम अभी।

यह किस तरह कहे कि कमी है 'नजीर' की
कहते है यह कि बज्म मे रौनक है कम अभी।

◆

---

[1] दया-कृपा, [2] प्रेम-शोकका ताप, [3] कावागृह, मक्कास्थित इस्लामी उपासनालय, [4] मन्दिर-मस्जिद, [5] पद-चिह्न, [6] अर्थपूर्ण संकेत, [7] सूक्ष्म काव्य, [8] कृपादृष्टि, [9] व्यर्थ, [10] कृपाभार, [11] प्रेम विश्वास।

(३३)

मुझसे साकी ने मेरे पूछा कि तूने छोड दी ।
इस तरह पूछा कि मैने हँस के तौबा[1] तोड़ दी ।
जो चुनी थी मैने ऐ पर्वर्दिगारे-गुलसिताँ !
वह कली खिलने से पहले ही किसी ने तोड़ दी ।

अब तो वह भी मुश्किलो मे है ख़ुदाए-आर्ज़ू ।[3]
जिस तमन्ना के लिए सारी तमन्ना छोड़ दी ।
इश्क की कुछ मस्लिहत थी, कुछ जमाने का ख़ियाल
मैने ख़ुद उनकी नजर अपनी तरफ से मोड दी ।

यह ख़ियाल आया कि दिल टूटे न साकी का कही
एक पैमाने की ख़ातिर मैने तौबा तोड़ दी ।
वह मुहब्बत की नजर थी जिसने बढकर ऐ 'नज़ीर'
सिर्फ पल-भर मे रगे-दिल से रगे-दिल जोड़ दी ।

●

---

१ मदिरा-त्यागकी प्रतिज्ञा, २ उपवनका प्रभु, ३ कामनाके स्वामी ।

(३४)

सर्दिये-सुल्ह[1] भी है, गर्मिये-पैकार[2] भी है।
जिन्दगी ढाल भी, चलती हुई तलवार भी है।
शाहिदे-बज़्म[3] फ़कत[4] बज्म नही तेरे लिए
रक्स[5] करने के लिए अर्सए-पैकार[6] भी है।

जिसको जीना हो तलातुम[7] से किनारा न करे
अब जो तूफान है इस पार वह उस पार भी है।
जाने सोते है कि बेदार[8] है अर्बाबे-वतन[9]
फ़ित्नए-दह्र[10] तो सोया भी है बेदार भी है।

याद रख एक वफ़ादारे-वतन की ख़ातिर,
हार फूलो का अगर है रसनो-दार[11] भी है।
साज के तार जरा फिर से मिला ले मुत्रिब[12]!
इसमे कुछ टूटे हुए तार की झंकार भी है।

गुल तो है ख़ार[13] भी रहने दे सरे-राहे-चमन,
बागबाँ ख़ार के चुभने ही से बेदार भी है।

---

१ मिलापकी ठण्डक, २ लडाईकी गरमी, ३ रगसभाके प्रीतम, ४ केवल, ५ नृत्य, ६ रणक्षेत्र, ७ लहरोंका थपेड़ा, ८ जाग्रत, ९ देशवासी, १० कालचक्र, ११ फन्दा तथा सूली, १२ गायक, १३ शूल।

कुछ नहीं सिर्फ मुहब्बत है वफ़ा की क़ीमत
सर तो हाजिर है मगर कोई खरीदार भी है।

जह्र के घूंट 'नजीर' अब न पिये जायेंगे
क्यों कि आजाद है अब जुर्अते-इन्कार[1] भी है।

●

---

[1] इन्कारका साहस।

(३५)

यह तो जैसे बुझा है न रौशन ।
दिल है पहलू[1] मे या शम्ए-मदफ़न[2] ।
जिसको कहती है दुनिया मुहब्बत ।
है फकत दो निगाहो का बन्धन ।

सुस्त है क्या कोई तब्ए-नाजुक[3] ।
तेज क्यो है मेरे दिल की धड़कन ।
एक जालिम की आँखों में आँसू ।
जो न हो इस मुहब्बत के कारन ।

इस तरफ यह कि पोछेगे आँसू ।
उस तरफ़ यह कि भीगे न दामन ।
फेर लो मेरी जानिब[4] से नजरे ।
भीग जायेगी पलको की चिलमन ।

आज तक रो रही है जवानी ।
कर गयी थी निगाहे लड़कपन ।
दोस्तो से 'नजीर' अब किनारा ।
मिल गया है ठिकाने का दुश्मन ।

◆

---

१ सीना, २ समाधि'दीपक, ३ मृदुल स्वभाववाला प्रीतम, ४ ओर ।

(३६)

चले उठके वज्म से दो कदम तो कदम ही फिर न उठा सके।
जो निगाहे-मस्त से बच गये तो अदा से बचके न जा सके।
थे कुछ ऐसे खोये-से इन दिनों वह ख़ियाल मे भी न आ सके।
कई वार इधर से गुजर हुआ, मगर उनके न दर प' जा सके।
वह मेरा नसीब जगाके भी मेरी हसरतें[1] न जगा सके।
वह पलटके आ तो गये मगर गये दिन पलट के न आ सके।
बडी आर्जू थी कि जायेंगे, वह बुलाने जब कभी आयेंगे।
वह वुला गये मगर इस तरह कि बुलाने पर भी न जा सके।
कभी साफ दिल थे तो ऐसे थे कि गले से आके गले मिले।
हुए वदगुमान[2] तो इस कदर कि निगाह तक न मिला सके।
ये कुयूदे-इश्क[3] की सख़्तियाँ, ये लिहाजे-वज्म[4] कि अलअमां[5]!
जो हिला दे वज्म को वज्म को वह जवान तक न हिला सके।
नजर आयी सैकडो सूरतें मगर अपनी वज्अ[6] को क्या करें।
वह नजर जो उनसे मिलायी थी किसी और से न मिला सके।
जिसे सब जलाल[7] समझते है वह है पास्वान[8] जमाल[9] का।
इसी वास्ते है यह गर्मियाँ कि करीब कोई न आ सके।
है 'नजीर' देख लो आज भी मेरे चेहरे पर वही ताजगी[10]।
मुझे रंज कम न दिये मगर वह मेरी हँसी न दवा सके।

---

१ अतृप्त कामनाएँ, २ दुर्भावनाग्रस्त, ३ प्रेमके प्रतिबन्ध, ४ सभाके नियमोंका विचार, ५ ईश्वरकी शरण, ६ व्यवहार-आदर्श, ७ प्रताप, ८ रक्षक, ९ सौन्दर्य, १० प्रफुल्लता।

(३७)

अब इतने के लिए ऐ ना-खुदा[1] तेरा सहारा क्या ?
हमे जब डूबना ही है तो तूफाँ क्या किनारा क्या ?
मुहब्बत ही नहीं दुनिया मे खुद्-दारी[2] भी एक शै[3] है
जहाँ से जाके लौट आयें वहाँ जायें दोबारा क्या ?

उन्हें और उनके हर वादे को हम सच्चा समझते है
न आयेंगे, उन्हीं की बात जायेगी, हमारा क्या ?
इसी दुनिया मे जीना भी, इसी दुनिया मे मरना भी
इसी दुनिया मे रहना है तो दुनिया से किनारा क्या ?

तअल्लुक जब नहीं हमसे तो समझाते हो क्यो हमको
अगर बर्बाद ही होगे तो हम होगे, तुम्हारा क्या ?
किनाराकश[4] हुए जाते है क्यो मैं[5] की मुजम्मत[6] से
मेरे साकी ने वाएज[7] को भी शीशे मे उतारा क्या ?

'नजीर' आँसू मुहब्बत का चमकता है सरे-मिज्गाँ[8] ?
जो टूटे, टूटकर बे-नूर[9] हो जाये वह तारा क्या ?

●

---

[1] नाविक, [2] स्वाभिमान, [3] वस्तु, [4] पृथक्, [5] मदिरा, [6] निन्दा, [7] धर्मोपदेशक, [8] पलकोंपर, [9] ज्योतिहीन।

(३८)

नसीमे-सुब्ह[1] यूँ चली कि रूह थर-थरा गयी।
यह शम्अ[2] है कि जिन्दगी हवा से झिलमिला गयी।
अब उसके देखने को भी तरस रही है ज़िन्दगी।
वह उनकी बे-महल[3] हँसी जो गम को गम बना गयी।

जलाके शम्ए-इश्क[4] हम चले जब उनकी बज्म[5] से
कदम जहाँ-जहाँ गये, वहाँ-वहाँ हवा गयी।
हमे तो जिसने दी खुशी, दिया उसी ने रंज भी
हँसा गयी थी जो अदा, वही अदा रुला गयी।

अदा यह चोट खायी-सी, जबीं[6] यह भीगी-भीगी-सी
पसीना पोछ लीजिए, नजर शिकस्त[7] खा गयी।
अजल[8] भी पूछती नही मुसाफिराने-इश्क[9] को।
मिली थी मौत राह मे मगर नज़र बचा गयी।

कहाँ है अब वह दर्दे-सर कि जागें रात-रात-भर
जगाती थी जो आर्ज़ू[10] उसीको नींद आ गयी।
'नज़ीर' मेरे मेह्रबाँ गये नही कहाँ कहाँ ?
बस एक वहाँ न जा सके जहाँ मेरी दुआ गयी।

---

१ प्रभात-समीर, २ दीपक, ३ असगत, ४ प्रेम-दीप, ५ सभा, ६ ललाट, ७ पराजय, ८ मृत्यु, ९ प्रेम-बटोही, १० कामना।

(३९)

बादल की तरह झूम के लहरा के पियेंगे ।
साकी[1] तेरे मैखाने[2] प' हम छा के पियेंगे ।
उन मद-भरी आँखो को भी शर्मा के पियेंगे ।
पैमाने[3] को पैमाने से टकरा के पियेंगे ।

इस तर्ह से पीने के नही किब्ल-ओ-कअ्बा[4]
वाएज[5] है यह दो-चार को बहका के पियेंगे ।
वह लोग नही है जिन्हे रहमत[6] प' भरोसा
घबरा के पियेंगे कभी थर्रा के पियेंगे ।

बादल भी है, बादा[7] भी है, मीना[8] भी है, तुम भी
इतराने का मौकअ् है अब इतरा के पियेंगे ।
नासेह[9] की जरा गर्मिये-रफ्तार[10] तो देखो
यह दूर बहुत दूर कही जा के पियेंगे ।

एक जाम मे मैखाना उठा रखा है सर पर ।
क्या होगा ये कम-जर्फ[11] जो दुहरा के पियेंगे ।
तीरों के न हों जख्म तो चोटे हो नजर की
हम वज्अ्[12] के पाबन्द[13] है कुछ खा के पियेंगे ।

---

[1] मदिरा पिलानेवाला, [2] मदिरालय, [3] मदिरा-पात्र, [4] धर्मप्रमुख, [5] धर्मोपदेशक, [6] दैवी अनुकम्पा, [7] मदिरा, [8] मदिराकी सुराही, [9] धर्मोपदेशक, [10] द्रुत गति, [11] थोडी समायी रखनेवाले, [12] रीति, [13] पालन करनेवाले ।

देखेंगे कि आता है किधर मे गमे-दुनिया[1]
साकी[2] तुझे हम सामने बिठला के पियेंगे।
लेते है 'नजीर' आज जमाही प' जमाही
अब चाहे जहाँ जायें, कही जा के पियेंगे।

•

---

[1] लोक-चिन्ता, [2] मदिरा पिलानेवाला।

(४०)

एक तजल्ली[1]-सी ख़रामाँ[2] थी लबे-बाम[3] कही।
हाथ वह सुब्ह जो देखी थी सरे-शाम कही।
दिल से आ जाये जबाँ तक न तेरा नाम कही।
बात घर की है, रहे घर मे, न हो आम[4] कही!

तेरे होते कहीं तलवार चले, जाम कही।
मेरे साकी तेरा मन्सब[5] न हो बदनाम कही।
उनका दामन तो मेरे हाथ से कुछ दूर न था
मैंने सोचा कि मुहब्बत न हो बदनाम कही।

ताजा हो जाता है ईमाने-मुहब्बत[6] मेरा
झूम उठता हूँ जो सुनता हूँ तेरा नाम कही।
बच के अब हम से जरा, हम है सरापा इल्जाम[7],
आपके सर भी न आये कोई इल्जाम कही।

चश्मे-साकी[8] भी थी आँसू-भरी आँखे भी 'नजीर'
एक ही साथ मे चलते थे कई जाम कही!

●

---

[1] प्रकाश, [2] विचरित, [3] कोठेपर, [4] सर्वज्ञात, [5] पद, [6] प्रेम-विश्वास, [7] सर्वांग आरोप, [8] मदिरा पिलानेवालेके नयन।

(४१)

दिल मेरा टूट चुका ऐ निगहे-नाज[1] न छेड़।
अब तेरी छेड़ के काबिल नही, यह साज न छेड़।
मुत्रिबा[2]! और कोई नग्मए-नौ[3] है कि नही
मेरे ही साज से अब मेरी ही आवाज न छेड़।

तेरी एक छेड़ का तो शुक्र[4] अदा हो न सका
दूसरी छेड अभी ऐ निगहे-नाज न छेड़।
मुत्रिबा! नब्ज के हर तार की जुम्बिश[5] की कसम!
साजे-हस्ती[6] की बदल जायेगी आवाज न छेड़।

है 'नजीर' एक यहाँ शाहो-गदा[7] का रुत्बा[8]
इश्क है इश्क, यहाँ किस्सए-एजाज़[9] न छेड़।

●

---

[1] प्रीतमकी अभिमानपूर्ण दृष्टि, [2] गायिका, [3] नवीन गान, [4] धन्यवाद, [5] कम्पन, [6] जीवन-वाद्य, [7] राजा-रंक, [8] पद, [9] सम्मान-कथा।

(४२)

हमने तो नहीं जाना तिन्के का सहारा भी।
तूफाँ ने डुबोया था, तूफाँ ने उभारा भी।
है एक जमाने पर एहसान हमारा भी।
बिगड़े जो मुहब्बत मे, कितनों को सँवारा भी।

जब वह थे तो रात अपनी हर तरह से रौशन थी
चमके थे अगर जुगनू, टूटा था सितारा भी।
फिर ताजा करे चल कर ईमाने-मुहब्बत को
एक बार जिसे देखा, देख आये दोबारा भी।

खुद आऊँगा साहिल[1] तक, आवाज न दे कोई
तौहीने-जवानी[2] है तिन्के का सहारा भी।
उभरे कोई या डूबे, एक लह्ल तो पैदा हो
खामोश है तूफाँ भी गुम-सुम है किनारा भी।

जो अपने उभरने की करता नही खुद कोशिश
उस डूबने वाले पर हँसता है किनारा भी।
कल किसकी कशिश[3] तुमको खैचे लिये जाती थी?
मुड़ कर भी नही देखा हमने तो पुकारा भी

जाओगे कहाँ बच कर बदनामे-मुहब्बत से
दुनिया की जबाँ पर है अब नाम तुम्हारा भी।

---

[1] तट, [2] यौवनका अपमान, [3] आकर्षण।

कुछ हाल सुना उनका, कुछ हाल कहा अपना
कुछ बोझ लिया सर पर, कुछ सर से उतारा भी।
चेह्रे प’ ‘नजीर’ उनके है रंगे-शिकस्त[1] अब तक
जीती हुई बाजी को मै जान के हारा भी।

◆

---

[1] पराजय-भाव।

(४२)

ऐसी सहर[१] कि जिसमें कोई जलवा-गर[२] न हो।
वह रात का कफ़न हो हमारी सहर न हो।
क्यों एक दिल की दूसरे दिल को खबर न हो।
वह दर्दे-इश्क़ क्या जो इधर हो उधर न हो।

हर शै[३] हसीन होती है हुस्ने-निगाह[४] से।
कुछ भी न हो हसीन जो हुस्ने-नजर[५] न हो।
आखिर ये क्या सितम[६] है मेरे राजदार[७] दिल!
मेरे ही घर की बात मुझी को ख़बर न हो।

ऐ इन्तेजारे-दोस्त[८]! वो मेरी ही जीस्त[९] है
जो मुअ्‌तबर[१०] कभी हो कभी मुअ्‌तबर न हो।
इनसानियत है जल्वा-नुमा[११] जिस तरफ 'नजीर'
मै तो उधर हूँ चाहे जमाना उधर न हो।

●

---

१ प्रभात, २ आलोकित, ३ वस्तु, ४-५ दृष्टि-सौन्दर्य, ६ गज़ब, ७ भेद जाननेवाला, ८ प्रीतम-प्रतीक्षा, ९ जीवन, १० विश्वास योग्य, ११ प्रकाशमान।

(४४)

पीते नही पीना पडता है जब मूनिसो-हमदम[1] पीते है ।
अपने लिए दुनिया पीती है, औरो के लिए हम पीते है ।
क्या जानिए क्यो मै[2] रहती है जिस वक्त उसे हम पीते है ।
उस वक्त दवा बन जाती है जब किब्लए-आ़लम[3] पीते है ।

हँसते हुए बातो-बातों मे क्या बात कही कल साकी ने
वाएज़[4] ही जियादा पीते है, मैकश[5] तो बहुत कम पीते है ।
पैमाने[6] बराबर झुकते है, सज्दे मे सुराही होती है
उस वक्त का आ़लम[7] क्या कहिए जब किब्लए-आ़लम पीते है ।

हम जैसे अनोखे मैकश का बादल भी निराला होता है
जुल्फो के घनेरे साये[8] जब होते है जभी हम पीते है ।
वह आग जिसे बे-देखे भी ज़ाहिद[9] तुझे लर्जा[10] आता है
उस आतशे-दोजख़[11] को अक्सर पानी की तरह हम पीते है ।

●

---

[1] मित्र-साथी, [2] मदिरा, [3] धर्मगुरु, [4] धर्म-उपदेशक, [5] मदिरा पीनेवाला, [6] मदिरा-पात्र, [7] अवस्था, [8] छाया, [9] सयमशील व्यक्ति, [10] प्रकम्पन, [11] नरक-की आग ।

(४५)

जिस रोज से कि रूठ गये है किसी से हम।
कुछ जिन्दगी है हमसे खफा जिन्दगी से हम।
कुछ याद करके आँख से आँसू निकल पड़े
मुद्दत के बाद गुजरे जो कल उस गली से हम।

सब कुछ किया था जिससे न मिलने के वास्ते
आख़िर वही हुआ, कि मिले फिर उसी से हम।
वह भी हमारे दर्द-भरे दिल की चोट थी
अक्सर छिपा गये जिसे झूटी हँसी से हम।

इतनी-सी बात के लिए इतना उदास हो
अच्छा तो बात भी न करेंगे किसी से हम।
पर्दा ह़रीमे-नाज[1] का उठने तो दो 'नजीर'!
अपनी नजर प' नाज़ करें क्या अभी से हम।

●

---

[1] प्रीतमका अन्तःपुर।

(४६)

मुझको बसा गये हैं वह अपनी नजर से दूर।
दुनिया भी मैंने पायी तो शामो-सहर[1] से दूर।
क्यो दिल न मुज्महिले[2] हो कि हूँ उनके दर से दूर।
यह है नयी तकान यह होगी सफ़र से दूर।

जाना है उनके सामने मुझ को शिकस्ता-हाल[3]
चलिए उधर से पड़ती हो मंजिल जिधर से दूर।
तारीकिये-नजर[4] न हटेगी तेरे बग़ैर
वह रात थी जो हो गयी नूरे-सहर[5] से दूर।

अब तक तुम्हारे कल्ब[6] की सुनता हूँ धड़कनें
कितने करीब हो के हुए हो नजर से दूर।
अल्लाह रखे बज्मे-तसव्वुर[7] को बर-करार[8]
वह हमसे दूर है न हमारी नजर से दूर।

मुद्दत गुज़र गयी उन्हे बिछडे हुए 'नजीर'!
अब तक उदासियाँ न हुईं मेरे घर से दूर।

•

---

[1] सन्ध्या और प्रभात, [2] म्लान, [3] दुर्दशा-ग्रस्त, [4] दृष्टिका अन्धकार, [5] प्रभातका उजाला, [6] हृदय, [7] कल्पना-सभा, [8] स्थायी।

(४७)

तर्कें-तअल्लुकात[१] नही अपने बस की बात।
मेरे बुजर्ग ! और कोई सूरते-नजात[२]।
बातो-ही-बातो मे निकल आयी एक ऐसी बात।
वह भी थे गहरी सोच मे हम भी तमाम रात।

फ़ुर्सत, कि इतना वक्त नहीं हुस्ने-इल्तेफात[3] !
रुख़सत, कि अब सहर[४] से गले मिल रही है रात।
क्या शै[५] है दोस्त की निगहे-इल्तेफात[६] भी
हर-रग प' हो रहा है यकीने-रगे-.हयात[७]।

हम उनकी सर-गुजश्त[८] प' तक़ीद[९] क्या करें,
शर्मिन्दा कर रहे है जब अपने ही वाकेआत[१०]।
रग-रग मे लहू दौड़ गयी है शराब की।
जब भी मिला के छोड़ दिया है किसी ने हात।

भूले से भी न कीजिए इज्हारे-आर्जू[११],
इस इश्क में यही से बिगड़ती है सारी बात।

---

[१] सम्बन्ध-विच्छेद, [२] मुक्ति-मार्ग, [३] कृपा, [४] प्रभात, [५] वस्तु, [६] कृपा-दृष्टि, [७] प्राणधमनी होनेका विश्वास, [८] आत्म-कथा, [९] आलोचना, [१०] घटनाएँ, [११] कामनाकी अभिव्यक्ति।

करने चले हैं इश्क के मारों का सामना
ऐसे कहाँ के हैं यह जमाने के ह़ादिसात[1]।
सरसब्ज[2] वह भी कर न सके किश्ते-दिल[3] 'नजीर'!
जिनकी नजर-नजर से वरसती रही हयात[4]।

◆

---

[1] घटनाएँ, [2] हरा-भरा, [3] हृदयकी खेती, [4] जीवन।

(४८)

अपनी जगह प' फिर भी तजल्ली[1] अड़ी रही।
चिलमन हटी तो नूर की चिलमन पड़ी रही।
हर दम मेरी अजल[2] मेरे सर पर खड़ी रही।
निगरानिए-हयात[3] भी कितनी कड़ी रही।
पीछा न उनकी ज़ुल्फ़े-परीशाँ[4] से छुट सका
उनकी बला भी मेरे ही पीछे पड़ी रही।
नज़्ज़ारे[5] को उठी तो नजर लड़खडा गयी
जैसे नज़र के पाँव मे बेड़ी पड़ी रही।
फ़ुर्क़त[6] की शब[7] अदाए-तमन्ना[8] न पूछिए
एक हूर[9] थी जो सर को झुकाये खड़ी रही।
मिलते थे जब तो चैन न मिलता था बिन मिले
दिल मे पड़ी लकीर तो बरसो पड़ी रही।
हसरत[10] के देने वाले अमानत[11] सहेज ले
जैसी मिली थी वैसी की वैसी पड़ी रही।
मै-खारो[12] मे वह हजरते ज़ाहिद[13] न थे 'नजीर'!
रिन्दो[14] मे हाथ बाँध के तौबा[15] खड़ी रही।

●

---

[1] सौन्दर्य-आलोक, [2] मृत्यु, [3] जीवनपर नियन्त्रण, [4] बिखरे केश, [5] दर्शन, [6] वियोग, [7] रात्रि, [8] कामनाकी मुद्रा, [9] अप्सरा, [10] अपूर्ण अभिलाषा, [11] धरोहर, [12] मदिरापायी, [13] संयमशील, [14] मदिरा-प्रेमी, [15] मदिरा-त्यागकी प्रतिज्ञा।

(४९)

वह जो बिछडे, मौत याद आने लगी।
जिन्दगी तन्हा[1] थी घबराने लगी
जब वह मेरे हाल पर हँसने लगे
मुझको दुनिया पर हँसी आने लगी।

घर से वह जाते है, घर की खैर हो
रौनके-दीवारो-दर[2] जाने लगी।
इतना जागे इन्तेजारे-दोस्त[3] मे
हसरतो[4] को नीद-सी आने लगी।

बे-सहारा हो चली थी जिन्दगी
वह तो कहिए उनकी याद आने लगी।
उस नजर की एक जुम्बिश[5] पर 'नजीर'!
काएनाते-इश्क[6] लहराने लगी।

●

---

[1] अकेली, [2] दीवार तथा द्वारकी शोभा, [3] प्रीतमकी प्रतीक्षा, [4] कामना, [5] स्पन्दन, [6] प्रेम-संसार।

(५०)

रातों की खामोशी[१] मे जब दिल ने सदा[२] दी है।
आवाज प' तुमने भी आवाज लगा दी है।
मंजिल प' कफन देकर जीने की दुआ दी है।
अल्लाह तुम्हे रखे क्या दादे-वफा[३] दी है।

कोई भी तो उनमे-से मन्सूर[४] हुआ होता
दुनिया ने तो लाखों को फाँसी की सजा दी है।
पहले ही से सीने मे एक आग दबी-सी थी
शोले[५] भड़क उट्ठे है जब तुमने हवा दी है।

क्या हुस्न है क्या सूरत जैसे यदे-कुद्रत[६] ने
हर शक्ल से कुछ लेकर एक शक्ल बना दी है।
आपस मे गले मिलकर दो शोला-पसन्दो[७] ने
एक आग लगा ली है एक आग लगा दी है।

---

१ नीरवता, २ आवाज, ३ प्रेमका प्रतिफल, ४ मन्सूर एक मुसलमान सूफी गुजरे हे जो ईश्वर-प्रेम में लीन होनेके कारण भावावेशमें 'अनलहक़' (मै ईश्वर हूँ) कहा करते थे और उस समयके इस्लामी शासनने धर्मभ्रष्टताके अभियोगमें उन्हें सूलीपर चढा दिया था, ५ ज्वालाएँ, ६ प्रकृतिके हाथ, ७ ज्वाला-प्रेमी।

होटों ने तबस्सुम[1] से गिरकर भी किया सौदा
अश्कों[2] ने वही गिरकर क़ीमत भी चुका दी है।
एक पीरे-मुग़ाँ[3] मैंने पाया है 'नजीर' ऐसा
जिसने मेरी हर लग़्ज़िश[4] संजीदा[5] बना दी है।

◆

---

१ मुसकान, २ आँसुओं, ३ मद्यशालाका वयोवृद्ध प्रधान, ४ डगमगाहट अर्थात् भूल-चूक, ५ गम्भीर।

(५१)

लबे-ख़मोश[1] से राजे-गमे-नेहाँ[2] न कहो।
ज़बाँ हिला नही सकते तो दास्ताँ[3] न कहो।
इन आँसुओ को अनीसे-गमे-नेहाँ[4] न कहो
जो राज फाश करे[5] उनको राजदाँ[6] न कहो।

हमे अगर है शिकायत तो सिर्फ तुमसे है
कोई कहे न कहे तुम तो बदगुमाँ[7] न कहो।
तुम्हारी याद मे रोकर जो दिन गुजारे है
तुम आज कम से कम उनको तो राएगाँ[8] न कहो।

न जाने कितने तबस्सुम[9] प' फिर गया पानी।
कहा न था कि मेरे गम की दास्ताँ न कहो।
तुम्हारे नक्शे-कदम[10] से तो फूल खिलते है।
खिजाँ[11] को रौंद के रख दो खिजाँ-ख़िजाँ न कहो।

इस एतिमादे-मुहब्बत[12] की आबरू रख लो।
अब अपने घर मे तो अपने को मेहमाँ न कहो।
यह अश्के-गम[13] सरे मिज्गाँ[14] जो साँस लेता है।
तुम ऐसी जिन्दा हकीकत को दास्ताँ न कहो।

---

१ मौन अधर, २ गुप्त शोकका भेद, ३ कहानी, ४ गुप्त प्रेम-शोकसे सहानुभूति रखनेवाला, ५ प्रकट, ६ अन्तरग मित्र, ७ अविश्वासी, ८ व्यर्थ, ९ मुसकान, १० पद-चिह्न, ११ झञ्झाऋतु, १२ प्रेम-विश्वास, १३ शोक-अश्रु, १४ पलकोंपर।

यह कारवाँ[1] ही की सूरत का दूसरा रुख़ है।
जो उठ रही है इसे गर्दे-कारवाँ[2] न कहो।
यह जिन्दगी तुम्हे देनी पड़ेगी वापस भी।
'नजीर'! उनकी अमानत को अपनी जाँ न कहो।

◆

---

[1] यात्रीदल, [2] यात्रीदलके चलनेसे उड़नेवाला गर्द गुबार।

(५२)

और कोई नही साथ एक दिले दीवाना है।
वह भी जालिम कभी अपना कभी बेगाना है।
हुस्ने-हाजिर[1] भी किसी हुश्न का दीवाना है।
शम्ए महफिल[2] सरे महफिल नही, पर्वाना[3] है।

मुझसे पूछो मेरे एहसास[4] प' क्या बीत गयी।
तुम तो यह कह के अलग हो गये दीवाना है।
वह भी दिन थे कि मेरे हाथ मे था आपका हाथ।
यह भी दिन है कि मेरे हाथ मे पैमाना[5] है।

मुतमइन[6] रहिए खुलेगा न कभी आपका राज।
क्योंकि जो राज से वाकिफ[7] था वह दीवाना है।
शीशओ-साकियो-पैमाना अलग कुछ भी नही।
मुत्तहिद[8] सब हो जहाँ पर वही मैख़ाना[9] है।

मुझको समझाते हुए आप कहाँ आ पहुँचे ?
मुहतरम[10] दोस्त ! ये मस्जिद नही मैख़ाना है।
क्या वो इतनी भी न अब दादे-जुनूँ[11] देंगे 'नजीर' !
यह तो कहना ही पडेगा मेरा दीवाना है।

●

---

[1] भौतिक सौन्दर्य, [2] सभा-दीप, [3] शलभ, [4] अनुभूति, [5] मदिरा-पान-पात्र, [6] सन्तुष्ट, [7] ज्ञाता, [8] इकट्ठा, [9] मदिरालय, [10] सम्माननीय, [11] प्रेमोन्मादकी प्रशंसा।

(५३)

नया तूफान कोई आ न जाये।
ये आँसू हैं, इन्हें रोका न जाये।
बहुत कुछ है नसीमे-सुब्ह-गाही[1]
अगर दिल की कली मुर्झा न जाये।

मुसीबत भी दे राहत देनेवाले!
मगर इतनी कि जी घबरा न जाये।
सँभल कर जल जरा शम्ए-मुहब्बत[2]
कही उनपर कोई आँच आ न जाये।

जलन कुछ कम तो हो जायेगी दिल की
वहाँ तक आह जाये या न जाये।
हर एक शै[3] से तबीअत हट रही है
कही उनसे भी जी घबरा न जाये।

●

---

[1] प्रभात-समीर, [2] प्रेम-दीप, [3] वस्तु।

(५४)

हरारत[1] भी मिलेगी ताजगी[2] भी।
मुहब्बत धूप भी है चाँदनी भी।
जिसे अब चाहे अपनाले मुसाफिर!
अँधेरा राह मे है रौशनी भी।

नजर ही पर्दा-दारे-दोस्त[3] भी है
नजर ही मुज्रिमे – पर्दादारी[4] भी।
अगर आ जाये जीने का सलीका[5]
बहुत है चार दिन की जिन्दगी भी।

बडा गुह्रा[6] सुना है तेरा साकी!
जरा देखूँ तेरी दरियादिली[7] भी।
'नजीर' आये थे पीने आबे-जमजम[8]
लिये थे हाथ मे गंगाजली भी।

●

---

[1] गरमी, [2] प्रफुल्लता, [3] प्रीतमकी मर्यादाकी रक्षक, [4] रहस्योद्घाटनका अभियोगी, [5] ढंग, [6] ख्याति, [7] दानशीलता, [8] जमजमका जल—जमजम इस्लाम धर्मके केंद्र मक्का नगरका एक ऐतिहासिक कुआँ है जिसका पानी बहुत पवित्र तथा लाभदायक समझा जाता है।

(५५)

करे हम उनसे अर्जे-मुद्दआ[1] क्या ?
सरापा-इल्तेजा[2] की इल्तेजा क्या ?
जरा तुम छेड कर देखो-तो हमको
समझ रखा है साजे वे-सदा[3] क्या ?

जवानी छायी जाती है चमन पर
खरामां है कोई रगीं अदा क्या ?
बलाएँ लर्जा-वर-अन्दाम क्यो है
जमाना मेरी आहट पा गया क्या ?

खफा होते हो क्यो जिक्रे-वफा पर
किसी ने कह दिया है वे-वफा क्या ?
खुदा से वह करेगे मेरा शिक्वा
खुदा उनका है कोई दूसरा क्या ?

◆

---

[1] कामना-निवेदन, [2] सर्वांग विनति, [3] स्वररहित वाद्य ।

(५६)

इस तरफ से जाता हूँ अब झुका के सर अपना।
उठ गया है दुनिया से एक हम-सफर[१] अपना।
रास्ते मे करते थे कल जगह-जगह मजिल[२]
आज दिल धडकता है मोड-मोड पर अपना।

अ़हद[३] हमसे टूटा है हमको है पशीमानी[४]
आप पोछ ले आँसू, आप उठाये सर अपना।
उसके वास्ते धरती, उसके वास्ते पर्वत
उसकी सारी दुनिया है छोड़ दे जो घर अपना।

इस तरफ रुख़े-रौशन[५], उस तरफ किरन पहली
आइने मे देखे है जैसे मुँह स़हर[६] अपना।
ऐ 'नजीर'! अब जाऊँ दर्दे-सर कहाँ ले कर
कल तो उनके जानू[७] पर रख दिया था सर अपना।

●

---

१ सहयात्री, २ पडाव, ३ प्रेम-प्रतिज्ञा, ४ पश्चात्ताप, ५ दीप्त मुख, ६ प्रभात, ७ जाँघ।

(५७)

जो हँस-हँस कर मेरी नजरो से रिश्ते जोड जाते है।
न जाने क्यो वही जलवे[1] मेरा दिल तोड जाते है।
खडा हूँ राह मे फैला के दामाने-नजर[2] अपना
हसी जितने गुजरते है तजल्ली[3] छोड जाते है।

तेरी वदली हुई आँखो से अव दिल टूट जाता है
ये दो पैमाने मिल कर मेरा सागर फोड़ जाते है।
वह जव तक आ नही जाते अँधेरा क्यो नही जाता
वह जाते है तो क्या ख़ुर्शीद[4] का रुख मोड जाते है।

यहाँ क्या 'तौवा-तौवा'[5] कर रहे हो हज़रते-वाएज !
यही चुपके-से आकर लोग तौवा[6] तोड़ जाते है।
'नजीर' आकर जवरदस्ती उठा लेते है पैमाना
मगर साकी के दिल पर नक्श[7] अपना छोड़ जाते है।

•

---

[1] छवियाँ, [2] दृष्टिका दामन, [3] सौन्दर्य-आलोक, [4] सूर्य, [5] छी-छी, [6] मदिरा-त्यागकी प्रतिज्ञा, [7] चिह्न।

(५८)

चमन की आँख मे भी क्या चमन का हुस्न गडता है।
कली खिलने नही पाती कि भौरा टूट पड़ता है।
बचो इस सोज[1] से तब्दील[2] होता है जो अश्को[3] मे
यह शोला[4] जब भी उठता है तो दामन ही पकडता है।

पड़ा रहने दो मुझको अपने दर से क्यो उठाते हो?
मेरी किस्मत सँवरती है तुम्हारा क्या बिगडता है।
तुम्ही सोचो अगर दामन पकड लेगा तो क्या होगा
गनीमत है कि दीवाना तुम्हारे पाँव पड़ता है।

वह जाते है मगर इस तरह से रुक-रुक के जाते है
कि जैसे रास्ता चलते कोई दामन पकडता है।
'नजीर' उस बज्म मे अब दिल प' क्या बीते ख़ुदा जाने
तड़प जाता हूँ जब पैमाने से पैमाना लडता है।

◆

---

१ अन्तर्दाह, २ परिवर्त्तित, ३ अश्रुओं, ४ ज्वाला।

(५९)

मेरा दर्द तुम न समझ सके मुझे सख़्त इसका मलाल[1] है
जरा फिर समझ के जवाव दो, मेरी जिन्दगी का सवाल है।
तुम्हे किसने कर दिया वदगुमाँ[2] हुई क्यो इनायतें-नागहां[3]
मुझे इस ख़याल से दो अमाँ,[4] ये ख़याल वारे-ख़याल[5] है।

वह अव आ चुके मेरे रू-वरू,[6] हैं हुजूम[7] वज्म[8] मे चार-सू[9]
जहाँ खुल के होती थी गुफ्तुगू[10] वहाँ साँस लेना महाल[11] है।
कभी इनसे पूछेंगे खैरियत, कभी उनसे पूछेंगे खैरियत
ये यगान्गी[12] है कि गैरियत,[13] जो मेरे है उनका ये हाल है।

चले आये हो सरे-रह-गुजर,[14] कही पड न जाये वुरी नजर
अभी तुम जहाँ से हो वेखवर,[15] ये हमारा अपना खयाल है।
ये वला का तुमने सितम[16] किया कि उसे भी कह दिया वेवफा
वो 'नजीर' नाम का आदमी जो वफा की जिन्दा मिसाल है।

●

---

१ दुःख, २ दुर्भावना ग्रस्त, ३ अकस्मात् कृपा, ४ मुक्ति-शरण, ५ मनका बोझ
६ सम्मुख, ७ भीड, ८ सभा, ९ चतुर्दिक्, १० वार्तालाप, ११ दूभर, १२ अपनापन
१३ परायापन, १४ मार्गपर, १५ अनभिज्ञ, १६ अत्याचार।

(६०)

फैज[1] है सूए-चमन[2] आपके आ जाने का ।
वर्ना यह भी कोई मौसम था बहार आने का ।
जिन्दगी और उँडेल, और उँडेल ऐ साकी !
दम न टूटे कही चलते हुए पैमाने[3] का ।

एक मुज्रिम की तरह शम्अ की लौ काँप उठी ।
हौस्ला देख के बढते हुए पर्वाने का ।
वक्त की कद्र करो, वक्त की कीमत समझो ।
वक्त हूँ वक्त, नही लौट के फिर आने का ।

तब्सिरे[4] होते थे अह्बाब[5] की बर्बादी पर ।
जिक्र आ ही गया आखिर मेरे अफ्साने[6] का ।
उनके मैखाने[7] को इस दर्जा जो शुहर्त[8] है 'नजीर' !
यह करिश्मा[9] है मेरे पी के बहक जाने का ।

●

---

१ प्रसाद-फल, २ उपवनकी ओर, ३ मदिरापात्र, ४ समालोचना, ५ मित्रों, ६ कथा, ७ मदिरायल, ८ ख्याति, ९ चमत्कार ।

(६१)

एक जाम मे गिरे थे कम-ज़र्फ़[1] लडखडा के।
पीने गये थे चल के, लाये गये उठा के।
सहबा[2] की आबरू पर पानी न फेर साक़ी।
मै ख़ुद ही पी रहा हूँ आँसू मिला-मिला के।

वह मेरी लग़्ज़िशो[3] पर तन्क़ीदें[4] कर रहे है
जो ख़ानकाह[5] मे भी चलते है लडखडा के।
इस हुस्न से मज़म्मत,[6] हुस्ने-बयाँ[7] के सद्के[8]।
क़िब्ला[9] ने पी नही है, देखा है जाम उठा के।

वह डाल क्या कि जिस पर बैठे न एक पंछी।
वह फूल फूल क्या जो देखे न आँख उठा के।
ईमाँ 'नज़ीर' अपना दे आये है बुतो को
दिल के बडे सख़ी[10] थे बैठे है धन लुटा के।

---

१ अपात्र, २ मदिरा, ३ लडखडाना, ४ आलोचना, ५ मठ, ६ निन्दा, ७ वाक्‌पटुता, ८ निछावर, ९ माननीय उपदेशक, १० दानशील।

(६२)

हम उनके दर प' न जाते तो और क्या करते।
उन्हे ख़ुदा न बनाते तो और क्या करते।
बग़ैर इश्क अँधेरे मे थी तेरी दुनिया
चिरागे-दिल न जलाते तो और क्या करते।

हमे तो उस लबे नाजुक[१] को देनी थी जहमत
अगर न बात बढाते तो और क्या करते।
खता कोई नही, पीछा किये हुए दुनिया
जो मैकदे मे न जाते तो और क्या करते।

अँधेरा माँगने आया था रौशनी की भीक
हम अपना घर न जलाते तो और क्या करते।
किसी से बात जो की है तो वह खफा है 'नजीर'!
किसी को दोस्त न बनाते तो और क्या करते।

◆

---

[१] कोमल अधर।

(६३)

अब चमन मे मेरा एक ठिकाना तो है।
चार तिन्के सही [1]आशियाना तो है।
जल भी जाये नशीमन[2] तो पर्वा नही
बिज्लियो मे मेरा दोस्ताना तो है।

उन लबो[3] की खमोशी[4] नही बे-सबब[5]
ना-शुनीदा[6] है लेकिन फसाना[7] तो है।
मुझको अपनी शिकस्तो[8] का कुछ गम नही
आपकी हर नजर फ़ातिहाना[9] तो है।

छोडिए भी, 'नजीर' एक न होगा तो क्या
आपके साथ सारा जमाना तो है।

०

१-२ नीड, ३ होंठ, ४ नीरवता, ५ अकारण, ६ अनसुना, ७ कहानी, ८ पराजय, ९ विजय-गर्व-युक्त।

(६४)

मेरी खातिर नुमायाँ[1] कौन होगा ?
फसाना मै हूँ, उन्वाँ[2] कौन होगा ?
सरे महफिल जबाँ खुलवाने वालो
जरा सोचो पशेमाँ[3] कौन होगा ?

शिकस्ते अह्‌दो पैमाँ[4] जब हो शेवा[5]
गवाहे अह्‌दो पैमाँ कौन होगा ?
हमारे पास दुन्या है न उक्बा[6]
हमारा दुश्मने जाँ कौन होगा ?

अगर काँटा निकल जाये चमन से
तो फूलो का निगहबाँ[7] कौन होगा ?
मेरे बाद ऐ बुताने-शह्रे-काशी !
मुझ ऐसा अह्ले-ईमाँ कौन होगा ?

करे है ऐन बुतखाने मे सज्दा
'नजीर' ऐसा मुसलमाँ कौन होगा ?

•

---

१ प्रकट, २ शीर्षक, ३ पश्चात्तापकर्ता, ४ वचनभंग, ५ आदत, ६ परलोक, ७ रक्षक।

(६५)

जान थी जिनमे वह अर्मान-भरे गीत गये ।
रह गये उम्र के दिन जीने के दिन बीत गये ।
ज़िन्दगी-बख्श वह साँसो के तरन्नुम[1] न रहे ।
वज्द[2] फरमाते थे हम जिस प' वह संगीत गये ।

इस कदर टूट के बरसी कि घटा सूख गयी ।
यह न समझो मेरी बरसात के दिन बीत गये ।
उनको भी कम नही गम मेरे शिकस्ता[3] दिल का
मेरा एक साज गया उनके कई गीत गये ।

अह्ले दिल हार गये जान की बाजी लेकिन
हारने पर भी जहाँ वालो के दिल जीत गये ।
न मुझे कअ्बे का रक्खा न सनम-खाने का
छोड कर हाए दो राहे प' मेरे मीत गये ।

एक मुहब्बत से भरी रात कि हसरत मे 'नजीर' !
कितने दिन आये गये कितने बरस बीत गये ।

◆

---

[1] गान, [2] झूमना, [3] खण्डित ।

(६६)

शोख़ हवा चलने का सबब क्या ? आयेगा कोई आखिरे-शब[1] क्या ?
माहवशों[2] की भीड़ लगी है वह भी इसी मे हो तो अजब क्या ?
सबसे तो उलझे आपकी ख़ातिर आप खफा है इसका सबब क्या ?
रिन्द[3] हूँ, मुझको जाम से मतलब चश्मे-करम[4] क्या, चश्मे गजब[5] क्या ?

शग्ल[6] है हर एक तेरी बदौलत आह ब-लब[7] क्या, जाम ब-लब क्या ?
यह है जुनूँ की मजिले-आख़िर हुस्ने-तलब[8] क्या, तर्के-तलब क्या ?
आर्जूएँ दम तोड चुकी है आप मेरे पास आये है अब क्या ?
बूए-कफन क्यो आने लगी है खत्म प' है अब राहे तलब क्या ?

कोई 'नजीर' ! आवाज तो देता
जागने वाले सो गये सब क्या ?

●

---

१ निशाका अन्त, २ चन्द्रमुखियों, ३ मद्यप्रेमी, ४ कृपादृष्टि, ५ रोषदृष्टि, ६ चर्य्या-कार्य, ७ अधर, ८ याचना ।

(६७)

रात फिर उनकी महफिल मे जाना पडा।
नाज मज्बूरियो का उठाना पडा।
उनको महफिल मे हम रगे-महफिल[1] वने
मुसकराते थे सब मुसकराना पडा।

कर न सकते थे तौहीने-फस्ले-बहार[2]
थे तो गमगी[3] मगर झूम जाना पडा।
उठके उनकी निगाहो ने क्या कह दिया
मुझको कुछ देर तक सर झुकाना पडा।

वज्म[4] से इस तरह उठके आये 'नजीर'
छोड कर बज्म उनको भी आना पडा।

●

---

१ सभा-अनुकूल, २ वसन्त ऋतुका अपमान, ३ दुःखी, ४ सभा।

(६८)

हुए मुझ से जिस घड़ी तुम जुदा तुम्हे याद हो कि न याद हो
मेरी हर नजर थी एक इल्तिजा तुम्हे याद हो कि न याद हो
वह तुम्हारा कहना कि जायेंगे अगर आ सके तो फिर आयेंगे
उसे एक जमाना गुजर गया तुम्हे याद हो कि न याद हो

मेरी बेकरारियाँ देखकर मुझे तुम ने दी थी तसल्लियाँ
मेरा चेहरा फिर भी उदास था तुम्हे याद हो कि न याद हो
मेरी बेबसी ने जबान तक जिसे ला के तुमको रुला दिया
मेरे टूटे साज की वह सदा तुम्हे याद हो कि न याद हो

तुम्हे चन्द कतरये अश्क भी किये पेश जिसके जवाब मे
वह सलास नीची निगाह का तुम्हे याद हो कि न याद हो
मेरे शाने पर यही जुल्फ थी जो है आज मुझ से खिची-खिची
मेरे हाथ मे यही हाथ था तुम्हे याद हो कि न याद हो

कभी हाथ मे जो शराब ली वही तुमने छीन के फेक दी
मुझे याद है मेरे पारसा तुम्हे याद हो कि न याद हो
कही तुम को जाना हुआ अगर न गये बगैर नजीर के
वह जमाना अपने 'नजीर' का तुम्हे याद हो कि न याद हो

●

क़ित्आत

●

जो पूछा हमने दीवाने कहाँ है।
कहा मेरी बला जाने कहाँ है।
नज़र आते है कुछ खोये हुए से
कही होगे ख़ुदा जाने कहाँ है।
अरे ओ शम्अ़ की लौ तू ही बढ कर
ख़बर ले तेरे परवाने कहाँ है।

ख़ुदा जाने मेरे साक़ी ने कैसी बे-रुख़ी बरती
कि मैकश[1] रुख़ फिराये बैठे है मीना व साग़र से।
जमाई लेते जाते है, यह मिस्रअ़[2] पढते जाते है
यह कैसी रस्मे-मैख़ाना,[3] पिये कोई, कोई तरसे।

करम[4] जब आ़म[5] है साक़ी तो फिर तख़्सीस[6] यह कैसी
वो चाहे कम दे लेकिन सबको हिस्सा दे बराबर से।
कहा साक़ी ने, मै सबको ब-क़द्रे-ज़र्फ़[7] देता हूँ
बराबर दे भी दूँ तो पी नही सकते बराबर से।

---

१ शराबी, २ कविताका पद, ३ मदिरालयकी रीति, ४ कृपा, ५ सामान्य, ६ विशेषताका व्यवहार, ७ पात्रके अनुकूल।

हमारे अह्ले-चमन[1] हमसे सर-गिराँ[2] तो नही ।
वह चार तिन्के सही नगे-आशियाँ[3] तो नही ।
हमारे चन्द नशीमन[4] जले, वला से जले
हमारा सारा गुलिस्ताँ[5] धुवाँ-धुवाँ तो नही ।

खुलती है वो मस्त आँखे हंगामे-स.हर[6] ऐसे ।
ताल्लाव मे रातो को खिलते हो कँवल जैसे ।
इस त.र्ह से हँसती है मासूम तमन्नाएँ[7]
जिस त.र्ह से वच्चो के हाथो मे नये पैसे ।

ज़रा दम तो ले-ले तूफाँ कि थका है रास्ते का
मेरे दिल के तोडने मे तेरा दम न टूट जाये ।
वही सरवलन्दे मह्फिल[8] जिसे आये सर-फरोशी[9]
वही जिन्दगी का मालिक जो अजल[10] प' मुस्कराये ।

मेरा मन है शह्रे गोकुल की तरह से साफ सुथरा
मेरी साँस ऐसी जैसे कोई वाँसुरी वजाये ।
मेरी एक आँख गंगा, मेरी एक आँख जमुना
मेरा दिल खुद एक सगम जिसे पूजना हो आये ।

---

१ वागवाले, २ रुष्ट, ३ नीडके लिए लज्जास्पद, ४ नीड, ५ उद्यान, ६ प्रभात-वेला, ७ भोली कामनाएँ, ८ सभाप्रमुख, ९ सिरकी वलि देना, १० मृत्यु ।

मेरे टूटे हुए दिल की सदा से खेलने वाले।
दुआ अपने लिए माँग, अब दुआ से खेलने वाले।
तुझे भी एक दिन एहसासे-तन्हाई[1] रुला देगा।
अकेले बैठ कर अपनी अदा से खेलने वाले।

ऐ दानाहाए गन्दुम[2]! देखो न मुसकरा के।
मै फिर पहुँच रहा हूँ दुनिया की ख़ाक उड़ा के।
क्यों औजे-आस्माँ[3] से फेका गया जमी पर
क्या मुत्मइन[4] नही थे महफिल से भी उठा के[5]?

हिन्द के मैखाने से एक साथ उठे दो बादा-ख़्वार[6]
एक ने बोतल सँभाली, एक ने बोतल फोड दी।
फ़ातिहा[7] दोनो प', दोनो ने किया है इन्तेकाल
एक जन्नत मे मकीं[8] है एक ने जन्नत छोड दी[9]।

---

[1] अकेलापनका अनुभव, [2] गेहूँके दाने, [3] आकाशकी ऊँचाई, [4] सन्तुष्ट, [5] इस किल्अामें इस कथाकी ओर सकेत है कि प्रथम मानव आदमकी रचना करके वैकुण्ठमें रहनेका स्थान देकर पदार्थके खानेकी मनाही कर दी गयी थी जिसको आदमने भूलसे खा लिया। इसके परिणामस्वरूप वह वैकुण्ठसे निकालकर धरतीपर फेक दिये गये। इस विषयमें एक कथन यह है कि वह पदार्थ गेहूँ था। [6] शराबी, [7] मृत आत्माकी शान्तिके लिए ईश्वरसे प्रार्थना, [8] निवासकर्त्ता, [9] इस किल्अामें उर्दूके प्रसिद्ध कवि 'मजाज'के देहान्त तथा 'जोश' मलीहाबादीके पाकिस्तान चले जानेकी ओर सकेत है। यह दोनों कवि अत्यन्त मदिराप्रेमी थे।

बादा-कश[1] अब कोई गाफिल हो तो हुश्यार भी है।
जाम एक हाथ मे, एक हाथ मे तलवार भी है।
जह्र के घूँट 'नजीर' अब न पिये जायेगे
क्यो कि आजाद है अब जुर्अते-इन्कार[2] भी है।

●

---

१ मदिरा पीनेवाला, २ अस्वीकृतिका साहस।

रुबाइयात

●

बे-बादा[1] भी गम से दूर हो जाता हूँ।
खुद ह़ासिल-सद-सुरूर[2] हो जाता हूँ।
मतलब तो है चूर-चूर हो जाने से
थक कर भी तो चूर-चूर हो जाता हूँ।

साह़िल[3] प' अगर मेरा सफीना[4] आ जाये।
दुनिया तुझे जीने का क़रीना[5] आ जाये।
बल नज्अ़[6] मे आये जो मेरे अब्रू[7] पर
माथे प' अजल[8] के भी पसीना आ जाये।

रुख्सत अभी जुल्मतो[9] का डेरा कर दूँ।
ना-पैद[10] जहान से अँधेरा कर दूँ।
सूरज के निकलने मे तो है देर अभी
पैमाना[11] उठा दो तो सवेरा कर दूँ।

मैखारो[12] से जब दूर नजर आयेगी।
जब आपको पुर-नूर[13] नजर आयेगी।

---

१ मदिरा, २ मादकतासे परिपूर्ण, ३ तट, ४ नौका, ५ ढंग, ६ मरणासन्न अवस्था, ७ भौं, ८ मृत्यु, ९ अन्धकार, १० लुप्त, ११, मद्यपान-पात्र, १२ मदिरा पीनेवाले, १३ आलोकित।

जो आज है अंगूर की बेटी जाहिद[1] !
जन्नत मे वही हूर[2] नजर आयेगी ।

पेशानी[3] प' सय्याल[4] नगीना[5] क्यो है ?
गर्दाब[6] मे हुस्न[7] का सफीना[8] क्यो है ?
नादिम[9] हूँ मुझे अपनी निदामत[10] तस्लीम[11]
यह आपके माथे प' पसीना क्यो है ?

मालूम कि इनसान किसे कहते है ।
समझा कि मुसलमान किसे कहते है ।
बहका के मुझे लाये हो मैखाने[12] से
अब यह कहो शैतान किसे कहते है ?

बढता हुआ हौसला न टूटे दिल का ।
तू दाएरा[13] महदूद[14] न कर मंजिल[15] का ।
मुस्तक्बिले-जर्री[16] प' बहुत नाज न कर
है हाल ही वह भी किसी मुस्तक्बिल[17] का ।

---

१ धर्मध्वज, २ अप्सरा, ३ ललाट, ४ तरल, ५ रत्न-खण्ड, ६ भॅवर, ७ रूप-सौन्दर्य, ८ नौका, ९ पश्चात्तापकारी, १० पश्चात्ताप, ११ स्वीकार, १२ मद्यशाला, १३ वृत्ताकार, घेरा, १४ संकुचित, १५ लक्षित स्थान, १६ सुनहला भविष्य, १७ भविष्य ।

किस तर्ह से आयी है जमाही तौबा।
तौबा तौबा, अरे तबाही तौबा।
दो घूँट भी इस वक्त है मिलना दुश्वार।
यह कह्त[1] अगर है तो इलाही तौबा।

हर साँस मे एक हश्र[2] बपा है वाएज[3] !
दुनिया ही मे उक़बा[4] का मजा है वाएज !
आये हो तुम एक रोजे-जजा[5] को लेकर
हर रोज यहाँ रोजे-जजा है वाएज !

लिल्लाह[6] मेरी सोजिशे-पैहम[7] को न छेड।
जा राह ले अपनी तपिशे-गम[8] को न छेड।
मैंने तेरी जन्नत को कभी छेडा है ?
तू भी मेरे ख़ामोश जहन्नम[9] को न छेड।

●

---

[1] अकाल, [2] प्रलय, [3] धर्मोपदेशक, [4] परलोक, [5] प्रतिदान-दिवस अर्थात् प्रलय, [6] खुदा के लिए, [7] निरन्तर दाह, [8] शोक-संताप, [9] मूक नरक।

लङ्त-लङ्त

हुस्न की पर्दा-दरी[1] हो मुझे मंजूर नही।
वर्ना यह हाथ गरेबान[2] से कुछ दूर नही।

आज अश्कों[3] ने न थमने की कसम खायी है
हाय ऐसे मे तेरा गोशए-दामाँ[4] न हुआ।

दरे-दोस्त[5] हो या दरे-मैकदा[6] हो
जहाँ जी बहल जाये जन्नत वही है।

ऐसी निगाह फिर गयी, अल्लाह रे सितम[7]।
जैसे कभी की हमसे मुलाकात ही नही!

बारहा[8] मुझको हँसी भी आ चुकी है बेमहल[9]
आज रोना भी अगर बे-इख़्तिआर[10] आया तो क्या।

---

१ निरावरण करना, २ कुरतेके गलेका चाक, ३ अश्रुओं, ४ दामनका कोना, ५ प्रीतमका दरवाजा, ६ मदिरालयका द्वार, ७ अत्याचार, ८ बहुधा, ९ बे-मौक़ा, १० अनायास।

कुछ अपना वक्त भी होता ह जाएअ[1] किस्सए-गम[2] में
कुछ उनका भी तवस्सुम[3] मुफ्त में बर्बाद होता है।

या वज्म[4] की हर चीज करीने से नही है
या मै ही व-अन्दाजे-दिगर[5] देख रहा हूँ।

फैज[6] है सूए चमन[7] आपके आ जाने का।
वर्ना यह भी कोई मौसम था वहार आने का।

अश्कों[8] से तर है फूल की हर एक पखडी
रोया है कौन थाम के दामन वहार का।

बचाना दो बलाओ से खुदाया[9]
कियामत से कियामत की नजर[10] से

काफिर है गजव की वुते-काफिर की नजर भी!
उसकी जो चले लूट ले अल्लाहका घर भी।

---

१ व्यर्थ, २ शोक-कथा, ३ मुसकान, ४ सभा, ५ दूसरी प्रकारसे, ६ लाभ, ७ बागकी ओर, ८ अश्रुओं, ९ हे ईश्वर, १० प्रलयंकर दृष्टि अर्थात् प्रीतमकी बाँकी नजर।

कोई उनसे तो कह सकता नही कुछ
मुझी को एक जहाँ समझा रहा है।

तुम्हारी शान घट जाती कि रुत्बा[1] घट गया होता।
जो गुस्से से कहा तुमने वही हँस कर कहा होता।

जो बातो के धनी है जान दे देते है बातो पर
अनीवाले क़जा[2] का आसरा देखा नही करते।

ठहरा न कही दम-भर अपना दिले-दीवाना।
किस काम की आबादी, किस काम का वीराना[3]।

मुझको रोने दो, मुझे रोने मे मिलता है मजा
मुस्कराओ तुम कि तुमको मुस्कराना चाहिए।

हज्रते नासेह[4] चले आते है समझाने को रोज
अब जो समझाने को आयेंगे तो समझा जायेगा।

वह सौ जगह से हुस्ने-निहाँ[5] को अ़याँ[6] करे।
हम तो यह पूछते है कि सज्दा कहाँ करें।

---

[1] सम्मान, [2] मृत्यु, [3] निर्जन स्थान, [4] धर्म-उपदेशक, [5] गुप्त सौन्दर्य, [6] प्रकट।

किया जिसने हमको जख्मी, वो हमारी ही नज़र थी
था हमारा तीर लेकिन हमी बन गये निशाना ।

हर एक शै[1] नज़र आती है धुँधली-धुँधली-सी ।
निगाह कम है कि महफिल मे रोशनी कम है ।

फिर आ जाना कभी, इस वक्त जाओ नासिहे- मुशफिक[2] !
तुम अच्छी बात कहते हो, बुरी मालूम होती है ।

ऐ काश उसी तर्ह उठे दर्दे-मुहब्बत[3]
फिर रात गुज़ारूँ उन्ही बाहों के सहारे ।

ये मस्त मस्त हवा और उनके दामन की
'नजीर' नाम भी लेना न होश आने का ।

एक ज़रा-सा और बढकर डूबती कश्ती अगर
अपने आँसू पोछ लेते दामने-साहिल[4] से हम ।

ये बात क्या है कि अबके बहार का मौसम
न साजगार[5] तुम्हे है न साजगार मुझे ।

---

[1] वस्तु, [2] स्नेही उपदेशक, [3] प्रेम-पीड़ा, [4] नदी तीर का अचल, [5] अनुकूल ।

इश्क़ के आसरे प' रह हुस्न का आसरा न कर।
दोस्त की इल्तेजाएँ[1] सुन दोस्त से इल्तेजा न कर।

हुस्न ख़ुद आये तवाफे-इश्क[2] करने के लिए।
इश्क़वाले जिन्दगी मे हुस्न[3] तो पैदा करे।

मुझको पीने से न रोक, अब ये दुआ कर वाएज़[4]।
जिन्दगी जितनी है कट जाये इसी शान के साथ।

एक बन्दए-ख़ुदा का हमे इतना आसरा।
हद हो गयी कि हमने ख़ुदा को भुला दिया।

सज्दा उसे भी कर लिया सज्दा जिसे हराम[5] है।
इश्क़ तुझे सलाम अगर इश्क इसी का नाम है।

अगर मुझसे टूटा है पैमाने-उल्फत[6]
तुम्हारी नजर क्यो झुकी जा रही है।

क्या उनके तसव्वुर[7] प' जमे कोई तसव्वुर।
तस्वीर प' खिचती नहीं तस्वीर किसी की।

---

१ विनय, २ प्रेमकी परिक्रमा, ३ सौन्दर्य, ४ धर्मोपदेशक, ५ वर्जित, ६ प्रेम-प्रतिज्ञा, ७ कल्पना।

चाहे कोई रग-रग मेरी जंजीर बना दे
आजाद मगर फ़ित्रते-आजाद[1] रहेगी।

दुनिया मेरी निगाह मे तारीक हो गयी
तुमने तो एक चिराग जला कर बुझा दिया।

जान देकर फिर उसी म.हफ़िल मे जाना है 'नजीर'!
जिन्दगी लेकर चले आये है जिस म.हफिल से हम।

हिज्र[2] में आया अगर अब्रे-बहार[3]
हसरतें[4] बरसी दरो-दीवार से।

इस बे-.खुदीए[5]-इश्क ने छोड़ा न उन्हे भी
मेरी ही गजल मुझको सुनाते हुए आये।

एक दिन एक ऐसी मंजिल मे भी ले आयेगा दिल
जिस कदर तस्कीन[6] दोगे उतना घबरायेगा दिल।

बे-.खुद[7] हो, और मुझको भी बे-खुद बनाये जा।
दो दिन की जिन्दगी है पिये जा पिलाये जा।

---

[1] स्वतन्त्र प्रकृति, [2] वियोग, [3] बहार ऋतुका बादल, [4] कामनाकी अतृप्ति, [5] आत्म-विस्मृति, [6] सान्त्वना, [7] चेतना-हीन।

'नजीर' आप समझते है पार्सा[1] जिनको
वह मैकदे[2] मे नही घर मँगा के पीते है।

उनको क्या तूफाँ उठा कर जो किनारे हो गये
ना-खुदा[3] की मुश्किले तो ना-खुदा से पूछिए।

जच रही है तेरी आँखो मे मुहब्बत की शराब
जैसी जालिम है यह मै[4] वैसे ही पैमाने[5] मे है।

●

---

१ सयमी, २ मद्यशाला, ३ नाविक, ४ मदिरा, ५ मदिरापात्र।